वर्ष 28 | आषाढ़-अधिक श्रावण | जुलाई-2023 | अंक 7 (मासिक) | प्रकाशन उज्जैन

आर.एन.आई. नं. 0048570/29/30/1982

पोस्ट मालवा डिवीजन पी.आर.एन.नं.एम.डी. 08/2021-2023

मूल्य 10/- रुपये

मासिक प्रकाशन

आगमोद्धारक

प्रकाशन हर माह की 6 तारीख को

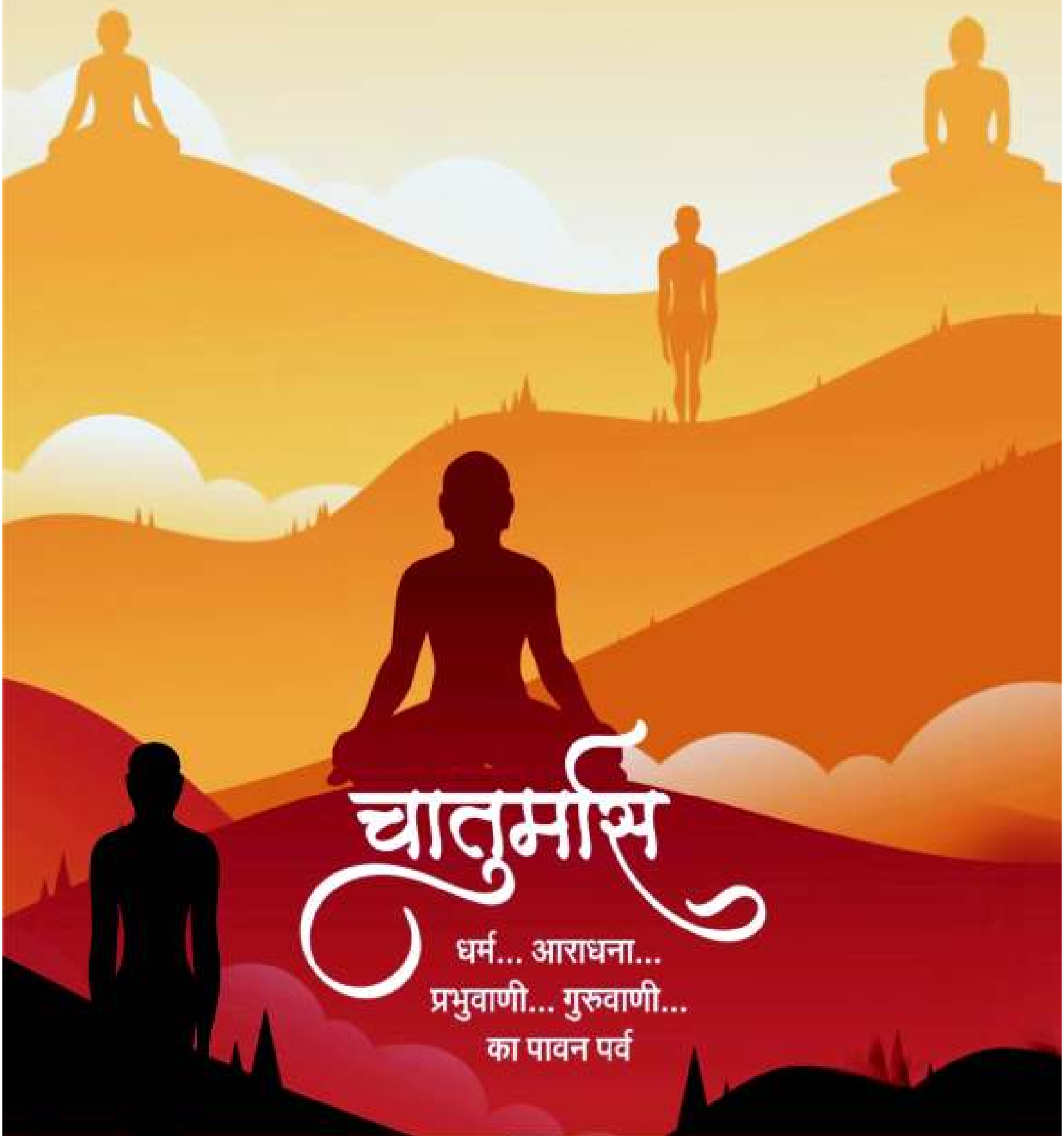

आगमोद्धारक

नमो नाणस्स नमो नमः

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन
उज्जैन का जैन हिन्दी मासिक

प्रधान सम्पादक

डॉ.सुभाष जैन, उज्जैन

सम्पादकीय कार्यालय

डॉ.सुभाष जैन

46, सखीपुरा, उज्जैन-456001 (म.प्र.)

मोबा. नं. 94250-91012, 8770884897

1-E-mail-Subash_3333@yahoo.co.in

2-E-mail-i.am.Subhashjain@gmail.com

इन्दौर कार्यालय

प्रफुल्लकुमार जैन ''पप्पू''

1073, सुदामानगर, फूटीकोठी रोड़

इन्दौर-452009 (म.प्र.)

5057087, 5057067

मोबा. नं.-98260-10089

सदस्यता

आगमोद्धारक के सदस्य बनने वाले श्रीमानों से निवेदन है कि सदस्य के लिये शुल्क राशि बैंक ड्राफ्ट/चैक/M.O. से श्री सिद्धसेन दिवाकर चेरिटेबल ट्रस्ट, उज्जैन के नाम से सम्पादकीय पते पर भिजवाये। अन्य नाम से सदस्यता राशि स्वीकार नहीं की जायेगी। - **डॉ.सुभाष जैन**

ज्ञानी का मार्ग सुलभ है परन्तु उसे पाना दुर्लभ है; यह मार्ग विकट नहीं, सीधा है परन्तु उसे पाना विकट है। पहले सच्चा ज्ञानी चाहिए, उसे पहचानना चाहिए, उसकी प्रतीति आनी चाहिए; फिर उसके वचन पर श्रद्धा रखकर निःसंशय हो चलने से मार्ग सुलभ है।

दिव्य आर्शीवाददाता

प.पू.मालव भूषण आचार्य श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.

मार्गदर्शक एवं प्रेरक

परम पूज्य आचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन, उज्जैन

अध्यक्ष- भाई श्री प्रफुल्लजी जवेरी, मुंबई (महा.)

शाश्वत संदेश

माणुसत्ते असारम्मि, वाहिरोगाण आलए।
जरामरणघत्थम्मि, खणं पि न रमामहं ॥

यह मनुष्य शरीर असार है। व्याधि-रोग का घर है और जरा मरण से ग्रस्त-अभिभूत है। इस असार मानव शरीर में मुझे एक क्षण के लिए भी आनन्द नहीं मिलता।

- उत्तरा. सूत्र, 19.15

पाथेय *बस एक ही बात महत्वपूर्ण है, जिसका मूल्य है और वह है तुमसे एकात्म होने की प्रबल इच्छा रखना; तुम्हारी पूर्ण चेतना से अपनी चेतना को संयुक्त करने का प्रयास करना। तुम्हारे सर्वोच्च नियम एवं मधुर संकल्प की अभिव्यक्ति का एक शान्त, अचंचल अभ्रान्त, निरासक्त एक सशक्त-सेवक होना ही, बस यही एक महत्वपूर्ण कार्य है, जिसका मूल्य है। हे प्रभु ! मुझे पूर्ण निर्वैयक्तिक एवं निरासक्त शान्ति प्रदान करो वह शान्ति जो तुम्हारी उपस्थिति को बनाता हूं प्रभावपूर्ण तुम्हारे हस्तक्षेप को सार्थक एवं सकल, एवं जो समस्त दुर्भावनाओं और बाधाओं पर पाती है विजय। प्रभु ! मैं अत्यन्त विनीत होकर करता हूं यह प्रार्थना कि मैं तुम्हारे महत कार्य के योग्य बनूं, कि मुझमे, किंचित भी, कोई भी कृति तुम्हारे मिशन की सेवा के प्रति जाने या अनजाने भी न कर सकें कोई छलावा तथा निषेध। नीरव भक्ति-भावना में, मैं नतमस्तक हूं तुम्हारे समक्ष।*

शुल्क सोपान

स्तम्भ	11,511/- रुपये
आजीवन	1000/- रुपये
पांच वर्षीय सदस्य	301/- रुपये
एक वर्षीय सदस्य	80/- रुपये
एक प्रति	10/- रुपये

नोट- आगमोद्धारक में प्रकाशित रचनाओं से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

वर्ष-28 आषाढ़-श्रावण जुलाई 2023 अंक-7

विषय सूची

1- शाश्वत संदेश, पाथेय 3
2- विषय सूची 4
3- ''गागर में सागर'' बने आगमोद्धारकश्री- (सम्पादकीय)- डॉ. सुभाष जैन 5
4- जैन धर्म में चार्तुमास का महत्व : जानिए 5 खास बातें, प्रथम मिथ्यात्व का नाश करो 6
5- पाप की सजा भारी-प. पू. आचार्य श्रीअरुणविजयजी म.सा. 7-9
रोग-मुक्त करने वाली-दवाई....
6- श्रमण संस्कृति के दिव्यपुंज परम पूज्यपाद आगमोद्धारकश्री 10
7- श्री जैन आगमोदेय समिति की स्थापना, गुरुदेव की सीख 11-12
8- पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्यदेवश्री आनंदसागरसूरीश्वरजी महाराजा को सैलाना 13
नरेश महरारजा श्री दिलीपसिंहजी के द्वारा दिया गया अमारी पट्टक
9- जैन धर्म में चार्तुमास का महत्व : जानिए 5 खास बातें, प्रथम मिथ्यात्व का नाश करो 14-15
चार्तुमास और हमारे कर्त्तव्य.... अनोखीलाल कोठारी,
चार्तुमास का महत्व.... श्रीमती प्रभा जैन
10-साध्वीवर्या श्री मैत्रीदर्शना श्रीजी म.सा. की जीवन झलक 16
11-आगमधरसूरी आगम वाचनादाता आगमिक प्रवर व्याख्याता श्री सागरजी 17
महाराजा की कुछ विशिष्टाऐं...
12-जिज्ञासाओं को शांत करने का सुअवसर है चार्तुमास- श्रमण डॉ. पुष्पेन्द्र, 18
आस्थाहीनता का रोग
13-श्री सागर और संस्था 19
14-जैन धर्म में चार्तुमास की महिमा....- देवेन्द्र जैन 20
15-गुरुदेव का जाना और उत्तरदायित्व का बोध, त्रिपुटी 21
16-वर्षा से जुड़े कुछ रोचक तथ्य.... मृत्यु से कौन छुड़ा सकता है ?, ममता : वड़का बीज 22-23
17-चार्तुमासकाल में भगवंतों के महाप्रभाव से मन मंदिर, माटी पवित्र और स्थान तीर्थ 24-25
बन जाते है-शांतिलाल सगरावत, इन्हें भी आजमाइये...!
18-चार्तुमास में क्या करें हम और आप, स्वप्रशंसा 26-27
19-वर्गपहेली- 338 - जयंतीलाल जैन,रतलाम 28
20-ज्ञान गंगोत्री- 338-आ.प्रवर श्री मृदुरत्नसागरसूरीजी म.सा. 29
21-शासन-समाचार 30-41
22-हमारे तीज त्यौहार, सादर आमंत्रण, सारे देश में आगमोद्धारक 42
प्रतिनिधि नियुक्त करना है, स्त्री-पुरुष की समानता

संपादकीय

"गागर से सागर" बने आगमोध्दारकश्री

अनन्त-अनन्त काल बीत जाने इस धरती पर सद्‌गुरु होता है। सिद्ध तो बहुत है पर सिद्ध पुरुष बहुत थोड़े होते हैं। सिद्ध वह होते है जिन्होंने सत्य को जाना है, सत्य को पाया है और सिद्ध पुरुष (सद्‌गुरु) वे होते हैं जिन्होंने सत्य को जाना ही नहीं दूसरों को दिखाया भी है। परम वीतरागी सिद्ध भगवान लीन है अपने में, पर मनुष्य की भटकती हुई भीड़ को अज्ञान से, अंधे विश्वास से और अंधकार से तारते हैं।

एक सद्‌गुरु अनन्तों के लिये द्वार बन जाता है जिसने एक सद्‌गुरु को जाना उसने अतीत, वर्तमान वे भविष्य के सभी सद्‌गुरुओं को जान लिया। आदमी के नैतिक, बौद्धिक, धार्मिक व सांस्कृतिक क्षरण के शिकार एवं अंधकार में डूबे हुए भारत को एक ऐसे दिव्य प्रकाशपुंज की आवश्यकता थी जो मानवता को सन्मार्ग दिखाकर उत्थान की ओर ले जा सके। भौतिकता की झूठी चकाचौंध को धूल-धसरा कर अध्यात्म की यथार्थ रोशनी से विश्व को नहला सके।

परम पूज्य पूज्यपाद आगमोध्दारक आचार्यदेव श्री सागरानंदसूरीश्वरजी महाराजा प्राणियों में आनन्द भर देने वाले व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन को सर्वांग सुन्दर बनाने में सक्रिय योगदान करने वाले संत थे। वे आत्मिक उत्थान में प्रेरक निमित्त हैं। शान्त मौन मुद्रा में अपनी वाणी के माधुर्य से या फिर भीतर प्रगटे अध्यात्मिक बल से या चारित्र के आभा मण्डल की ज्योतिर्मय किरणों द्वारा अनायास ही सन्तृप्त प्राणियों पर शांति एवं आनन्द की फुहारों की वर्षा करके आनंदित कर देने में वे सक्षम थे । स्वयं हर दशा में समतावान रहकर प्रतिकूल दशाओं में भी सदा मुस्कुराते रहने की प्रेरणा देने वाले संत थे। आचार्यश्री उन लौकिक विधि-विधानों का सदा आदर करते रहे हैं जो उनकी पवित्र श्रद्धा व व्रताचरण में बाधा नहीं डालते थे। सम्माननीय होकर भी जिन्हें मान नहीं है, गौरवशाली होकर भी जो गर्व नहीं करते, ज्ञान के सागर होकर भी ज्ञानी होने का दम्भ नहीं रखा, प्रत्येक प्रतिकूलताओं में जिनशासन हित के लिये, उनके उद्धार के लिये सतत् चिंतनशील रहना आपका स्वभाव था। **परम पूज्य पूज्यपाद आगमोध्दारक आचार्यदेव श्री सागरानंदसूरीश्वरजी महाराजा** का गहन गंभीर अध्ययन विषय उपस्थापना, पल्लवन और प्रतिपादन की अद्‌भूत क्षमता, अन्वेषणात्मक सुवीक्ष्ण -ष्टि रोचक शैली के साथ **"सत्यं शिवं सुन्दरम्"** का लक्ष्य भी समाज में चरितार्थ हुआ है। **परम पूज्य पूज्यपाद आगमोध्दारक आचार्यदेव श्री सागरानंद सूरीश्वरजी महाराजा** के दर्शन का मुझे सौभाग्य प्राप्त नही हुआ है पर आपश्री के बारे में सुनकर ही आपको जान लिया। जैन जगत में भाव की प्रधानता है। आपके आत्म सौंदर्य का जो अनुभव मैंने किया उससे लगता है कि ऐसे मर्यादित और अनुशासित आचार्यश्री के जीवन से बहुत कुछ सिखने जैसा था । धन्य है वह माता-पिता जिन्होंने बचपन से ही अपने सूर्य को उच्च संस्कारों से परिपूर्ण कर दिया था । जो समस्त संसार को अपने आलौकिक प्रकाश से प्रकाशित कर महायात्रा पर निकल गया।

आपकी अमृतवाणी भविकजन के जीवन के लिये पावन भूमि पर प्रवाहित होने वाली वह महान सरिता है जो विज्ञान की भौतिकता के ताप शाप से संतृप्त आज के मानव को अनंत आल्हाददायिनी शीतलता प्रदान करने में पूर्ण सक्षम है।**परम पूज्य पूज्यपाद आगमोध्दारक आचार्यदेव श्री सागरानंदसूरीश्वरजी महाराजा की** वाणी में ज्ञान की एक ऐसी अजस्त्र धारा प्रवाहित होती रही है जिसमें चिंतन रुपी अवगाहन करके विषय कलुष से मलीन हृदय भी उज्जवल एवं निर्मल होकर शांति का अनुभव करता था। चिरदग्ध सांसारिक प्राणी के लिये आपकी वाणी भक्तामृत सरोवर थी क्योंकि भक्त इसमें सतत विहार करते हुए मुक्ति मोती चुन लिया करते थे। आपकी वाणी सूर्य की किरणों की भांति समस्त क्षेत्रों में अपना ज्ञान रुपी प्रकाश प्रकीर्ण कर देती थी। आपकी वाणी अत्यन्त प्राणीदायिनी व स्फूर्तिदायक थी जिस प्रकार सूर्य की किरणों के स्पर्श मात्र से पुष्प विकसित हो जाते है, भ्रमर गुंजार करने लगते है, पक्षी आनंद ध्वनि करने लगते हैं ठीक उसी प्रकार आपके दर्शन मात्र से धर्मानुरागियों के मन रुपी कमल खिल उठते थे, यह भक्तों का कहना है इनका मस्तिष्क रुपी भ्रमर ज्ञान-मकरंद की सुरभि से मस्त हो जाते था। जादू वह है जो सिर पर चढ़कर बोले ठीक ऐसा जादू था आपकी वाणी में, आपके सारगर्वित वचनों का एक-एक शब्द जादू का ऐसा पिटारा था जिसमें अर्थ के पर्त खुलते चले जाते थे और पिटारा है कि खाली होने में नहीं आता। **परम पूज्य पूज्यपाद आगमोध्दारक आचार्यदेव श्री सागरानंदसूरीश्वर जी महाराजा** तो जादूगरी के इस करिश्मे में से **" गागर से सागर"** भरकर सभी विद्वानजनों को आश्चर्यचकित किया है परमात्मा की कथनी को विस्तार रुप में कहने वाले तो जगत में अनेक विद्वान होते है परन्तु परमात्मा स्वरुप में लीन होने वाले बिरले ही होते हैं। आपका पावन नाम उन बिरलों की श्रेणी में सर्वप्रथम स्वर्णाक्षिरों में अंकित है। आपने अपनी ज्ञान-गरिमा से हम अज्ञानियों को ज्ञान रुपी प्रकाश प्रदान किया है। आप तो सर्वाधिक ज्योतिमान व प्रकाश स्तम्भ थे जो तूफानी जीवन-जलाध में भटके हुए प्राणी को अनन्त काल तक उनके अविष्ट गन्तव्य की ओर दिशा निर्देश करते रहेंगे। अब तो आपकी त्यागमयी छवि को चित्र में निहार कर संतोष करना पडता है।

मैं **परम पूज्य पूज्यपाद आगमोध्दारक आचार्यदेव श्री सागरानंदसूरीश्वरजी महाराजा** के चरणों में शत्-शत् बार नमन् करता हूं श्रध्दांजलि अर्पित करता हुं और प्रार्थना करता हूं उनका अदृश्य आशीर्वाद मुझे सदैव मुझे माँ देवी सरस्वती की सेवा करने की शक्ति प्रदान करता रहेगा।

-डॉ.सुभाष जैन

जैन धर्म में चार्तुमास का महत्व : जानिए 5 खास बातें

चार्तुमास का हिन्दू, जैन और बौद्ध धर्म में खास महत्व है। तीनों ही धर्म के संत इसका कड़ाई से पालन करते है। हिन्दू धर्म के सभी बड़े त्यौहार इन्हीं चौमासा के भीतर आते हैं, सभी अपनी मान्यतानुसार इन त्यौहारों को मनाते हैं एवं धार्मिक अनुष्ठान भी करते हैं। वैसे जैन धर्म में चार्तुमास के कई नियम और उपदेश है परन्तु यहां प्रस्तुत है सामान्य महत्व की पांच बातें।

1- चार्तुमास में सभी जैन संत अपनी यात्रा रोक देते है और मंदिर, आश्रम या संत निवास पर ही रहकर यम और नियम का पालन करते हैं। जैन धर्म के अनुसार यह चार माह व्रत इस वर्ष 5 माह, साधना और तप के रहते हैं। इस दौरान सख्त नियमों का पालन करना चाहिए।

2- जैन धर्म के अनुयायी इन चार माह इस वर्ष 5 माह में मंदिर जाकर धार्मिक अनुष्ठान, पूजा आदि करते है या सभी जैन धर्मी गुरुवरों एवं आचार्यो द्वारा सत्संग का लाभ प्राप्त करते हैं। संतों द्वारा मनुष्यों को सद्मार्ग दिखाया जाता है। यह हर तरह की जिज्ञासा और इच्छाओं को शांत करने के माह होते हैं और यही यह चार माह इस वर्ष 5 माह है जबकि धर्म को साधा जा सकता है।

3- जैन धर्म में आमजनों को इन चार माह इस वर्ष 5 माह में संयमपूर्वक करने का उपदेश है। उक्त चार माह इस वर्ष 5 माह में किसी भी प्रकार क्रोध नहीं करना हैं और संयम का पालन करना हैं। इन चार महिनों इस वर्ष 5 माह में व्यर्थ वार्तालाप, अनर्गल बातें, गुस्सा, ईर्ष्या, अभिमान जैसे भावनात्मक विकारों से बचने की कोशिश की जाती है।

4- चार्तुमास में सभी भौतिक सुख-सुविधाओं का त्याग कर के संयमित जीवन बिताया जा सकता है। पंखा, कुलर और अन्य सुख-सुविधाओं के साधनों के साथ ही टीवी और मनोरंजन की चीजों से दूरी बना ली जाती है। इन चार महीनों में सफाई और जीव हत्या से बचते हुए सिर्फ घर पर बना भोजन ही किया जाता है।

5- चार्तुमास में ही जैन धर्म का सबसे प्रमुख पर्व पर्युषण पर्व मनाया जाता है। यदि वर्षभर जो विशेष परम्परा, व्रत आदि का पालन नहीं कर पाते वे इन आठ दिनों के पर्युषण पर्व में रात्रि भोजन का त्याग, ब्रह्मचर्य, स्वाध्याय, जप-तप मांगलिक प्रवचनों का लाभ तथा साधु संतों की सेवा में संलिप्त रह कर जीवन सफल करने की मंगलकामना कर सकते हैं। चार्तुमास में महापर्व सम्वत्सरी भी आता है। यह चार माह इस वर्ष 5 माह व्यक्ति और समाज को एक सूत्र में पिरोने का भागीरथ प्रयास भी है।

✻ सच्ची विद्वत्ता वह है जो आत्मार्थ के लिए हो, जिससे आत्मार्थ सिद्ध हो, आत्मार्थ समझ में आवे, वह प्राप्त हो। जहां आत्मार्थ है वहां ज्ञान है परन्तु वहां विद्वत्ता हो भी या न भी हो।

प्रथम मिथ्यात्व का नाश करो

एक और मिथ्यात्व-नाश का अवसर है और दूसरी और राग द्वेष-नाश का अवसर है तो प्रथम पसंदगी किसकी करनी ? हरिभद्रसूरिजी कहते है कि -मिथ्यात्व-नाश पर प्रथम प्रसंग पसंदगी करना मिथ्यात्व-नाश किये बिना राग-द्वेष में आई हुई मंदता भविष्य में दंभ अभिमान आदि दोष भी पैदा कर सकती है।

हरिभद्रसूरिजी को किसी ने पूछा- अन्य दर्शन के संन्यासी, जो स्वमत के अत्यंत आग्रही है, उनमें भी राग-द्वेष की मंदतारुप समता दिखाई देती है तो उसे कैसी समझनी चाहिये ?

आचार्यश्री उत्तर देते हुए कहते हैं-न्निपात रोग थोड़ा शान्त हो तब मरीज की जैसी अवस्था होती है वैसी समता उन लोगों की समझ लो। समय जाने पर सन्निपात रोग ज्यादा उग्र बनता है उसी तरह आज्ञा-बाह्य मिथ्यात्वी जीवों की समता द्वारा आई हुई प्रशान्त स्थिति समझनी चाहिये।

ऐसे साधकों को राग-द्वेष की मंदता की वजह से भवांतर में पुण्यद्वारा भौतिक सुख मिलते हैं, लेकिन आखिर वह अनंत-संसार-सर्जक बनती है, परिणाम में तो हितकर नहीं ही है। ऐसी समता मेढक के चूर्ण जैसी समझो, वृष्टि होती ही वापस मेढक पैदा हो जाय ! सम्यक्त्वयुक्त अनुष्ठान मेढक की भस्म जैसे समझो, जिनमें से पुनः मेढक होने की शक्यता ही नहीं है। इसलिए ही जैन दर्शन कहता है-

प्रथम मिथ्यात्व का नाश करो। उसके बाद ही राग-द्वेष-नाश का प्रयत्न करो।

पाप की सजा भारी...!

*प.पू.आचार्यश्री अरूणविजयजी म.सा.

गतांक से आगे...!

18- मिथ्यात्वशल्य से-

मिथ्यात्व सब अनिष्टों की जड़ है। सब पापों का मूल है। मिथ्यात्व से अन्य सभी कर्मों की उत्कृष्ट स्थिति के बंध की संभावना है। अनेक पापचारों का घर मिथ्यात्व है। अतः सब प्रकार के दुःख मिथ्यात्वी पाता है। सब पापों का फल मिथ्यात्वी पाता है। नरक की ओर तिर्यंच पशु-पक्षी की गति में जन्म लेता है। उन्मुत्त प्रलापी बनता है। अनन्त संसार बढ़ाता है। दुःख और दुर्गति, दीन-दारिद्रय-गरीबी भोगनी पड़ती है। हिंसक वृत्ति वाला क्रूर बनता है। आधि-व्याधि-उपाधियां घेरती है। महाकामी विषयी बनाता है। अश्रद्धालु और अनाचारी बनता है। इन्द्रियों की क्षीणता, विकलांगता अंग क्षयादि पाता है। अनेक पापों के उदय के साथ सर्व प्रकार का अतराय तथा अशुभ नाम कर्म की प्रकृतियों का फल पाता है।

इस तरह 18 पापस्थानों के सेवन से भिन्न-भिन्न प्रकार का अशुभ फल जीवों को मिलता है। जो कि अत्यन्त दुःख दायी होता है। बड़े दुःखी होकर भुगतना पड़ता है। पाप का एक फल शुभ हो यह कभी संभव ही नहीं है। चारों गति में दुःख ही दुःख भुगतना पड़ता है।

तीनों लोक में दुःख- पाप करने वाला पापी चौदह राजलोक के इस अनन्त ब्रह्माण्ड में कहीं भी चला जाय तो भी उसे पाप की सजा के परिणाम स्वरुप दुःख तो अवश्य भुगतना ही पड़ेगा। इन तीन लोक में या तो अधोलोक की 7 नारक पृथ्वीओं में जाकर नारकी बनकर दुःख भोगे, या मध्य-तिर्च्छालोक में रहकर दुःख भोगे या मानो ऊपर उर्ध्वलोक-देवलोक में भी चला जाय तो भी उसे शांति नहीं है। वहां भी किल्बिषिक देव बनकर झाडु निकालना आदि साफ-सूफी करने वाले हल्के देव के रुप में जन्म लेना पड़े और वैसा काम करना पड़े। जीव यहां से मरकर चारों गति में चाहे जहां भी जाय उसे तो किये हुए पापों के अ नुसार दुःख पाप की सजा अवश्य ही भुगतनी पड़ती है। मृत्यु के बाद जीव के साथ क्या आता है ? घर-बार-बगीचा-बंगला, धन-संपत्ति-वैभव, सोना-चांदी-आभूषण, हीरे-मोती रुपये पैसे या स्त्री-पुत्र-पुत्री-पत्नी-परिवार आदि इनमें से कोई भी साथ नहीं आता है। यहां तक की मनुष्य का शरीर भी यहीं जल कर भस्म हो जाता है। शरीर भी साथ नहीं आता है तो फिर साथ आने वाला साधन क्या शेष बचा ? वस्तुओं और संबंधी व्यक्तियों में से तो कोई भी साथ नहीं आता है। सिर्फ बांधे हुए अच्छे-बुरे पुण्य-पाप ही जीव के साथ आते हैं। कहते है कि- **''ऋणं च बैरं च भवान्तरेऽ प्यागच्छति''**। इस जन्म में सिर पर बढ़ाया हुआ कर्ज (ऋण) और वैर वैमनस्य-राग-द्वेष भी आगामी जन्म में साथ में आते हैं। जीव चारों ही गति में जाता है। किये हुए शुभ-अशुभ-पुण्य-पापानुसार सद्गति-दुर्गति इन चारों ही गति में जीव को जन्म लेना पड़ता है। कभी मनुष्य गति में जाता है, तो मनुष्य मरकर पुनः देव-मनुष्य-नरक-तिर्यच की चारों गति में जाकर जन्म लेता है। देव मरकर सिर्फ मनुष्य और तिर्यच में ही जाता है। देव नरक में नहीं जाता और मरकर पुनः तुरन्त देव नहीं बनता है। वैसे ही नारकी भी मरकर पुनः नारकी तुरन्त नहीं बनता और नारकी देवगति में भी नहीं जाता। नारकी मनुष्य या तिर्यच में जाता है। जबकि तिर्यच गति का जीव चारों गति में जाता है। उसके लिये कहीं कोई प्रतिबंध नहीं, कोई नियम नहीं है।

इन चारों गति में जीव कहीं भी जाए परन्तु बांधे हुए पाप कर्मों के अनुसार सभी गति में दुःख पाएगा। किये हुए कर्मानुसार पाप की सजा सब जगह जाएगा। गति भी तो कर्मानुसार ही मिलती है। 1- देवगति में जाए तो वहां पर-भवनपति में परमाधामी या असुरकुमारादि बने या फिर व्यंतर गति में जाए तो भूत-प्रेत-यक्ष-राक्षस-डाकन-शाकन बने और तिर्च्छालोक में भटकते ही रहते हैं। ज्योतिष्क देवों में सूर्य-चंद्र-आदि में जाय तो वहां भी ज्योतिष्केन्द्र के अंगरक्षक या सेवक बने या, ग्रहों में राहु केतु बने। या तारागण में या नक्षत्रों में जाए तो यहां भी अच्छे-खराब कई नक्षत्र है उनमें जन्म लेता है या ऊपर वैमानिक देवलोक में जाय तो किल्बिषिकादि नौकररुप देव बनकर इन्द्रों का हुक्म पालने वाला सेवक बने।

मनुष्य गति में दुःख- मनुष्य गति जरुर अच्छी है परन्तु अकेली गति से क्या होता है ? जाति-कुल आदि सभी पर आधार है। पापों की सजा के रुप में अकर्म भूमि में भी जन्म मिल सकता है। जहां कोई धर्म का नाम निशान भी नहीं है या मनुष्य के रुप में भिखारी के घर स्त्री रुप में जन्म मिले और

खाने का ठिकाना भी न हो और अधूरे में पूरा संतानें 6-7-8-10 बहुत हो और उसमें भी गरीबों में कन्या के जन्म ज्यादा होते है। 4-5-6-7 लड़कियां भी कईयों के घर जनमती है। नीच हल्के कुल में जन्म मिले या भिखारी के कुल में जन्म लेकर भीख मांगते ही फिरो, या कषाई के घर जन्म मिले फिर वहां पशु हत्या करते ही रहो, वेश्या के घर जन्म मिले फिर वहां दुराचार के पाप में जिन्दगी पूरी करो। ऐसे सैकड़ों कुल और जातियां है जहां ऐसा हल्का जन्म मिलने पर दुःखी होना पड़ता है और उसमें भी पुनः हल्के पाप करना पड़ता है। आपने अहमदाबाद आदि कई शहरों में देखे होंगे कि कई पति-पत्नी मिलकर गाड़ी या ठेला खिंचते हैं। गेहूं के पोते, लकड़ा, पत्थर या माल-समान हद से बाहर भरा हो और बिचारे मनुष्यों को, पति-पत्नी को श्वास में दम भर जाए यहां तक गाड़ी खिंचना पड़ता है और वह भी 10-20 मीलों तक रोज चलना, खिंचना पड़ता है, उसमें भी कड़ी धूप में नंगे पैर चलना। खाने-पीने का ठिकाना नहीं और केवल काली मजूरी करना। कितना दुःख है। कहलाती है सिर्फ मनुष्य गति ? लेकिन काम पशु की तरह करना पड़ता है। आप सोचिए पशु में और ऐसे मनुष्य में क्या अंतर है ? सिर्फ पशु 4 पैर का है और मनुष्य दो पैर का है इतना ही अन्तर है। **पाप की यह सजा कितनी भारी है।**

इसी तरह ढेड़, भंगी, चमार, चंडाल, मच्छीमार आदि के कुल में जन्म लेकर मलमूत्र साफ करना पड़े या मच्छी मारना, पकड़ना, सुखाना या चमड़ा उतारना जूते बनाना आदि का हल्का पाप का धंधा करना पड़े यह पाप की सजा कितनी भारी है। इसी तरह चोर, गुंडे, डाकू, लूटेरे, आवारा आदि मनुष्यों के रुप में जन्म लेकर वैसा पाप करना पड़े यह कितनी भारी पाप की सजा भुगतनी पड़ती है। कहलाती है मनुष्य गति लेकिन इतने नाम मात्र से राजी होने जैसा नहीं है। किए हुए पाप कर्मो के अनुसार मनुष्य की गति में भी दुःखी होकर, रो-रो कर जिन्दगी बितानी पड़ती है यह कोई कम पाप की सजा नहीं है ? कहा है कि-

कुग्राम वासः कुनरेन्द्र सेवा, कुभोजन क्रोधमुखी च भार्या।
कन्या बहुत्वं च दरिद्रता च, षड् जीव लोके नरका भवन्ति ॥
ग्रामे वासो नायको निर्विवेकः, कौटिल्यानामेकपात्रं कलत्रम्।
नित्य रोगः पारवश्यं च पुंसामेतत्सर्व जीवता मेव मृत्युः ॥

खराब गांव में रहना, मूर्ख-खराब राजा की सेवा, उच्छिष्ट झूठा खराब भोजन और क्रोध मुखी पत्नी तथा अधिक कन्याओं का जन्म होना तथा गरीबी अवस्था ये 6 ही इस जीव लोक में नरक की तरस दुःखदायी है। उसी तरह अनिष्ट गांव में वास, दुष्टनेता, हमेशा ही रोगों से घिरा रहना, परवशता गुलामी, ये सब पुरुषों के लिये जीते जी मृत्यु के समान दुःखदायी है।

तिर्यंच गति के जीवः-

1- **त्रस-** विकलेन्द्रिय-दो इन्द्रिय, तीन इन्द्रिय, चार इन्द्रिय।

पंचेन्द्रिय- जलचर, स्थलचर, खेचर (पक्षी)।

स्थलचर-उरपरिसर्प, भुपरिसर्प, चतुष्पद (पशु)।

2- **स्थावर(एकेन्द्रिय)**- पृथ्वी, पानी, अग्नि, वायु, वनस्पति।

वनस्पति- साधारण, प्रत्येक।

साधारण- सूक्ष्म (निगोद), बादर।

तिर्यंच गति में पाप की सजाः-

तिर्यच गति बहुत लम्बी चौड़ी है। सिर्फ पशु-पक्षी ही नहीं लेकिन चिंटी-मकोड़ और पृथ्वी, पानी, अग्नि के भी जीव गति की दृष्टि से तो तिर्यच गति में ही गिने जाते हैं। इसलिए निगोद के जीव पेड़-पौधे-वनस्पिति के जीव आदि एकेन्द्रिय से लेकर पंचेन्द्रिय पशु-पक्षी तक के जीव गति की दृष्टि से तिर्यंच की ही गति में गिने जाते हैं। ऊपर का चार्ट देखने से पता चल जाएगा!

इतने प्रकार के एकेन्द्रिय से लगाकर पंचेन्द्रिय तक के जीव तिर्यंच गति में गिने जाते हैं। स्थावर की एकेन्द्रिय कक्षा में पृथ्वीकाय में पत्थर मिट्टी-धातु आदि के रुप में जन्म होना, या पानी-अग्नि-वायु के रुप में जन्म लेना पड़ता है या वनस्पतिकाय में प्रत्येक वनस्पति की जाति में पेड़-पौधे बनकर ऊंचे मस्तक लटककर वर्षो तक खड़े रहना पड़ता है और साधारण वनस्पतिकाय में अत्यन्त सूक्ष्म निगोद की अवस्था में भी जीव को जाना पड़ता है। जहां एक सूक्ष्म जीव शरीर में अनन्त जीवों को एक साथ रहना पड़ता है। जो थोड़ा सा अल्पमात्र भी आहार मिला या श्वास मिली तो अनन्त जीवों को एक साथ बांट कर लेना पड़ता है। अब आप सोचिए सूक्ष्म शरीर और उसमें भी अनन्त को एक साथ रहना और उसमें भी आहारादि को अनन्त भाग में बांटना और जो मिले सो सही। उसमें भी एक एक गोले में अनन्त जीवों को रहना और सतत-जन्म-मरण सहन करना। एक श्वासोच्छवास परिमित काल में 17॥ बार जन्म-मरण धारण करना ऐसी स्थिति

जीव को मिले **तो सोचिए पाप की सजा कितनी भारी होगी ?** ऐसे कई पाप करके कई जीव पंचेन्द्रिय मनुष्य पर्याय में से भी पुनः निगोद में जाते है। यह पाप कर्म की सजा है। वे व्यवहारराशी निगोद के जीव कहलाते हैं। वहां नरक की अपेक्षा से भी अनन्तगुना दुःख है ऐसा श्री वीर प्रभु ने गौतम को कहते है -

यत् नरके नैरयिकाः दुःखं प्राप्नुवंति गौतम !
तीक्ष्णम् तत् पुनर्निगोदमध्ये अनन्तगुणं ज्ञातव्यम् ।।

हे गौतम ! नरक में नारकी जीव जितना तीक्ष्ण दुःख पाता उससे भी अनन्त गुणा दुःख जीव निगोद की गति में पाता है। ऐसा जानना चाहिए। सोचिए ! नरक गति के दुःखों का वर्णन आगे करेंगे उसकी अपेक्षा अनन्तगुना दुःख निगोद में ? अर्थात् यह कितनी भारी पाप कर्म की सजा हुई। और इतना जानकर भी आज आलु-प्याज-लसन आदि जो अनन्तकाय है, वे सूक्ष्म नहीं लेकिन स्थूल (बादर) साधारण वनस्पतिकाय ही है। निगोद में और इनमें अन्तर सिर्फ इतना ही है कि ये स्थूल (बादर) है और निगोद अत्यन्त सूक्ष्म है और इतना जानकर भी आज आलु-प्याज-लसन आदि का खाना नहीं छूटता है तो इन अनन्तकाय के जीवों की हिंसा का पाप कहां ले जाएगा ? शायद यही पर इसी वनस्पतिकाय में लाकर कहीं पटक न दे ? तो पाप की सजा कितनी भारी होगी ? सोचिए ?

विकलेन्द्रिय में दो इन्द्रिय में शंख-कोडी-जलो, अलसीए का जन्म मिलना, या तीन इन्द्रिय में चिंटी, मकोड़ा ईयल, धनेडा, खटमल, मल-जू का जन्म मिलना, या चतुरिन्द्रिय में मक्खी-मच्छर-भंवरी का जन्म मिलना कितना कष्टदायी-दुःखदायी सिद्ध होगा ? और 1-2 जन्म से कहां कार्य समाप्त होता है ? स्वकाय स्थिति में कितना दीर्घ काल पसार करना पड़ता है और कितने भव धारण करने पड़ते हैं। उसके बाद पंचेन्द्रिय पर्याय में जीव आता है। जलचर के रुप में मछली, कछुआ, मगरमच्छ, व्हेलमछली आदि बनना पड़ता है। जहां बड़ी मछली छोटी मछली को ही खा जाती है। जन्म देने वाली माता ही अपने बच्चे को खा जाय यह कितनी भारी सजा है ? खेचर में पक्षी के जन्म में उड़ते रहना और कहीं मिले तो खाना। स्थलचर में सांप, नेवले-छिपकली, बन्दर, हाथी-घोड़े-गाय-बैल-सूअर-गधा और बकरे-बकरी आदि के असंख्य जन्म मिलते है। करने पड़ते है। अब सोचिए ! यहां बेचारे पशुओं की क्या हालत है ? कैसी दशा है ? एक तरफ शरीर बड़ा-स्थूल, पेट लम्बा चौड़ा, आहार की संज्ञा तीव्र और खाने को क्या मिलता है ? घांस। उनको रोज रोटी बनाकर कौन खिलाए ? घास भी सब के भाग्य में कहा है ? रस्ते पर कपड़ा, कचरा, कागद-पूठठे आदि खा-पीकर भी पेट भरना पड़ता है। और बेचारे सूअर को तो जिंदगी भर तक किसी की विष्ठा खाकर ही जीना पड़ता है। कुत्ते के जन्म में गली में भटकना और किसी ने तू-तू कर बुलाया और एक रोटी का टुकड़ा डाला कि 5-6 कुत्ते दौड़कर आवे। अब किसको खाने को मिलेगा ? बस फिर लड़ना-झगड़ना। बन्दर के जन्म में पेड़-पौधों पर कूदना-दौड़ना और जो मिले सो खाना। गधे के जन्म में पत्थर-ईंट और लकड़ों का भार ढोना, बैल के जन्म में गाड़ी खिंचना, प्राण कण्ठ तक आ जाए तो भी गाड़ी खिंचना या हल चलाना तथा घोड़े और ऊंट के जन्म में भी क्या है ? पीठ पर या गाड़ी में जुडकर भार खिंचना, दम तूट जाय तब तक दौड़ना ही पड़े। इत्यादि यह कितनी भारी दुःखदायी सजा है ? मुर्गों को पॉल्टी फार्म में रहना, अण्डे प्रसवना और कीड़े-मकोड़े कचरे कीचड़ में से खाना तथा कटना और उसी तरह बकरे-बकरी के भव बूचड़खाने में कटना-मरना कितना भारी दुःख है। तिर्यंच गति में भी एक मिनिट सुख की आशा का किरण भी नहीं है। इस तरह तिर्यंच की गति में किए हुए पापों की बड़ी भारी और कड़ी सजा वर्षों और जन्मों तक भुगतनी पड़ती है।

(आगे और भी है...!)

रोग-मुक्त करने वाली-दवाई....

- ✻ कसरत भी एक दवाई है।
- ✻ सुबह-शाम घूमना भी एक दवाई है।
- ✻ व्रत रखना भी एक दवाई है।
- ✻ परिवार के साथ भोजन करना भी एक दवाई है।
- ✻ हंसी-मजाक करना भी एक दवाई है।
- ✻ गहरी नींद भी एक दवाई है।
- ✻ अपनों के संग वक्त बिताना भी एक दवाई है।
- ✻ खुश रहना भी एक दवाई है।
- ✻ कुछ मामलों में चुप रहना भी एक दवाई है।
- ✻ लोगों का सहयोग करना भी एक दवाई है।
- ✻ और एक अच्छा दोस्त तो पूरी की पूरी दवाई की दुकान है।

नोट- मैं दवाई बताने की फीस नहीं लेता, आपकी खुशी ही मेरी फीस है।

श्रमण संस्कृति के दिव्यपुंज परम पूज्यपाद आगमोद्धारकश्री

श्रमण संस्कृति के दिव्यपुंज परम पूज्यपाद आगमोद्धारकश्री का अवतरण इस धारा पर जैन शासन की गरिमा और गौरव को चहुंगति प्रदान करनेवाला सिद्ध हुआ है। विश्व कल्याणकारी जैन शासन आपश्री जैसी साहित्यलोक प्रतिमा पाकर धन्य बन गया है क्योंकि आपश्री के द्वारा आगम ग्रंथों के लिये किया गया और दिया गया योगदान युगों-युगों तक जैन शासन की ध्वजा का जगत लहराता रहेगा।

जगत की आवश्यकता के अनुसार गौरवशाली चरित्र के संतों का जन्म होता आया है, वे सभी उस आध्यात्मिक प्रकाश की ओर ईशारा करते है जो सृष्टि के प्रत्येक मानव के जीवन का उत्थान करता है पर आगमोद्धारकश्री ने तो मानव का ही नहीं जैन जगत का उत्थान करने का कार्य किया है। जिनागम के आदित्य से पूज्यपादश्री ने जैन जगत को आलोकित कर दिया है।

एक ऐसा तेजोमय व्यक्तित्व जिनकी वाणी ओर कलम से ज्ञानगंगा प्रवाहित होती रही है। आपश्री के नाम स्मरण मात्र से हृदय मंदिर में परमात्म प्रीति की ऋचाएं गुंजने लगती है। पूज्य आगमोद्धारकश्रीजी का जीवन संयम और साधना की रोशनी बिखेरता पूर्णिमा के चंद्रमां सा शीतल और शांत था किंतु पूज्यश्री के अमावस्या के दिन भी जन्म लेकर जिन शासन के गंगन मंडप में एक ऐसे जाज्वल्यमान सितारे के रूप में अमर ख्याति पाई है कि आज भी सागरजी महाराज के आगम अवदान को जैन जगत भूल नहीं पाया है और न भूल पायेगा।

अनेक कठिन परिस्थितियों से मुकाबला करते हुए लोगों और साधुओं के द्वारा पूज्यश्री की ख्याति और बढ़ते गौरव के कारण स्वार्थ से लिप्त होकर जो षड्यंत्र रचे गये थे उन सब का जवाब आपश्री ने जिनशासन की हित कामना से किये गये कार्यों और सच्चाई के बल पर निष्फ्ल कर दिये थे। वे अडिग मेरूपर्वत के समान अपने कार्यों से षड्यंत्रकारी असंतुष्टों को करारा जवाब देते आये थे। देश धर्म जाति और समुदाय से ऊपर उठकर पू.आगमोद्धारकश्री ने आगमग्रंथों के उत्थान का जो कार्य किया है वह अनुकरणीय अनुगमनीय एवं अतुलनीय है इसी कारण आज आगमोद्धारकश्री समुचे जैन जगत में जिनशासन के प्रकाश स्तम्भ बन गये है। आगमोद्धारकश्री पू.गुरू गौतम गणधर की उस श्रमण संस्कृति के जयवंता प्रतीक है जिनमें जीवन में तीर्थों की पवित्रता, सिद्धों की सिद्धता और गुरूत्व का गौरव झलकता है।

सागर समुदाय के सरसंघ सरताज पूज्यपाद आगमोद्धारक श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी महाराजा चरम तीर्थंकरपति भगवान महावीर स्वामीजी की श्रमण पाट परम्परा के ऐसे संत है जिन्होंने कभी भी समाज को पूजापाठ एवं परम्परा के नाम से विघटित नहीं किया है बल्कि आपश्री के आगम अध्ययन के आगे जैन जगत के सारे संत समुदाय नत्मस्तक होते थे परम्परा तिथि आदि का निर्णय उस समय सागरजी की वाणी ही करती थी पू.आचार्य नेमिसूरीजी म.सा.हो या पू.आचार्य वल्लभ सूरीश्वरजी म.सा.हो या पूज्य पुण्यविजयजी म.सा. आदि श्रमणवृंद शासन की कोई भी संकट प्रधान स्थिति में निर्णय लेने के लिये,उसके समाधान के लिये पूज्य सागरजी महाराज से ही सलाह लेते थे ओर सागरजी महाराज जो समाधान प्रस्तुत करते थे उस पर ही अमल करते थे। सारे जैन जगत का श्रमण समुदाय सागरजी महाराज के उस तर्क सम्मत धर्मविधि सम्मत समाधान का सम्मान करते हुए उस पर चलते थे। यह सागरजी महाराज सम्मान के अभिलाषी नही थे बल्कि शासन के हिताभिलाषी थे।

पूज्यपाद आगमोद्धारकश्रीजी ने श्रावक की उच्चकोटि की जीवनचर्या से श्रमण संघ के कठोर साधना पथ को अंगीकार कर संयम जीवन पर्यन्त दिन में मात्र एक बार भोजन (एकासणा) का कठोरता से पालन करते हुए तपस्या एवं संयम की उच्च पराकाष्ठा का निर्वाहित करते हुए निस्प्रही योगी सागरजी महाराज ने अपने ज्ञान,ध्यान,मनन चिंतन,साहित्य सृजन सब कुछ को लोकहित में समर्पित करते हुए अपनी अंतिम सांस को भी शासन को समर्पित कर दिया। सागरजी महाराज एक ऐसे महानायक थे जिनके जीवन का हर कर्म, प्रभु पूजा को समर्पित था। संस्कृति, साहित्य, मानवता का मेरूदण्ड है। इस बात को सागरजी ने चरितार्थ करने के लिये अपने जीवन का लक्ष्य जैन आगम ग्रंथों की प्राचीनता और अप्राप्त खंडों को ढूंढने और शोध को बनाया। वे इस बात को जानते थे कि आगम ग्रंथों के इतिहास को ज्ञातकर जैन संस्कृति के समृद्धिशाली एवं गौरवमय अतीत को उजागर किया जा सकता है।

आगम के बारे में विभिन्न संतों की परस्पर विरोधी मान्यताओं और मतभेदों को दूर करने के लिये आपने संपूर्ण भारत को अपना कार्यक्षेत्र बनाकर हजारों की संख्या में आगम ग्रंथों को खोज निकाला। एक बार कोई श्लोक या पंक्ति स्मृति कोष में पहुंच गई फिर तो उसका संदर्भ,ग्रंथ का नाम, पृष्ठ क्रमांक चाहे जब बताने की सक्षमता उनके मस्तिष्क में थी उन्होंने अपनी मेघा शक्ति के बल पर अधूरे श्लोक को पूरा कर दिखाया था। ताड़ पत्रों पर लिखे गये आगम ग्रंथों को खोज निकाल कर उनको आरस से लेकर धातु की पट्टिकाओं पर अंकित करवाकर उनको अमरता प्रदान कर जैन संस्कृति को जीवनदान दिया। सागरजी महाराज ने शास्त्रों में परमात्मा की अनुभूति की थी, ज्ञान को प्रभु भक्ति का आधार बनाया था। इसलिये तो उन्होंने आगम ग्रंथों को सुरक्षित रखने के लिये स्थान-स्थान पर आगम मंदिर का निर्माण करवाया। जो आज भी उनकी उपस्थिति का आभास कराते हैं।

श्री जैन आगमोदय समिति की स्थापना

पाटन विक्रम संवत् १९७१ भाद्रपद शुक्ला १०-११, शनिवार, सोमवार

इस अत्युत्तम और उपयोगी संस्था की स्थापना तो पंन्यासजीश्री आनन्दसागरजी, पं. मेघविजयजी, पं. मणिविजयजी आदि अनेक मुनिराजों की सम्मति से उनकी उपस्थिति में गत माघ सुदी-१० को श्री भोयणी तीर्थ में की गई थी, परन्तु उसकी आधुनिककाल के अनुसार कमेटी आदि की व्यवस्था अनेक कारणों से तुरन्त नहीं हो सकी थी, सो भादो सुदी-१०-११ इन दो दिनों में पाटन में मिल कर की गई है।

विक्रम संवत् १९७१ माघ सुदी-१० से उपर्यक्त समिति के कार्य का प्रारंभ किया गया है। समिति के निम्नलिखित दो मुख्य कार्य निर्धारित किये गये है-

१- जैनागम-पंचांगी सहित-मुनिराज से शुद्ध करवा कर श्रेष्ठ कागज पर सुन्दर टाईप में छपाने की व्यवस्था करना।

२- आगम के बोधवाले विद्वान मुनिराज से जैनागम की नाचना अनेक मुनिराज ले सकें ऐसी योजना करना।

उपरि लिखित दोनों कार्यों में से प्रथम कार्य के लिये पंन्यासजी आनन्दसागरजी की देखरेख में आगमों की टीका सहित शुद्ध प्रेस कॉपी बनवाने का कार्य शुरू होने पर उसे छुपाने के लिये निर्णय सागर प्रेस में प्रबंध किया। उसके लिये खास आर्डर से श्रेष्ठ कागज मंगवा कर उस पर मुद्रण शुरू किया गया है।

फ्लिहाल समिति की ओर से श्री आवश्यक सूत्र हारिभद्रीय टीका सहित और आचारांग सूत्र शीलांका-चार्यकृत टीका सहित छप रहे है। सेठ देवचंद लालभाई पुस्तकोद्धार फंड की ओर से श्री अनुयोगद्वार सूत्र और श्री उत्तराध्ययन सूत्र टीका सहित छपाने की व्यवस्था की गई है। उक्त चारों सूत्रों के कुछ फर्मे छप चुके है। तदुपरांत श्री उववाइसूत्र की प्रेस कॉपी तैयार हो गई है, श्री पिंडनिर्युक्ति की तैयारी हो रही है और अन्य सूत्रों के लिये भी प्रयत्न जारी है।

इस कार्य के लिये सेठ वेणीचंद सुरचंद के प्रयासों से आर्थिक सहायता प्राप्त करना भी शुरू किया गया है और उसमें भी अच्छी रकम प्राप्त हुई है। आगे प्रयत्न जारी है।

द्वितीय कार्य के लिये स्थान श्री पाटण निश्चित कर गत वैशाख वदी-६ से वाचना का कार्य प्रारंभ किया गया है। पंन्यासजी आनन्दसागरजी वाचना देते हैं, और तीस मुनिराज तथा दस साध्वियां उसका लाभ ले रही हैं। दो दो घंटे वाचना चलती है। सुबह श्री दशवैकालिक हारिभद्रीय टीका की वाचना चलती थी सो अब पूर्ण हो गई है। अतः दोपहर को चलती हुई सूत्रकृतांग सूत्र की वाचना अब दोनों जून चलती है। चातुर्मास समाप्ति तक उसके पूर्ण होने की संभावना है।

विक्रम संवत् १९७१ के भाद्रपद सुदी १० और ११ को जो मीटिंग हुई थी उसमें समिति के सुव्यवस्थित संचालन के लिये एक जनरल कमेटी नियुक्त की गई है, मंत्रियों की नियुक्ति की गई है और समिति संबंधी नियम पास किये गये है। इसका सारा विवरण उपर्युक्त समिति की ओर से छप कर प्रकाशित होनेवाला है।

यह कार्य अत्युत्तम और हर प्रकार से सहायता देने योग्य है। पूर्वकाल में विद्यमान आगमवाचना की उत्तम शैली का इससे पता लगता है। साथ ही आगमों की अशुद्ध प्रतियों को शुद्ध करने का और एक प्रति शुद्ध होने के बाद उसकी जितनी प्रतियां छपाई जाएं उन्हें लेनेवाले सब को यह लाभ प्राप्त होने का यह शुभ प्रसंग है।

उत्तम जीवों के लिये दोनों कार्यों के सम्बन्ध में अपने तन-मन-धन से लाभ लेना योग्य है। उक्त कार्यों में हमारी हार्दिक सहानुभूति है।

श्री पालीताना में इस शुभ दिन को पूज्य आचार्यश्री आनंदसागर सूरीजी के स्वामित्व में आगम वाचना का प्रारंभ हुआ है। अभी प्रारंभ में श्री ओघनिर्युक्ति और पिंडनिर्युक्ति की वाचना शुरू की गई है। ये दो सूत्र पूर्ण होने के बाद चातुर्मास में श्री भगवती सूत्र की वाचना होगी, जो लगभग चातुर्मास के अन्त तक चलेगी। यह वाचना सुबह शाम दो बार करीब पांच घंटे चलती है। आचार्यश्री सूत्र पढ़ते हैं और वाचना में भाग लेनेवाले भीतर ही भीतर उसका मनन कर लेते हैं। वाचना का दृश्य सचमुच दर्शनीय-आकर्षक है। वाचना में भाग लेने के लिये पं.मणिविजयजी आदि बहुत से गुणी मुनि महाराजा पालीताना में चातुर्मास करने वाले है। पालीताना में इस बार चातुर्मास में मुनि महाराजों और साध्वियों की अच्छी खासी संख्या होगी ऐसी हमारी धारणा है। हमारा अनुमान है कि इस शुभ प्रसंग का लाभ पाने वाचना में भाग लेने और सुपात्र दान का आनन्द लूटने के लिये धनवान जैन

बंधु बड़ी संख्या में पालीताना चातुर्मास करने आयेंगे।

इस समय श्री सिद्धाचक्र तीर्थ में अनेक साधु-साध्वी चातुर्मास के लिये रहे हुए है। श्रीमान आनन्दसागर सूरीजी उन सब को श्री भगवतीजी और प्रज्ञापना इन दोनों महान सूत्रों की वाचना अप्रतिम लाभ हर रोज चार घंटों तक देते है। सुज्ञ मुनिमहाराज और कतिपय सुज्ञ साध्वियों उसका अविच्छिन्न लाभ लेते हैं। श्रावक-श्राविकाएं भी जो इस अपूर्व वाचना का एवं मुनिदान आदि का लाभ लेने के लिये वहां चातुर्मास रह रहे हैं, वाचना सुनने बैठते है। श्रावक वर्ग को सूत्र-श्रवण करने का ही अधिकार होने के कारण कोई श्रावक-श्राविका उन सूत्रों की प्रति हाथ में रखकर पढ़ते नहीं परन्तु एकाग्रचित्त से श्रवण करते हैं। उसमें भी कम लाभ नहीं है। हमने भी थोड़े थोड़े दिन वहां रह कर इस तरह अपूर्व लाभ प्राप्त किया है। हमें तो यह चौथे आरे की अथवा पांचवें आरे के प्रथम भाग की बानगी प्रतीत होती है। ऐसा प्रसंग न तो हमने देखा है न पिछले सौ वर्षों में हुआ सुना है। हम चतुर्विध संघ से यह अपूर्व लाभ लेने के लिये सविनय प्रार्थना करते हैं।

हमें प्राप्त समाचार के अनुसार पालीताना में ये पर्व के दिन बहुत ही आनन्द-पूर्वक शासन की शोभा में अत्यधिक वृद्धि हो इस तरह अनेक प्रकार की तपस्याओं-प्रभावनाओं सहित व्यतीत हुए हैं। आचार्यश्री आनन्दसागर सूरीश्वरजी ने इस चातुर्मास की वाचना पालीताने में रखी है। इस लिये बहुत से मुनिराजों और साध्वियों ने इस क्षेत्र में वास किया है। वाचना का कार्य बहुत सुचारू रूप से चल रहा है। वाचना में अभी भगवतीजी तथा पन्नवणाजी पढ़े जाते हैं। वाचना का दृश्य आकर्षक, आव्हादजनक और प्राचीनकाल की स्मृति करानेवाला है। अनेक मुनि महात्मा एकत्र होकर चर्चा करते हैं। इस प्रकार साधु समुदाय के प्रसंग के कारण पर्यूषण पर पालीताना में श्रावक बंधुओं की अच्छी खासी संख्या उपस्थित थी। बहुत से सज्जन चातुर्मास करने आये हैं और पर्युषण करने भी बहुत से सज्जन आये थे। इस शुभ प्रसंग पर पालीताना में सोने-चांदी के रथ आने पर उसके प्रवेश महोत्सव में पालने और सपनों के घी आदि की बहुत अच्छी आय हुई थी। सेठ नगीनचंद कपूरचंद झवेरी की धर्मपत्नि रूक्मिणी बहन की ओर से कल्पघर के रोज व्याख्यान में रूपये की प्रभावना हुई थी और बाबूसाहब जीवनलालजी ने रूपये १००१ से कल्पसूत्र वहोराया था। इनके अतिरिक्त और भी बहुत सी प्रभावनाएं थी।

एक साध्वीजी ने दो मास के उपवास किये थे। इसके अतिरिक्त पैतीस उपवासवाले १, एक मास के उपवास वाले २०, पन्द्रह और उससे अधिक उपवासवाले १०५, अट्ठाई और उससे अधिकवाले १७१ व्यक्ति इतनी तपस्याएं हुई थी। सेठ पोपटलाल धारसीभाई जामनगरवाले यहां चातुर्मास रहे हुए है और बहुत उदारता पूर्वक द्रव्य व्यय करते हैं। उनकी ओर से पारणे के दिन सब साधार्मिक बन्धुओं को पारणा कराया गया था और तपस्वियों की यथोचित भक्ति की गई थी। धन-प्राप्ति का यह सद्व्यय है। समयानुकूल धनव्यय करने की इच्छा प्रकट करनेवाले बंधुगण पालीताना क्षेत्र में जो उदारता पूर्वक धनव्यय हुआ उसका वृत्तान्त सुनकर आश्चर्यचकित हो जाए यह संभव है। सभी मार्गों में धन व्यय उत्तम है इच्छानुसार उत्तम मार्ग में धन व्यय करनेवाले की सर्वदा प्रशंसा होती है। धन व्यय करने का जो उपदेश देता है परन्तु अपने पास का धन खर्च नहीं करता, ममता-मूर्च्छा का त्याग नहीं करता उसकी उपेक्षा धन व्यय करके अपनी प्राप्त सम्पत्ति का आनंद लेनेवाला बहुत श्रेष्ठ और प्रशंसापात्र है। इच्छा की वृद्धि हो उस तरह समयानुसार धन खर्च करने का हम सभी बंधुओं को सुझाव देते हैं।

गुरूदेव की सीख

जब हेमचन्द्र (दीक्षा के बाद श्रीसागरजी महाराज) दीक्षा लेने के लिये मुनिश्री झवेरसागरजी महाराज के पास गये तो महाराज श्री झवेरसागरजी ने बहुत ही अच्छी तरह से हेमचन्द्र की चारित्र ग्रहण करने, दीक्षा लेने की अनेक तरीकों से बहुत अच्छी तरह से जानकारी प्राप्त कर ली। हेमचंद्र से भी अच्छी तरह से बातचीत कर उनकी दीक्षा लेने की भावना को समझ लिया। पूज्य मुनिश्री झवेरसागरजी महाराज ने हेमचन्द्र को यह बहुत अच्छी तरह से समझा दिया कि दीक्षा क्या है? दीक्षा को पालन कितना कठिन और जवाबदारी भरा काम है। यह बात भी कह दी कि- आपसे दीक्षा का पालन नहीं होता है तो इसके कारण सिर्फ आपकी निंदा नहीं होती है बल्कि समग्र जैन शासन की निंदा होती है। यह सब विस्तार से चर्चा होने के बाद धर्मवीर हेमचंद्र ने पूज्य मुनिश्री झवेरसागरजी महाराज से कहा- गुरूदेव। दीक्षा क्या है? और इसकी जवाबदारी कितनी गंभीर और महान है। यह मैं अच्छी तरह से जानता हूं। मैंने अपने अंतर में अनेक वर्षों से दीक्षा लेने की भावना को पुष्ट किया है अब आपश्री मेरी इस भावना को पूर्ण करें। यह मेरी आशा है। दीक्षा लेकर में त्याग धर्म को शोभायमान करने का पूरा-पूरा प्रयत्न करूंगा और मेरी संयम सरिता में लेश मात्र भी गंदगी नहीं होगी।

पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्यदेवश्री आनंदसागरसूरीश्वरजी महाराजा को सैलाना नरेश महरारजा श्री दिलीपसिंह जी के द्वारा दिया गया अमारी पटट्क

अमारी पटटक

॥ श्री ॥

रुबकार महेकमे आलीये ईजलास खास सरकार सैलाना सीध श्री महाराजाधीराज महाराजा श्री श्री 108 श्री दिलीपसिंहजी साहब बहादुर, तारीख 15 नवम्बर सन् 1921 सम्वत 1978

नम्बर 2
नकल मुताबिक
असल
गवरीशंकर
शरीस्तेदार
दरबार ऑफिस
सैलाना

सिक्को

खरी नकल

सही

दीवान दरबार

जैन श्वेताम्बर मंदिरमार्गी महाजनान सैलाना के आगमोद्धारक-तपागच्छाचार्य-श्री आनंदसागरसूरीजी महाराज ने हमारी इच्छानुसार ईस साल सैलाना में चार्तुमास किया । उनके अनेक विषयो पर व्याख्यान हुए, ईस खुशी में नीचे लीखे माफीक हुकम देने में आता है ।

1 हर एक साल मीती भादवा वूदी 12 से मीती भादवा सुदी 5 तक याने पर्युषणों के सदाबंद माफीक पलती रहेगी. ईसमें विसेष ये हुक्म दिया जाता है के सैलाना की हदमें इन दिनों में बकरा नहीं मारा जावेगा ।

2 हमारी सालगीरहकी तीथी अष्टमी है इसलीये हर महीनेकी दोनों अष्टमीके दिन याने साल भरमें 64 दीन एकादसी व अमावस्या की पलती के माफीक तमाम ईलाके में पलती हीती रहे. ली.

नकल रुबकार हाजाकी बतोर दाखला आचार्यजी आनन्द सागरसूरीजी महाराज व पंच महाजन सैलाने को देने वास्ते दरबार ओफीस में भेजा जावे.

तारीख 15 नवम्बर सन् 1921 संवत् 1978
सही इंग्रेजीमें, श्रीजी हजुर सहेब बहादुरकी.
अजमेहकमे आलीये दरबार सैलाना.

नंबर रोजाना- नंबर रसीद
-मा. चा. 522 हु. 815
नकल रुबकार हाजाकी जरीये नकल हुकम हाजा

आचार्य महाराज आनंदसागरसूरीजी व पंच माहाजन सैलान ाको दी जावे तारीख 18-11-1921 संवत् 1978 सही इंग्रेजी में दीवान साहब दरबार सैलाना.

चार्तुमास और हमारे कर्त्तव्य....

✻ अनोखीलाल कोठारी

प्रकृति का घटना-क्रम चलता रहता है। यह प्रकृति रानी भी बड़ी चुलबुली है। इसके परिधान परिवर्तित होते रहते हैं। इसी परिवर्तन के दौर में गर्मी आती है, ठंड आती है और आता है चौमासा। जैन शास्त्र में आषाढ़ी चौमासा का उल्लेख जोर-शोर से हुआ है। व्यवहार में भी इसी चौमासे को चौमासे के रुप में ख्याति मिली है। इस चार्तुमास का महत्व लौकिक जगत में है तो आध्यात्मिक जगत में भी है। क्योंकि इसी अवधि में बार-बार बादलों का योग बनता है, पानी की वृद्धि होती है, जो लौकिक समृद्धि का आधार है। लोकोत्तर जगत में इस अवधि में गुरु का योग बनता है, पानी की वृष्टि होती है, जो आध्यात्मिक समृद्धि का आधार है। इस चातुर्मास में लौकिक सृष्टि बदलती है, आध्यात्मिक सृष्टि भी बदलती है। बहुत कुछ बदला नजर आता है।

साधुचर्या का शब्द है- चार्तुमास। चार्तुमास एक पारिभ्रामिक शब्द है, जो चार महीने की अवधि है, जिसे साधु विधिपूर्वक एक ही स्थान पर बिताते है। ''चार्तुमास'' शब्द का मूल अर्थ है- ''वर्षा-योग। ग्रामों व नगरों में वर्षा ऋतु में श्रमण, साधु, उपाध्याय व आचार्य एक स्थान पर चार महीने तक व्यतीत करते हैं। अतः इसे चार्तुमास कहते हैं। चार्तुमास आषाढ़ शुक्ल चतुर्दशी की पूर्व रात्री से प्रारम्भ होता है और कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी की रात्रि तक माना जाता है। चार्तुमास को स्थिर करने को ''प्रतिष्ठायन'' कहते हैं। चार्तुमास धार्मिक जगत की धुरी है। वर्षावास या चार्तुमास का न केवल पर्यावरण व कृषि के दृष्टिकोण से वरन् धार्मिक दृष्टिकोण से भी विशेष महत्व है। वर्षा ऋतु में जीवोत्पत्ति विशेष रुप से हो जाती है। पानी के सम्पर्क में आकर भूमि में दबे बीज अंकुरित हो जाते है। सीलन, फलन, फफूंद, काई की उत्पत्ति हो जाती है। त्रस व स्थावर जीवों की अधिकता के कारण उनकी विराधना की संभावना अधिक हो जाती है। जगह-जगह जल एकत्रित हो जाने से एक गांव से दूसरे गांव या शहर तक पगडण्डी द्वारा विहार संभव नहीं हो पाता है। आगम शास्त्रों में भी स्पष्ट निर्देश है कि चार्तुमास के दौरान साधु-साध्वियों को विहार नहीं करना चाहिये। चार्तुमास का संयोग हमारी मनःस्थिति में भरे विभिन्न प्रदूषणों को समाप्त करने के साथ ही दुष्प्रवृत्तियों को सत्य वृत्तियों में बदलने का कार्य करता है। चिंतन में सत्प्रवृत्तियों का समावेश हो जाता है तो चरित्र में आदर्शवाद के प्रति अगाध निष्ठा उत्पन्न हो जाता है। गुरु के दिशा-दर्शन के फलस्वरुप सभी लोगों में धर्म का भाव होता है, निष्ठा होती है, श्रद्धा, समर्पण का भाव होता है। हमें हमारी संस्कृति प्रवृत्ति को, उसकी उपलब्धियों और संभावनाओं को समझकर उनके गुणों को आत्मसात करना होगा, क्योंकि हमारी परम्परा में ही हमारा जीवन-प्रवाह बना रहता है। मानव शरीर को धर्म का प्रथम साधन माना गया है। शरीर को धर्माचरण में लगाकर जीवन का अनुचित संग्रह से आत्मा में मलिनता आती है। ''धन'' समुद्र का ''खारा पानी'' है, जितना हम उसको पाते है, उतनी ही प्यास बढ़ती जाती है। धन को धर्म के साथ जोड़कर हम आत्मीय रुप से धनवान बन सकते हैं।

''चार्तुमास'' धन और धर्म दोनों के द्वारा हमें उपलब्धियां प्रदान कर सकता है। धन-समृद्धि के दर्शन तो हम करते हैं किन्तु आत्मा के वैभव के दर्शन कराने में चार्तुमास हमें बहुत बड़ा योगदान प्रदान कर सकता है। चार्तुमास काल में त्याग, वैभव, तप, व्रत और संयम का सागर लहराने लगे, ऐसा सामूहिक प्रयत्न होना चाहिये। हम साधना व आराधना के महत्वपूर्ण बिन्दुओं की उपेक्षा करते हैं। हमारी जीवन-शैली अहिंसा से प्रभावित हो। हम जितना अधिक संयम का अभ्यास करेंगे, उतना ही अहिंसा का विकास होगा। भगवान महावीर ने चार्तुमासकाल में जिनवाणी द्वारा जीने की कला से विश्व को अवगत कराया है। अगर उसके अनुरुप हम चले तो निश्चित ही यशस्वी मानव बन सकते हैं। जप, तप, सत्संग आदि में समर्पित भाव से सहभागी बनने से ही चार्तुमास की विशेषता अक्षुण्ण रहेगी।

चार्तुमास और हमारा कर्त्तव्य :-

चार्तुमास अवधि के दौरान साधु-साध्वियों को विहार नहीं करना चाहिये। एक ही स्थान पर निवास करने से वहां के संघ के संतों के प्रति व स्वयं के प्रति कुछ कर्त्तव्य होते हैं। जिनका निर्वहन हमें करना होता है। अपने गांव या नगर में चार्तुमास की स्वीकृति की जय बोलने मात्र से कर्त्तव्य की इतिश्री नहीं हो जाती। संतों का चार्तुमास के दौरान सेवा, बीमार, वृद्ध-संतों की सेवा करना श्रावक-श्राविकाओं का कर्त्तव्य होता है। संतों के आहार, पानी, स्वास्थ्य, स्वाध्याय व अन्य अनुकूलताओं को ध्यान में रखते हुए, सेवा करना जरुरी समझें। समय की कमी होने पर एक दिन में एक बार तो दर्शन अवश्य करें। साधर्मी भक्ति का लाभ अवश्य लें। संत-दर्शन के लिए पधारें, अतिथियों के स्वागत-सत्कार को परम धर्म समझें। जरुरी नहीं कि चार्तुमास में मासक्षमण, अट्ठाई, अट्ठमतप

या अन्य कोई तप किये जाएं। अपनी सामर्थ्य के अनुसार छोटे-छोटे तप भी किये जा सकते हैं। नवकारसी, रात्रि-भोजन त्याग, जमीकंद त्याग, पत्तेदार सब्जियों का त्याग जैसे पच्चखाण तो अवश्य ग्रहण करें। तप, धर्म साधना करने वालों को प्रोत्साहन दें। ज्ञान सीखने वालों को शिक्षण-सामग्री उपलब्ध करवाए। प्रवचन में प्रभावना बंटवाने के साथ गरीब बेरोजगारों पर भी खर्च किया जाए, तोयह भी अच्छा होगा। इस संदर्भ में पूज्य साधु-साध्वियों के मार्गदर्शन की विशेष आवश्यकता रहती है। चार्तुमास के दौरान श्रावक जितना तप-त्याग करें, राग-द्वेष, काम-क्रोध, लोभ, मोहमद का त्याग करें, दानशीलता की प्रवृत्ति रखें व भावना रखें, तो धर्म की आराधना सही रुप से हो सकेगी।

चार्तुमास का महत्व ....

✻ श्रीमती प्रभा जैन, देवास

चार्तुमास अर्थात् धर्म करने का स्वर्णिम अवसर। आध्यात्मिक जगत में इसका विशेष महत्व है। चार्तुमास अर्थात चार माह संत-संतियों के सानिध्य में रहकर जीवन को पवित्र, पावन, निर्मल, उज्जवल बनाना है। इस बार 2 जुलाई से चार्तुमास प्रारंभ होने जा रहा है विशेष खुशी की बात है कि इस बार 5 माह का चार्तुमास है, अर्थात् धर्म-ध्यान करने का आत्मचिंतन, आत्म कल्याण, आत्मा के उद्धार हमें अधिक सुअवसर प्राप्त होगा।

इस समय हमारे पंच महाव्रतधारी साधु-संत उग्र विहार कर अपने-अपने क्षेत्रों की ओर बढ़रहे है, भीषण गर्मी में मैं उनके विहार की सुख-साता पूछते हुए वंदन नमन करती हूं।

हमारे मन मस्तिष्क में कभी-कभी यह प्रश्न उठता है कि चार्तुमास क्यों किया जाता है ? साधु जब दीक्षित होते है तब वे 5 महाव्रतों को स्वीकार करते हैं। इन 5 महाव्रतों में अहिंसा प्रथम महाव्रत है और साधु-संत षटकाया के रक्षक होते है। वर्षाऋतु में जीवों की उत्पत्ति अधिक रुप में होती है, वर्षा के कारण भूमि के अंदर छिपे हुए बीज अंकुरित हो जाते है। वनस्पति लालन-पालन की विशेष रुप से उत्पत्ति हो जाती है। असंख्य सूक्ष्म जीवों की हरिघास में उत्पत्ति हो जाती है। कई जगह सड़कों पर पानी के गड्डों में जल भरा रहता है जिससे अनेक प्रकार के सूक्ष्म बादर, त्रस स्थावर जीवों की उत्पत्ति होती रहती है ऐसे समय में साधु-संत चलते है, विहार करते है तो जीवों की हिंसा होती है।

आगम में ---- आता है, द्वारिका नगरी में जब श्री अरिष्ठनेमिजी भगवान वर्षावास में पधारे तब --- के --- राजा श्रीकृष्ण थे। श्री कृष्णजी अपने परिवार सहित भगवान के दर्शन हेतु पधारे तब भगवान ने उपदेश दिया था- वर्षावास में आवागमन नहीं करना तब त्रिखंड के अधिपति श्रीकृष्ण भगवान ने नियम बना लिया था कि-''मैं चार द्वारिका में ही रहूंगा, इसी प्रकार कुमारपाल राजा भी वर्षाऋतु में गाड़ी-घोड़ेन लगाने के नियम लेते थे और बाहर नहीं जाते थे।

इसके अतिरिक्त चार्तुमास का यह भी विशेष महत्व है कि मन रुपी धरती पर कांटे उग जाते है और इन कांटों को हटाने के लिए पवित्र विचारों रुपी वाणी चाहिए, इन कांटों को कुचलने के लिए धर्मध्यान रुपी रोलर चाहिए जो हमें संतों के सत्संग से ही प्राप्त हो सकता है। आत्मा को कमल की तरह खिलाने के लिए सम्यक बोधि सरोवर चाहिये।

किसी महापुरुष ने बहुत ही सुंदर बात कही है-

आत्मदुष्टा बनने के लिए धर्म और विवेक चाहिए।
कर्म अनल बुझाने के लिए तप का फायर ब्रिगेड चाहिए॥

चार्तुमास के बरसात के मौसम में अधिकतर व्यापार कामकाज नहीं रहता, फसल भी इस समय नहीं आती। इसलिए चार्तुमास का समय धर्म आराधना त्याग, तपस्या का स्वर्णिम अवसर रहता है।

कहने का तात्पर्य है कि चार्तुमास पर्व के शुभ मंगलमय अवसर पर हम शुभ विचारों से, शुभ भावना से, शुभ वातावरण में मोक्ष वधु को प्राप्त करने के लिए ज्ञान, दर्शन तप की आराधना करें, तप साधना के लिए वर्षाऋतु अनुकूल समय है, स्वर्ण अवसर है।

चार्तुमास की महत्ता को समझकर, गुरु भगवंतों की अमृत वाणी का लाभ लेने के लिए जीवन रुपी ज्योति को जगाने के लिए, आत्म-श्रृंगार करें। मैं यही कहना चाहूंगी कि-

आया है चार्तुमास का शुभ मौसम,
प्रवचन में जाएं, सब छोड़कर टेंशन।
गुरुवर पधारे हैं, देने शुभ सजेशन,
सुनकर हो जाए जन्म-मरण डिसकनेक्शन॥
चार्तुमास अवसर आया, चलो करते हम अभिनंदन।
स्वर्णमय अवसर पर गुरु भगवंतों का वंदन अभिनंदन॥

100 ओलीजी पूर्ण करने जा रही साध्वीवर्या श्री मैत्रीदर्शना श्रीजी म.सा की जीवन झलक - पारणा अक्टुबर2023 में

नाम :-	प.पू.साध्वीवर्या श्री मैत्रीदर्शनाश्रीजी म.सा.
जन्म दिवसः-	भादरवा सुदी-एकम
माताश्री श्रीमतीः-	प्रेमलता बेन बाबुलालजी खाबिया
पिताश्रीः-	बाबुलालजी खाबिया
बहनेंः-	सरीता, ममता, सपना, ज्योति, सा. सिद्धीदर्शना श्रीजी म.सा. (सोनू)
संसारी नामः-	मधुबाला
व्यावहारिक अभ्यासः-	दसवीं
संसारी निवासः-	प्रितम नगर, रतलाम (म.प्र.)
चतुर्थ व्रत स्वीकारः-	वर्ष 2000
दीक्षाः-	चैत्र सुदी-तेरस
दीक्षा तिथिः-	तेरस
दीक्षा के समय आयुः-	20 वर्ष
दीक्षा स्थलः-	सेमलिया तीर्थ, रतलाम (म.प्र.)
बड़ी दीक्षाः-	वैशाख वदी-पंचमी, साबरमती अहमदाबाद
दीक्षा प्रदान गुरुदेवः-	प.पू.आ.देवश्री अशोकसागर सूरीश्वरजी म.सा.
गुरुदेव श्रीः-	पू.सा.सम्यग्दर्शना श्रीजी म.सा.
प्रथम शिष्यः-	पू.सा.सिद्धीदर्शना श्रीजी म.सा.
कुल शिष्य, प्रशिष्य आज्ञावर्ती परिवारः-	1
गृहस्थ पर्यायः-	20 वर्ष
कुल संयम पर्यायः-	24 वर्ष
कुल आयुष्यः-	44 वर्ष
प्रथम चार्तुमासः-	पालीताणा तीर्थ
वर्तमान चार्तुमास :-	उज्जैन बड़ा उपाश्रय, विजय हीरसूरीश्वरजी, खाराकुआ, उज्जैन
कुल चार्तुमासः-	24
विशेष धार्मिक कार्यः-	जाप
भाषा ज्ञानः-	हिन्दी, गुजराती
चार्तुमास राज्यवार क्षेत्रः-	गुजरात, मध्यप्रदेश, बिहार, महाराष्ट्र
तपाराधनाः-	मासक्षमण, पांच सौ आयंबिल, वर्षीतप, वीसस्थानक, वर्धमान तप की 100 वीं ओली

आगमधरसूरी आगम वाचनादाता आगमिक प्रवर व्याख्याता श्रीसागरजी महाराजा की कुछ विशिष्टताऐं

1. 821457 श्लोक प्रमाण में 175 छोटे बड़े आगम प्रकरण ग्रंथों, सैद्धांतिक ग्रंथों आदि का सुंदर सम्पादन।
2. 70 हजार श्लोक प्रमाण आगमिक प्राकृत ग्रंथों ओर अनेक विविध संकलना ग्रंथों का अभिनव सर्जन।
3. 60 से 70 हजार श्लोक प्रमाण में 150 ग्रंथों प्रकरणों का मौलिक सृजन।
4. 20 हजार श्लोक प्रमाण गुजराती, हिन्दी साहित्य के 25 ग्रंथों का सृजन।
5. 2,00,000 (दो लाख) श्लोक प्रमाण आगम प्रकरण ग्रंथों की आरस (पत्थर) की 60 गुणा 24 की शिला पर उकेरवाना।
6. दो लाख श्लोक प्रमाण आगम आदि ग्रंथ को 24 गुणा 30 आकार के लेजर कागज पर सर्वांग शुद्ध रूप से मुद्रण करवाना।
7. प्राचीन 80 ग्रंथों पर प्रौढ़ संस्कृत भाषा में 15000 श्लोक प्रमाण विशिष्ठ प्रस्तावना लेखन।
8. वि.सं. 1971 से 1977 के मध्य सात आगम वाचना में कुल 2,33,200 श्लोक प्रमाण वाचना प्रदान की।
9. आगम मंदिर, पालीताना प्रतिष्ठा विक्रम संवत 1999 महावद 5
10. आगम मंदिर, सूरत प्रतिष्ठा विक्रम संवत 2004 महासुद 3
11. अर्द्ध पद्मासन स्थिति विक्रम संवत 2006 वैशाख सुद 5 दोपहर 3बजे से वैशाख वद 5 दोपहर 4.32 तक सूरत में।

पूज्यश्री के उपदेश से स्थापित विशिष्ट संस्थाएं ज्ञानमंदिर, उपाश्रय

विक्रम संवत् १९६४	सेठ देवचंद लालभाई जैन पुस्तकों द्वारा फंड, सूरत
विक्रम संवत् १९६८	श्री जैन तत्वबोध पाठशाला,सूरत
विक्रम संवत् १९७१	श्री आगमोदय समिति, सूरत
विक्रम संवत् १९७३	श्री राजनगर जैन श्वे. मू. धार्मिक इनामी परीक्षा, अहमदाबाद
विक्रम संवत् १९७५	श्री जैनानन्द पुस्तकालय, सूरत
विक्रम संवत् १९७७	श्री ऋषभदेव केशरीमलजी की पेढ़ी, रतलाम
विक्रम संवत् १९७८	शैलाना (मालवा) जैन उपाश्रय, शैलाना
विक्रम संवत् १९८०	श्री जैन श्वे.मू.तपगच्छ उपाश्रय, ९६, केनींग स्ट्रीट, कलकत्ता
विक्रम संवत् १९८०	श्री विनयमणि जीवन ज्ञान मंदिर, लकत्ता
विक्रम संवत् १९८१	श्री हिन्दी जैन साहित्य प्रचारक फंड, अजीमगंज
विक्रम संवत् १९८३	श्री जैनामृत समिति, उदयपुर
विक्रम संवत् १९८४	श्री नवपद आराधक समाज, अहमदाबाद
विक्रम संवत् १९८५	श्री वर्धमान तप आयंबिल- भवन, जामनगर
विक्रम संवत् १९८६	श्री नगीनभाई मंछुभाई जैन साहित्योद्धारक फंड, सूरत
विक्रम संवत् १९८८	श्री सिद्धचक्र साहित्य प्रचारक समिति, बंबई
विक्रम संवत् १९९२	श्री जैन आनन्द-ज्ञानमंदिर, जामनगर
विक्रम संवत् २००२	श्री आगमोद्धारक संस्था, सूरत
विक्रम संवत् २००२	श्री आनन्दसागर सूरीश्वरजी पाठशाला, सूरत
विक्रम संवत् २००५	श्री जैन पुस्तक प्रचारक संस्था,सूरत

जिज्ञासाओं को शांत करने का सुअवसर है चार्तुमास

✻ श्रमण डॉ. पुष्पेन्द्र

जैन धर्म में इसे बारिश के समय वर्षायोग तथा चार्तुमास के रुप में जाना जाता है। मान्यता है कि बारिश के मौसम के दौरान को इन आंखों से नहीं देखा जा सकता है तथा वर्षा के मौसम के दौरान जीवों की उत्पत्ति भी दो क्रियाएं इन मासूम जीवों को ज्यादा परेशान करेगी।

कम हिंसा हो तथा उन जीवों को ज्यादा अभयदान मिले, उसके दृष्टिगोचर कम से कम तो वे 4 में रहने के लिये अर्थात विशेष परिस्थितियों के अलावा एक ही जगह पर रहकर स्वकल्याणक के उद्देश्य से ज्यादा दो स्वाध्याय, सवर, पौषद, प्रतिक्रमण, तप, प्रवचन तथा जिनवाणी के प्रचार-प्रसार को महत्व देते हैं।

यह सर्वविदित ही कि जैन साधुओं का कोई स्थायी ठौर-ठिकाना नहीं होता तथा जनकल्याण की भावना संजोए वे वर्षभर एक स्थल से दूसरे स्थल तक पैदल चल-चलकर श्रावक-श्राविकाओं को अहिंसा, सत्य, ब्रह्मचर्य का विशेष ज्ञान बांटते रहते हैं। तथा पूरे चार्तुमास अर्थात् 4 महिने तक एक क्षेत्र की मर्यादा में स्थाई रुप से निवासित रहते हुए जैन दर्शन के अनुसार मौन साधना, ध्यान, उपवास, स्व अवलोकन की प्रक्रिया, सामयिक और प्रतिक्रमण की विशेष साधना, धार्मिक उद्बोधन, संस्कार शिविरों से हर शख्स के मन मंदिर में जनकल्याण की भावना जाग्रत करने का सुप्रयास जारी रहता है। तीर्थंकरों और सिद्धपुरुषों की जीवनियों से अवगत कराने की प्रक्रिया इस पूरे वर्षावास के दरमियान निरंतर गतिमान रहती है तथा परिणति सुश्रावकों तथा सुश्राविकाओं के द्वारा अनगिनत उपकार कार्यो के रुप में होती है। एक सबसे महत्वपूर्ण त्यौहार पर्युषण पर्व की आराधना भी इसी दौरान होती है। पर्युषण के दिनों में जैनी की गतिविधि विशेष रहती है तथा जो जैनी वर्षभर या पूरे चार माह तक कतिपय कारणों से जैन दर्शन में ज्यादा समय नहीं प्रदान कर पाते, वे इन पर्युषण के आठ दिनों में अवश्य ही रात्रि भोजन का त्याग, ब्रह्मचर्य, ज्यादा स्वाध्याय, मांगलिक प्रवचनों का लाभ तथा साधु-संतों की सेवा में संलिप्त रहकर जीवन सफल करने की मंगल भावना दर्शाते हैं।

चार्तुमास का सही मूल्यांकन श्रावकों और श्राविकाओं द्वारा लिए गए स्थायी संकल्पों एवं व्रत प्रत्याखानों से होता है। यह समय आध्यात्मिक क्षेत्र में लगातार नई ऊंचाईयों को छूने हेतु प्रेरित करने के लिए है। अध्यात्म जीवन विकास की वह पगडंडी है जिस पर अग्रसर होकर हम अपने आत्मस्वरुप को पहचानने की चेष्टा कर सकते हैं।

प्रयासों की बदौलत कई युवा धर्म की ओर उन्मुख होकर नया ज्ञान-ध्यान सीखाकर स्वयं के साथ होते है। कई सुश्रावक-सुश्राविका पारंगत होकर स्वाध्यायी बनकर जिन क्षेत्रों में साधु-साध्वी विचरण या जनकल्याण की भावना का प्रचार-प्रसार कर अपना जीवन संवार लेते हैं।

आस्थाहीनता का रोग- *दुर्भाग्य, विज्ञान और टेक्नॉलॉजी की उपलब्धियों से आकृष्ट हमारे युग के कुछ नेता मानव को एक विशुद्ध यांत्रिक, भौतिक और स्वयंचालित इच्छाओं से निर्मित प्राणी समझाते हैं। वे मानव की भौतिक प्रवृत्तियों पर तो जोर देते हैं किन्तु उसके अन्तस् में उपस्थित उच्चतर पवित्रता को भूले-से लगते हैं। हमारे युग के अनेक लोगों को रोग है आस्थाहीनता का। वे आध्यात्मिक रुप से विस्थापित है उनकी सांस्कृतिक जड़ें उखड़ चुकी हैं। वे परम्पराहीन हैं और चूंकि उनकी जड़ें कहीं नहीं है इसलिए वे गहरा अकेलापन महसूस करते हैं और फ्लत: कहीं भी मैत्री की तलाश करते हैं। वे फिरकेपस्त बन जाते हैं अन्तर केवल यहीं है कि आधुनिक फिरका किसी भी देश से बड़ा है। यह महाद्वीपों में फैला है। पृथ्वी पर स्वर्ग के नए मसीहा उन सभी निराश्रितों का शोषण कर रहे हैं जो उद्धत हो चुके हैं या जिनमें शून्यवाद की अपरिमित निराशा घर कर चुकी है।*

✻ जिस जिस प्रकार से आत्मा आत्मभाव को प्राप्त करें, वे सब प्रकार धर्म के है। आत्मा जिस प्रकार से अन्य भाव को प्राप्त करें, वह प्रकार अन्य रुप है, धर्मरुप नहीं।

श्रीसागर और संस्था

जैन शासन में धर्म आराधना के लिये मुख्य रूप से सम्यदश्रन गुण का विशिष्ट निर्मल बनाने के लिये श्रुत महापुरुषों ने अव्युच्छिति (तीर्थंकर परमात्मा के द्वारा दिखाये गये मार्ग पर निरंतर बगैर रुके लगातार बलाक लोगों के मस्तिष्क में भी प्रवाहित करते रहना) गुण को अपने जीवन का ध्येय बनाकर हम पर अवर्णनीय उपकार किया है। इस कार्य को भूतकाल में आचार्यश्री भद्रबाहु स्वामी, आचार्यश्री स्थुलीभद्रजी, आचार्यश्री सिद्धसेन दिवाकरजी, आचार्यश्री उमास्वतिश्रीजी, आचार्यश्री आर्यरक्षित भूमिजी, आचार्यश्री जिनदासगणिजी, आचार्यश्री जिनभद्रगणिजी आदि अनेक महापुरुष हो गये हैं।

इन्हीं महापुरुषों के साथ आचार्यश्री हरिभद्र सूरीश्वरजी पूज्य आचार्यश्री कालिकाल सर्वज्ञश्री हेमचंद्र सूरीश्वरजी, श्रीमलयगिरिजी, आचार्यश्री अभयदेव सूरीश्वरजी महोपाध्याय न्यायविशारद श्री यशोविजयजी आदि समर्थ शास्त्र पारंगत श्रुत घर गहन अर्थ गंभीर सर्वतोमुखी प्रतिमा के दर्शन कराने वाले सैक़डों हजारों ग्रंथों से रचयिता से ही जिन शासन जयवंता बना है।

यही कार्य बीसवीं शताब्दी में आगमवेत्ता पूज्यपाद आगमोद्धारक श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी महाराज ने अपने जीवनकाल में कर आगम ग्रंथों को अमरता प्रदान कर खुद भी अमरता पाई है। आगम ग्रंथों के मुद्रण, प्रकाशन रक्षा, शिला ताम्रपत्र पर उत्कीर्ण करने के लक्ष्य के साथ चिरंजीव बनाने के लिये आर्थिक व्यवस्था के लिये अपने जीवन काल में अनेक संस्थाओं की स्थापना कारवाई थी इन सभी संख्याओं ने अपने कार्यों को पूर्ण करने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी। पूज्यश्री के द्वारा स्थापित की गई संस्था की सूची निम्नानुसार है-

क्र.	स्थापना विक्रम संवत्	संस्था का नाम
1	1964	सेठ देवचंद्र लालभाई जैन पुस्तकोद्धारक फण्ड, सूरत
2	1970	श्री आगमोद्धारक समिति
3	1975	श्री जैनानंद पुस्तकालय, सूरत
4	1977	सेठ ऋषभदेव केशरीमलजी पेढ़ी, रतलाम
5	1980	उपाश्रय और ज्ञानमंदिर, कलकत्ता
6	1980	श्री हिन्दी साहित्य प्रचारक फण्ड, अजीमगंज
7	1983	जैन बोर्डिंग, रतलाम
8	1984	श्री जैनामृत समिति, उदयपुर
9	1984	श्री नवपद आराधक समाज
10	1985	श्री वर्धमान तप आयंबिल खाता, जामनगर
11	1985	श्री श्वेताम्बर मूर्तिपूजक जैन बोर्डिंग, जामनगर
12	1987	श्री जैन तत्वबोध पाठशाला, सूरत
13	1987	श्री रत्नसागरजी जैन विद्याशाला कापमी फंड, सूरत
14	1987	श्री नगीनभाई मंघुभाई जैन साहित्योद्धारक फंड, सूरत
15	1988	श्री सिद्धचक्र साहित्य प्रचारक समिति
16	1992	श्री लक्ष्मी आश्रम तथा जैन भोजनशाला, जामनगर
17	1993	श्री देवबाग, जामनगर
18	1993	श्री आयंबिल खाता ओर जैन भोजनशाला, जामनगर
19	1994	श्री वर्धमान जैन आगम मंदिर, पालीताना
20	1995	श्री श्रमण संघ पुस्तक फंड
21	1998	श्री जैन धर्म प्रभावक समाज, अहमदाबाद
22	1998	श्री सिद्धचक्र गणधर मंदिर, पालीताना
23	2000	श्री शांतिनाथजी पेढ़ी, गोधरा
24	2002	श्री आगमोद्धारक संस्था, सूरत
25	2003	श्री गोवर्धन जैन ताम्रपत्रागम मंदिर, सूरत

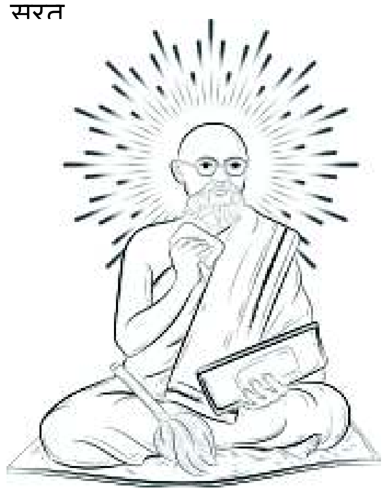

जैन धर्म में चार्तुमास की महिमा....

❊ देवेन्द्र जैन, लुधियाना

भारत में विभिन्न धर्मो के संत महात्माओं की अपनी-अपनी मान्यताओं और धार्मिक विधानों के अनुसार साधना पद्धतियां, अनुष्ठान और निष्ठाएं परिपक्व हुई है। इन पद्धतियों में चार्तुमास की परम्परा बड़ी महत्वपूर्ण है। वैदिक परम्परा के संतों में भी चार्तुमास की परम्परा चली आ रही है परन्तु जैन धर्म में इसका महत्वपूर्ण स्थान है।

चार्तुमास का अर्थ है:- चार मास के लिए साधु-साध्वियों का एक स्थान पर ठहरना। चार्तुमास का आरंभ वर्षा ऋतु में होता है। वर्षा के कारण सभी मार्ग अवरुद्ध हो जाते है और जीव-जंतुओं की उत्पत्ति भी बढ़ जाती है अतः जीवों की रक्षा और संयम-साधना के लिए चार मास तक साधु-साध्वियों को एक स्थान पर रुकने का शास्त्रीय विधान है। अपवाद स्वरुप ही साधु चार्तुमास में अन्यत्र जा सकते हैं। शास्त्रों में उल्लेख है कि संघ पर संकट आने अथवा किसी स्थविर या वृद्ध साधु की सेवा के लिए साधु चार्तुमास में दूसरे स्थान पर जा सकता है अन्यथा उसे चार्तुमास में एक स्थान पर रुकने का शास्त्रीय आदेश है।

जैन धर्म में चार्तुमास की परम्परा अत्यन्त प्राचीन है। स्वयं श्रमण भगवान श्रीमहावीर ने अपने जीवन में विभिन्न क्षेत्रों में चार्तुमास किये। उन्होंने अपना अंतिम 42 वां चार्तुमास पावापुरी में किया था। उन्होंने अपना अंतिम उपदेश तथा देशनाएं दी थी जो जैनों के प्रसिद्ध आगम ''उत्तराध्यन सूत्र'' में संकलित है। अपने इस अंतिम चार्तुमास में भगवान श्रीमहावीर ने अपने प्रधान शिष्य गौतम स्वामी को प्रतिबोध देते हुए कहा था- **''समयं गोयम मा पमाए''**

अर्थात्- हे गौतम ! संयम साधना के लिए एक क्षण भी आलस्य मत करो।''

भगवान श्रीमहावीर का संदेश केवल गौतम स्वामी के लिए ही नहीं अपितु प्रत्येक साधक के लिए था।

जैन धर्म में सामाजिक तथा धार्मिक दृष्टि से यह अत्यन्त महत्वपूर्ण है। व्यक्ति और समाज में परस्पर सम्बद्ध है। एक-दूसरे का विकास परस्पर सहयोग से होता है। हमारे साधु-साध्वियां वर्षावास में लोगों को समाज में परस्पर भाईचारे, सद्भावना और आत्मीयता बनाए रखने की प्रेरणा देते हैं। आधुनिक युग संदर्भ में व्यक्ति और समाज की परिस्थितियां बदल गई है। जीवन में कुंठाएं, धन लोलुपता और पक्ष राग बढ़ गया है तथा धर्म-राग कम हो गया है फिर भी साधु-साध्वी इसमें संतुलन रखने और मर्यादित जीवन जीने की प्रेरणा देते हैं जिससे समाज में एकसुरता बनी रहती है। धार्मिक दृष्टि से तप, जप, स्वाध्याय, दान, उपकार और सेवा आदि प्रवृत्तियों को प्रश्रय देना उनका ध्येय भी है और कर्त्तव्य भी, क्योंकि साधु-साध्वियां समाज के अधिक निकट होते हैं और वे समाज में पनप रही रुढ़ियों और मिथ्या धारणाओं का निराकरण करने का प्रयत्न करते हैं। आधुनिक युग संदर्भ में चार्तुमास की यही विशेषता है।

चार्तुमास में महापर्व संवत्सरी आती है। इस दृष्टि से इसकी महत्ता और भी बढ़ जाती है। यह जैनों का अलौकिक पर्व है। एक और जहां यह तप, त्याग का पर्व है वहां परस्पर वैमनस्य और वैर विरोध को दूर करने का सशक्त माध्यम भी है।

भगवान श्रीमहावीर ने चार्तुमास में इसकी गवेषणा इसलिए की थी कि व्यक्ति समाज में रहते अनेक प्रकार के मन-मुटावों का शिकार हो सकता है अतः महापर्व संवत्सरी में इनका सुधार कर लिया जाए।

यह धारणा एक स्वस्थ और सभ्य समाज की गारंटी है। इस प्रकार जैन धर्म में चार्तुमास का सामाजिक और धार्मिक महत्व तो है ही व्यक्ति और समाज को एक सूत्र में पिरोने का भागीरथ प्रयत्न भी है। इस बार का चार्तुमास 2 जुलाई 2023 से प्रारम्भ होकर 27 नवबंर को सम्पन्न होगा।

एक लकड़ी पानी के किनारे पड़ी थी। उसे तीन जीव खींच रहे थे। मछली नीचे ले जाना चाहती थी। बतख ऊपर उड़ा ले जाने की फिक्र में थी। कछुआ जमीन पर घसीट रहा था। तीनों पूरा जोर लगा रहे थे, पर वह जहां की तहां रही। एक इंच भी आगे न बढ़ सकी। उसी प्रकार मन, बुद्धि और चित्त जीवन की गाड़ी को अपनी-अपनी दिशा में ले जाना चाहते हैं, पर लक्ष्य एक न होने के कारण जीवन जहां का तहां ही बना रहता है और प्रगति जरा भी नहीं हो पाती। यही बात जीवन के हर पहलू पर लागू होती है। प्रगति हेतु दिमाग खाली रखना, अविज्ञान को जानने का प्रयास करना, पूर्वाग्रहों से बचना एवं हर प्रयास को बिना निराश हुए खाली न जाने देना अनिवार्य है।

गुरूदेव का जाना और उत्तरदायित्व का बोध

पू. मुनिराज श्री झवेरसागरजी महाराज के वरद हस्ते दीक्षा ग्रहण करने के बाद पूज्यश्री के सुशिष्य बन हेमचंद्र, मुनिश्री आनंदसागरजी बन गये। मुनिश्री आनंदसागरजी की धार्मिक प्रगति तेज गति से आगे बढ़ रही थी, धार्मिक व्रतोत्सव आदि में तपस्या करते उनके मुख की उज्जवलता अत्यंत शांत और नाम के अरूरूप आनंद से भरी दिखाई देती थी। अपने सुशिष्य की धार्मिक और शासन की अद्भूत सेवा देखकर मुनिश्री झवेरसागरजी को भी अप्रितम शांति और आनंद का अनुभव होता था। मुनिश्री आनंद सागरजी म.सा. का प्रथम चातुर्मास अपने गुरूदेव श्री झवेरसागरजी म.सा. के ही साथ लीबड़ी में हुआ था। यहां पर मुनिश्री झवेरसागरजी म.सा. का स्वास्थ्य अचानक ही बिगड़ गया। नवदीक्षित शिष्य मुनिश्री आनंदसागरजी म.सा. जिन्हें अपने गुरू के प्रति अत्यधिक अनुराग था, को चिंता में डाल दिया कुछ दिनों में गुरूदेव का कामधर्म हो गया? अत्यन्त अफसोस और इस आधात ने मुनिश्री आनंदसागरजी को तोड़कर रख दिया। अपने गुरू के सबसे प्रिय शिष्य के लिये यह आघात जबर्जस्त था क्योंकि दीक्षा के एक ही वर्ष में गुरू अपने शिष्य को निराधार छोड़कर चले गये, वे एक ही रट लगाने लगे, आपके चले जाने पर अब मेरा क्या होगा? इस भारी शोक और दुःख में मुनिश्री आनंदसागरजी म.सा.को श्री संघ के आगवानों ने रात दिन सांत्वना और समझाईश दी और जगत की यही रीत है ऐसा समझाया। थोड़े समय में ही मुनिश्री आनंदसागरजी म.सा. ने अपने को संभाल लिया और गुरू आज्ञा को ध्यान में लाकर वे शास्त्रों के अभ्यास में अपने को मगन कर लिया। पूज्य मुनिश्री आनंदसागरजी म.सा. इस बात को अच्छी तरह से जानते थे कि संसार का राग दुषण है और सुदेव, सुगुरू, सुधर्म का राग भूषण है। गुरूदेव श्री झवेरसागरजी महाराज साहब के स्वर्गवास होने पर लगे गहरे आघात से संभल कर मुनिश्री को यह समझाने में देर नहीं लगी कि मेरा क्या कर्त्तव्य है गुरूदेव के जाने के बाद अब मेरा क्या फर्ज है? गुरूदेव के वियोग के शोक में ही डूबे रहने से पूज्य के कार्यों की पूर्णाहुति नहीं होगी। गुरूदेव ने मुझे दीक्षा इसीलिये दी थी कि मैं अपने जीवन को पवित्र और सुन्दर बनाऊँ, जैन साहित्य का परिशीलन का उनका उदार करने का परोपकारी लक्ष्य ही मेरा जीवन होगा। आगे के जीवन में आगमोद्धारकश्री ने अपने जीवन लक्ष्य को पाकर जैन जगत में अमर स्थान पा लिया।

त्रिपुटी आगम ज्योर्तिवादि विजेता पूज्य आगमोद्धारक श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी महाराज संवत 1943 में छाणी पधारे थे, यहां पण्डित गजारामजी शास्त्री के पास आपने शास्त्र अभ्यास किया था। इस समय आपके साथ आपके बड़े भाई पू. मणिविजयजी महाराज तथा श्री विजयनेमि सूरीश्वरजी महाराज भी शास्त्रीजी के पास ही अध्ययन अभ्यास कर रहे थे। इन तीनों महात्मा की संगत से इनकी प्रसिद्धि त्रिपटी के नाम से हो गई थी।

आगमोद्धारक की सदस्यता एवं श्रुतभक्ति में दान देने के लिये ऑन लाईन बैंक की जानकारी

महोदय,

आगमोद्धारक की सदस्यता प्राप्त करने के लिये सदस्यता शुल्क एवं श्रुतभक्ति दान आप ऑन लाईन जमा कर सकते है। आपकी धनराशि भेजने के लियेः-

बैंक का नामः- इण्डियन ओवरसीज बैंक, शाखा नईसड़क उज्जैन (म.प्र.)

खाताः- श्री सिद्धसेन दिवाकर चेरिटेबल ट्रस्ट, 46, सखीपुरा, उज्जैन (म.प्र.)

खाता क्रं.:- 068002000001425 IFSC Code:- IOBA0000680

वर्षा से जुड़े कुछ रोचक तथ्य....

बारीश के मौसम का सभी को इंतजार रहता है। गरमी की गहन तपन के बाद बारिश की फुहारें सभी के लिए राहत का सबब बनकर आती है। एक ओर इनसे जहां गरमी से राहत मिलती है तो वहीं मौसम भी खुशनुमा हो जाता है। बारिश के भी कई रुप होते हैं, जो विश्व के अलग-अलग हिस्सों में देखने को मिलते हैं। प्रस्तुत है इनसे जुड़े कुछ रोचक किस्से एवं तथ्य।

बारिश की बूंदें बनने व बरसने की प्रक्रिया भी रोचक होती है। पानी के वाष्प बादल का रुप लेते हैं और जब वे ठंडे होकर जम जाते है, तो पानी या बरफ के रुप में बरसते हैं। बादलों में अधिक पानी जमने के कारण पानी की बूंदें बड़ी हो जाती है और जब वे इतनी भारी हो जाती है कि बादलों में रुकी नहीं रह सकती, तो वे बारिश के रुप में धरती पर गिरती है और आसमान से बरसती प्रतीत होती हैं। बारिश की औसत गति 18 मील प्रति घंटे की रहती है, जिसे 2500 फीट की ऊंचाई से धरती तक पहुंचने में मात्र 2 मिनट लगते हैं।

यह जानकर आप आश्चर्य करेंगे कि सबसे कम वर्षा कहां होती होगी। स्वाभाविक रुप से इसके नाम पर रेगिस्तान की कल्पना उठती है, लेकिन ऐसा रेत के रेगिस्तान के बजाय बरफ के रेगिस्तान अर्थात् अंटार्कटिका में होता है। यहां वर्ष भर में मात्र 16.6 सेमी बारिश होती है। इसके साथ धरती पर कुछ स्थान ऐसे भी है, जहां बारिश होती तो है, लेकिन वह धरती तक नहीं पहुंच पाती। ऐसी घटना प्रायः रेगिस्तान में होती है, जहां बारिश की बूंदें आसमान में ही वाष्प बनकर उड़ जाती हैं। अमेरिका, कनाड़ा, ऑस्ट्रेलिया और अफ्रीका के अधिक ऊंचाई वाले क्षेत्रों में ऐसा कुछ होता है।

बारिश की बूंदें पानी से ही बनी हों, ऐसा जरुरी नहीं। कई बार ये तेजाब से भी बनी होती हैं, यहां तक कि धातुओं की भी बनी हो सकती है। इसी के साथ बारिश के रंग भी चौंकाने वाले पाए गए हैं। खून की बारिश सुनकर आप चौक सकते हैं। मिट्टी और माइक्रो ऑग्रेनिज्म मिलकर पानी के रंग को लाल बना देते हैं, लगता है कि जैसे खून की बारिश हो रही हो। बोगोटा, कोलंबिया में भी ऐसी बारिश होने का दावा किया गया है।

दूध की बारिश की बात भी चकित कर सकती है। अमेरिका के दो राज्य ऑरेगन व वाशिंगटन के 300 किलोमीटर दायरे में फैले 15 शहरों में दूधिया बारिश होती पाई गई, जो बाद में वाहनों एवं खिड़कियों में सफेद चाक की राख के रुप में अवशेष छोड़ गई। विशेषज्ञ अनुमान लगाते रहे कि इसका कारण क्या हो सकता है।

पहले इसका कारण जापान में किसी ज्वालामुखी से निकले धुएँ तथा जंगली आग के धूल आदि को माना गया है लेकिन बाद में खोज करने पर इसका स्रोत 772 किमी दूर एक झील निकली, जिसकी उथली-सूखी तली से यह उठी थी। इसी तरह हलदिया में हरी बारिश लोगों के लिए चिंता का विषय रही, जो तेजाबी बारिश निकली। इसका पानी इकट्ठा करने पर बाद में सूखने पर नीली धूल हाथ लगी, जिसका प्रमुख कारण प्रदूषण पाया गया। जहां अधिक प्रदूषण था, वहां इस नीली बारिश का प्रकोप अधिक रहा।

इसके अतिरिक्त बारिश के कुछ ऐसे भी विचित्र घटनाक्रम मिले हैं, जहां मछली, मेंढ़क व अन्य जीवों की बारिश होती पाई गई। बारिश के साथ जीव-जंतुओं का गिरना एक मौसमी घटना है, जिसमें पंखरहित जीव आसमान से गिरते हैं। ऐसी घटनाएं कई देशों में घटित होती रहती है। इसके पीछे मुख्य कारण जलस्तंभीय बवंडर (टोर्नेडिक वाटरस्प्राउट) माना जाता है, जो मछलियों से लेकर मेंढ़क व अन्य जीवों को अपने साथ समेटकर कई मील ऊपर एवं दूर तक ले जाता है एवं बाद में किसी दूसरे स्थान पर बारिश के रुप में आसमान से टपका देता है। इस बवंडर की गति 160 किलोमीटर प्रतिघंटा तक हो सकती है, जिसमें दबाव कम पड़ने पर पहले भारी चीजें गिरती है और फिर हलकी। इस तरह इसमें टंगे एक प्रकार के जीव एक साथ धरती पर गिरते पाए गए हैं।

सन् 2009 में जापान के इशिकावा इलाके में मछली, मेंढ़क और टेडपोल जहां-तहां छत पर, खेतों में, मैदान में पाए गए ? हर कोई हैरान था कि ये जलीय जीव यहां-कहां से आ गए। निष्कर्ष यह निकला कि जल-बवंडर इन जीवों को साथ में खींचकर लाया होगा और जैसे-जैसे यह बवंडर धरती व जलीय क्षेत्र से आगे बढ़ता गया, यह जलीय जीवों को साथ

में समेटता गया और वायुमंडल में आगे बढ़ते हुए, अंततः दूरवर्ती स्थानों पर बारिश के रुप में इनको बरसाते हुए लोगों को आश्चर्यचकित करता रहा।

मध्य अमेरिका के होंडुरस इलाके में मछलियों की बारिश लगभग हर साल होती है। स्थानीय लोगों का कहना है- पिछले लगभग 100 सालों से ऐसी घटना साल में एक बार अवश्य होती है। इस कारण यहां के लोग डेलुविधा-डे पीसेस नाम का उत्सव भी मनाने लगे हैं। सन् 2012 में दक्षिणी कैलिफोर्निया में सैन जुआन हिल्स गोल्फ क्लब के आसपास एक के बाद करीब 30-40 शार्क मछलियां आकर गिरी थी। बाद में लोगों ने इन्हें उठाकर वापस पानी में डाल दिया। कारण पता न चल सका कि ये एक साथ कैसे आ टपकी। आस्ट्रेलिया में मकड़ियों की बारिश भी सुनने में आई है। इसी तरह ब्राजील, अर्जेंटिना में भी इनकी बारिश हो चुकी है। ऐसा कई बार हो चुका है, जिसका वैज्ञानिक कारण अभी तक ज्ञात नहीं हो पाया है।

बारिश का ओलों के रुप में बरसना भी आम बात है, लेकिन इनके आकार कई बार इतने बड़े होते हैं कि ये चर्चा का विषय बन जाते हैं। खरबुजे के आकार के ओले तक कई बार बरसते देखे गए हैं। ऐसे गोले अमेरिका के साउथ डेकोटा में 2010 में कई बार गिरे थे, जो इतिहास के सबसे बड़े ओले माने जाते हैं, जिनका आकार आठ इंच तक का था। यदि ये किसी व्यक्ति पर गिरते तो उसे धायल कर देते। इनके कारण कई गाड़ियों को भारी क्षति हुई थी।

इस तरह बारिश एक सुखद एहसास ही नहीं लेकर आती कुछ प्राकृतिक कारणों से तो कुछ मानवीय हस्तक्षेप के चलते, ऊपर बताए गए बारिश के विचित्र स्वरुप भी यदा-कदा प्रकट होते हैं, जो कुछ चकित करते हैं, तो कुछ मानव को सुधरने की शिक्षा देकर चले जाते हैं। जो भी हो ऐसी घटनाएं सबको सोचने-विचारने के लिए मजबूर तो कर ही देती हैं।

मृत्यु से कौन छुड़ा सकता है ?

मृत्यु से छुड़ा वही सकता है जो मृत्यु से भी बलवान अर्थात् मृत्युंजय हो। काल से बचा वही सकता है जो **''कालों का भी काल''** कर्मो के दण्ड और बंधन से मुक्त वहीं कर सकता है, जो कर्मो की गहन गति को जानता हो और स्वयं इनके बंधन से सदा मुक्त हो। मनुष्य से देवता बन वही सकता है जो देवों का भी देव हो। अतः यह एक बात अच्छी तरह से गाँठ बाँध लेनी चाहिये कि संसार में अन्याय देन अथवा सहायता भले ही कोई मनुष्य दे सकता हो, मुक्ति और जीवन मुक्ति का दाता एक परम पिता परमात्मा ही है। इसी कारण एक परम पिता परमात्मा को ''मृत्युंजय'' अथवा ''अमरनाथ'' भी कहा जाता है। अन्य किसी को भी ये उपाधियां नहीं दी जा सकती। भक्तजन परम पिता परमात्मा ही से कहते हैं- हे प्राणदाता, हे जहाँपनाह, हे शरणदाता हमारी रक्षा करो!''

''सुख घनेरे देने वाला पिता'' भी केवल परमात्मा को ही कहा जाता है। अतः **''कालकण्टक दूर करने वाले''** पिता केवल परमात्मा ही है।

ममता : वड़ का बीज

अध्यात्मसार में उपाध्यायजी महाराज ने थोड़ी ममता को भी वड़ के बीज की उपमा दी है। छोटे से वड़के बीज में से भी विशाल वड़पैदा होता है और उसकी वड़्वाईओं (दाढ़ियों) में से नये.... नये वड़ पैदा होते ही जाते है और बड़ा वड़ का जंगल बन जाता है।

थोड़ी ममता भी वड़के बीज जैसी है। वह बढ़ती जाती है बढ़ती जाती है। ऐसी छोटी सी ममता गृहस्थों को ही नहीं, साधुओं को हैरान करती है। गृहस्थों के लिये ममता करने जैसी चीज धन, जमीन, मकान आदि बहुत सारी है, लेकिन साधुओं को क्या है? ममतायुक्त मन ऐसा है कि वह जहां चाहे वहां ममता कर सकता है। भोजन में, वस्त्र में, पात्र में, वसति में.... अरे छोटी मुहपत्ति में भी ममता हो सकती है।

''लाखो न लोभाणा ते चींथरे चुंथाणा !''

लड्डु की ममता ने आषाढ़भूति को वेश्या के घर में डाल दिया। सिंह केसरी लड्डू की ममता ने उस मुनि को रात में भटकाया। बालमुनि की ममता ने अपने 500 शिष्यों को केवलज्ञानी बनानेवाले आचार्य स्कंदक को संयम से गिरकर अग्निकुमार देव बनाया। ममता सिर्फ बाह्य पदार्थो पर ही नहीं होती, अपने विचारों पर भी ममता हो सकती है और उस विचारों की ममता, पदार्थो की ममता से भी बहुत सूक्ष्म है। इसीलिए वह ममता बड़ी दुरुद्धर है।

अपने विचारों की पकड़ के कारण जमालि सन्मार्ग से भ्रष्ट बना। सिर्फ जमालि ही नहीं, रोहगुप्त, गोष्ठामाहिल आदि सभी निन्हवों का जन्म अपने विचारों की ममता के कारण ही हुआ है। वास्तव में ममता वड़का बीज है और अगर इसे नहीं रोका तो विशाल वन बनने में देर नहीं लगेगी!

चार्तुमास काल में भगवंतों के महाप्रभाव से मन मंदिर, माटी पवित्र और स्थान तीर्थ बन जाते है

* शांतिलाल सगरावत, मंदसौर

चार्तुमास काल में हमारी महान पुण्यवानी उदय से हमें आचार्यो, साधु-साध्वी भगवंतों की निश्रा प्राप्त होती है। समता, वात्सल्य, मधुरता, निर्णय शक्ति, अन्तरपथ से सजग-सहन प्रहरी, तत्वों की छैनी निखार शैली, सौम्य स्वभाव, स्निग्ध व्यक्तित्व, प्रवचन शैली भाव गंभीर हृदय स्पर्शी, सीधी-सपाट और आगम सम्मत होती है। उनका संयमी जीवन का आचार और व्यवहार श्रावक-श्राविकाओं को ज्ञानवान और क्रियावान बनाने हेतु नये-नये आयाम और सूत्र प्रदान करते हैं। उनके प्रवचन हमारे जीवन को उन्नत बनाकर संसार से उदासीन रहने का पाठ पढ़ाकर वैराग्य के पथ पर आगे बढ़ाते हैं।

साधु भगवंतों की अमृतमयी वाणी चार्तुमासकाल में विशेषतः विभिन्न संदेशमय उपदेश, जिनशासन की गरिमा मय पूजन, तपस्या, नवकार मंत्र जाप, छट्ठ अट्ठम तप, पर्युषण पर्व, स्वामी वात्सल का प्रभावी आयोजन करने की शाश्वत प्रेरणा देता है। इस काल में तीर्थकरों की महत्वपूर्ण देन चार्तुमास में अम्लाल सेवा कर्मो की महान निर्जरा कर साधक-आराधक पर्यावसन को प्राप्त कर सुबोधि हो जाता है। प्रश्न व्याकरण सूत्रों के अनुसार चार्तुमासकाल भगवंतों के धर्मचक्र का प्रवचन सभी प्राणियों की उन्नति का आध्यात्मिक आधार और करुणा का मार्ग प्रशस्त कर कौन दर्शन की विरासत को सुरक्षित रखने को बोधि लाभ देकर शाश्वत भूमिका का निर्वहन करते हैं। श्री संघ को तप, त्याग और साधना-आराधना से सजाने, संवारने, निवारने और उसे अद्भूत गति प्रदान करते हैं।

चार्तुमासकाल में कण-कण सजग, क्षण-क्षण सावधान बन इसकी ऊर्जास्वरुप शक्ति को जिस कुशलता चतुराई नीतिमत्ता से समस्याओं को संभावनाओं से संजोकर समाधान का दीया जलानेवाला स्वरुप चमत्कृत करने वाला होता है। बहुविध सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक, आध्यात्मिक धार्मिक जागरण और कल्याण के बहुआयामी क्रियान्वयन लोकमंगलकारी और लोककल्याण हेतु सर्वोपरि होते हैं।

चार्तुमासकाल में मंदिर, उपाश्रयों, स्थानक, देवालयों में आयोजित महोत्सवों का मुख्य उद्देश्य सकारात्मक सोच की ठोस आध्यात्मिक बुनियाद का निर्माण करना होता है। इस काल में भगवान की पूजा-प्रतिष्ठा आराधना कर, नकारात्मक विचारों को मन से बाहर कर मन को मंदिर बनाना होता है। ईश्वर में डूबने की ओर प्रेरित करनेवाले होते हैं- पूजा-अर्चना, सामायिक-प्रतिक्रमण, प्रवचन, ध्यान, जप तप और भजन के साथ ही त्याग और तपस्या का सिलसिला है। यह सभी जीवन के महत्वपूर्ण लक्ष्य मुक्ति पाने की अहम् प्रक्रियाएं है। इसकाल में साधु भगवंतों और तीर्थकर भगवंतों का प्रभाव प्रक्रियाएं है। इस काल में साधु भगवंतों और तीर्थकर भगवंतों का प्रभाव सर्वव्यापी होकर इनकी क्षेत्र स्पर्शना से वहां की माटी पवित्र हो जाती है और स्थान तीर्थ बन जाते हैं।

सावन से लेकर कार्तिक तक चौमासे के महिने हैं। चौमासे का नाम सुनते ही मन में एक अलबेली आध्यात्मिक उमंग हिल्लौरे लेने लगती है, उत्सवधर्मिता जागृत हो जाती है। सावन अध्यात्म प्रेम का श्रृंगार है। साधु-साध्वियों का उपाश्रयों में पदार्पण कर वास करना, धार्मिक सामाजिक तीज-त्यौहारों का चाव है। सावन में धर्म क्रियाओं का ऐसा लालित्य है, निखार है और भक्ति संदेश का विस्तार है जो निरन्तर चार महिनों तक श्रावक-श्राविका द्वारा व्रत उपवासों की धानी चुनरियां ओढ़ ली जाती है। सबके म न में उमंग, उत्साह, उल्लास और भक्तिभाव मुखर हो जाता है।

चौमासे में रिमझिम बारिश में मिट्टी की सौंधी खूशबू की तरह ही भक्ति दर्शन की चाह का एक अलग ध्वनि, धून और ब्रह्मनाद उत्पन्न होने लगता है। मन मंदिर में, जिनालयों के आंगन में पूजा-अर्चना, दर्शन का मन भावन दृश्य देख चहुं ओर अध्यात्म की लहलहाती हरियाली, उपाश्रयों में साधु-भगवंतों के प्रवचनजनों को प्रेरणादायी वाणी का रसास्वादन करवाकर उनके जीवन में जादुई परिवर्तन ला देते हैं और वह उन्हें धर्म परायण श्रद्धालु, श्रावक-श्राविका बना देते हैं। चार्तुमास का सम्पूर्ण काल साधु-साध्वी भगवंतों की प्रेरणा से अनेकानेक धार्मिक, साहित्यिक, शैक्षिक एवं समाजोपयोगी

गतिविधियों का चिरस्मरणीय संयोजन काल बन जाता है। चार्तुमासकाल में देव, गुरु और धर्म की आराधना करते हुए तप, साधना कर जिन शासन की प्रभावना करते है। रुढ़ियों और आडम्बर से आबद्ध समाज खुली हवा में आध्यात्मिक श्वास लेने का दिशा बोध करता है। चार्तुमास गांव की माटी को तप के चन्दन से सुवासित करनेवाला होता है।

चार्तुमास में ग्रहण की गई शुभ प्रतिज्ञा या शुभाशुभ को ग्रहण करना, प्रवचन प्रभावना करना, सुपात्र देना, सेवा सुश्रुसा करना, गुरु आदि का विनय करना, वैय्यावृत्य आदि करना, मन-वचन-काय की यक्षार्थ प्रवृत्ति करना अविसंवादना योग है। आध्यात्मिक जगत में यही एक ऐसा पर्व है जिसकी प्रतीक्षा की जाती है और पूर्व तैयारियां भी। चार्तुमास में ऋषि मुनियों ने खानपान में बहुत से संयम बरतने की सलाह भी दी है। दिन में एक बार भोजन, रात्रि भोजन त्याग, साग सब्जी के सेवन से बरसात में विषैल कीड़ों के कारण परहेज करने को कहा जाता है।

चार्तुमास काल में साधना के प्रति उत्साह जागृत होता है वह वर्ष भर जीवन में धर्म प्रभावना का जोश संचार, मन में अनवरत आध्यात्मिक प्रफुल्लता का भाव जागृत होता रहता है। साधक में निरंतर आत्म प्रवाह गतिशीलतामय होता है। अपनी भावना में जमी धर्म के प्रति पवित्रता नव ऊर्जा का प्रार्दुभाव करती रहती है जो लक्ष्य पूर्ति में किसी भी बाधा को आड़े नहीं आने देती।

एक पथ क्या पथिक कुशलता क्या ?
जब धाराएं प्रतिकूल न हों
नाविक की धैर्य परीक्षा क्या
जिस पथ पर बिखरे फूल न हों।

चार्तुमासध्येय पाकर लक्ष्य तक पहुंचने का दृढ़संकल्पी बन उत्साह के साथ निरंतर गतिशील रहने का सफलतम आध्यात्मिक साधना महापर्व है।

इन्हें भी आजमाइये...!

✻ शरीर में यदि कहीं मकड़ी फिर गई हो तो नींबू के रस में चूना पीसकर लेप करने से आराम होता है।

✻ मिरगी आने पर रीठा पानी में घीसकर दो चार बूंदे नाक में डालने से छींक आकर आराम हो जाता है।

✻ दही में भुना पीसा जीरा, नमक और काली मिर्च बराबर मात्रा में मिलाकर सेवन करने से रोगी का हाजमा सुधरता है।

✻ तीन दाने काली मिर्च, तीन लौंग और तीस पत्ते नीम के पीसकर आधा कप पानी व थोड़ी शक्कर मिलाकर दिन में दो बार प्रातः शाम खाने के बाद सेवन करें। भोजन शीघ्र पचने लगेगा।

✻ सोंठ के पावडर को पुराने गुड़में मिलाकर सूंघने से हिचकी आना बंद हो जाती है।

✻ गुड़ और सरसों का तेल सामान्य समान मात्रा में मिलाकर कुछ दिनों तक चाटने से दमा एवं सूखी खांसी में राहत मिलती है।

✻ पानी में नीम की छाल को आठवां भाग शेष रह जाने तक पकाकर उसमें गुड़ मिलाकर नियमित 3 दिन तक सोते समय सेवन करें। दस्त के माध्यम से पेट की कृमि निकल जाते हैं।

✻ कांच अथवा कांटा चुभने पर गुड़ में अजवाइन मिलाकर और पीसकर गर्म करें, गर्म करने के उपरांत इस लेप को जहां कांच या कांटा चुभा हो उस स्थान पर कपड़े की पट्टी की सहायता से बांध दें। दो-तीन दिन में ही पूर्ण आराम मिल जायेगा।

✻ पेशाब में परेशानी होने पर गुड़ को कुनकुने दूध में मिलाकर सेवन करने से पेशाब खुलकर आती है।

✻ चोट लगने से उत्पन्न दर्द में 50 ग्राम गुड़ में 10 पीपल के पत्तों को पीसकर सेवन करें, इसके सेवन करने से चोट लगने से जो दर्द होता है, उसमें आराम मिलता है।

✻ केले यदि मात्रा से ज्यादा खा लिये हो तो एक इलायची चबा लें। केला हजम हो जायेगा।

✻ मूंगफली कभी ज्यादा खा ली हो तो चुटकी भर काला नमक फांक लें।

✻ आम ज्यादा खा लिये हो तो एक-दो जामुन खा लें।

✻ तरबुजा सदैव नमक के संग खाना चाहिये ताकि तरबूज पच जाए।

✻ यदि जामुन ज्यादा खा गये हो व जी मिचला रहा हो तब एक आम की फांक खा लेने से तुरन्त आराम मिल जाता है।

✻ खाना बनाते समय यदि हाथ जल जाए तो पानी में नमक घोलकर उसमें हाथ डालें, फफोले नहीं पड़ेंगे।

✻ किसी भी तरह का त्वचा रोग जैसे दाद, खाज, एग्जीमा होने पर नीम का रस और गन्ने का रस मिलाकर पीयें। रक्त की शुद्धि हो जायेगी और त्वचा रोग से भी मुक्ति मिल जायेगी।

✻ यदि कब्ज की परेशानी हो तो एक गिलास गन्ने के रस में दो नींबू निचोड़कर पी लें।

✻ रक्तहीनता होने पर दो गिलास गन्ने का रस नित्य पीयें।

✻ खूनी दस्त होने पर गन्ने के रस में अनार का रस मिलाकर पीयें। शीघ्र ही आराम मिलेगा।

चार्तुमास में क्या करें हम और आप

एक बार फिर चार्तुमास का काल हम सबके बीच है। हमारे पूज्य संतों और साध्वियों की पूरे भारत वर्ष में जगह-जगह भव्य तरीके से चार्तुमास की स्थापना हो चुकी है। चार्तुमास का समय आत्मसाधना व धर्माराधना का काल होता है। अहिंसा धर्म के पालन के लिए हमारे पूज्य संत वर्षाकाल के चार माह इस बार पांच माह में एक स्थान पर रहकर आत्मसाधना और धर्म प्रभावना करते है। यह समय साधु और श्रावक दोनों के लिए महत्वपूर्ण होता है। साधुओं का योग मिलने से जैन समाज की लोक प्रभावना में वृद्धि होती है। उनके उपदेश व प्रेरणा से सामाजिक एकता का विकास होता है। स्कूल, अस्पताल, धर्मशाला आदि के निर्माण के द्वार खुलते हैं। चार्तुमास के दौरान जो धर्म की प्रभावना होती है। वह अपने आप में देखने योग्य होती है। साधु के समागम से मानों उस स्थान पर एक नयी स्फूर्ति और जागरुकता देखने को मिलती है। अनेक ऐसे आयोजन इस दौरान परवान चढ़ते हैं जो वाकई प्रशंसनीय होते है, लेकिन हमारे पूज्य संतों व श्रावकों को यह भी साथ में ध्यान रखना होगा कि कहीं भी चार्तुमास मात्र प्रदर्शन की भेंट न चढ़ जाये। प्रभावना के चक्कर में साधना कहीं खो न जाए। पिछले चार्तुमास की संख्या को संख्यात्मक वृद्धि करने वाला न साबित हो। नये जोश और जज्बे के साथ एक ऐसी उपलब्धि लेकर यह चार्तुमास जाये कि समाज के लिये सदियों तक यादगार बना रहे और साधु की साधना में भी ऐसी वृद्धि हो कि वह अपने रत्नत्रय का पालन कुछ इस तरह करें कि वे अपने मोक्ष मार्ग को जल्द प्राप्त कर सके।

बाह्य प्रदर्शन के लिए धन को पानी की तरह बहाया जाता है, चार्तुमास के दौरान मंदिरों में अनेक बहुरंगीन बड़ी-बड़ी पत्रिकाएं भारी मात्रा में देखने को मिलती हैं, जिनमें करोड़ों रुपये व्यय किये जाते हैं, बाद में यह पत्रिकाएं रद्दी में चली जाती हैं, चार्तुमास के दौरान और भी अनेक ऐसे आयोजन होते हैं। अनेक जगह चार्तुमास कमेटियों में झगड़े और समाज में विघटन जैसी घटनाएं भी सुनने को मिलती हैं। प्रतिदिन प्रवचन श्रवण कर उन्हें आत्म जीवन में उतारने का प्रयास करें। नौकरीपेशा श्रावकों के लिए प्रतिदिन संभव न हो तो रविवार और अवकाश के दिनों में तो प्रवचन श्रवण अवश्य करें। बच्चों को भी साथ लायें, यह बहुत आवश्यक है।

1- हरे पत्ते वाली सागः- सब्जी, डिब्बा बंद वस्तुएं, आचार मुरब्बा तथा जमीकंद का प्रयोग न स्वयं करें न अपने परिवार में करने दें। उन्हें इनकी लाभ-हानि समझाकर स्वेच्छा से त्याग करने की प्रेरणा दें।

2- श्रावक के षट् आवश्यकों का पालन जरुर करें तथा त्यौहार एवं व्रतों में संयम का पालन करें।

3- चार माह तक ही नहीं हमेशा के लिये नियम घर में प्याज, लहसून, आलू आदि का उपयोग न करें।

4- होटल, बाजार आदि के खाने का त्याग करें, घर में बना भोजन ही करें। वैसे घर का भोजन ही शुद्ध और पौष्टिक तथा लाभकारी होता है। अतः हम सब का प्रयास होना चाहिये कि हम हमेशा घर के भोजन को ही महत्व दें।

5- यथसंभव अष्टमी, चतुर्दशी एवं अन्य पर्व के दिनों में एकासना/उपवास करें। इससे आपके स्वास्थ्य को भी लाभ होगा और धर्म का भी पालन होगा जिनसे न सधे व सिर्फ दिन में दो बार भोजन बियासणा/एकासणा का नियम लें।

6- चार्तुमास में अपनी भूमिका का निर्वाह पूरी जिम्मेदारी पूर्वक करें। चार्तुमास साधुजन के स्वास्थ्य आदि का पूरा ध्यान रखें तथा उनकी साधना के लिए अनुकूलता बनाए रखने में अपने कर्त्तव्य निभायें।

7- गुरु भगवंतों की आहार व्यवस्था आगम के अनुकूल तथा संतों के रत्नत्रय वृद्धि हेतु समीचीन हो।

8- बाहर से आनेवाले अतिथियों के साथ वात्सल्य भाव से भोजन व निवास की समुचित व्यवस्था हो।

9- स्वयं तथा अपने बच्चों को शाम को भक्ति, आरती, वैयावृत्ति आदि में शामिल करें। पूरे मनोयोग जितना अधिक समय चार्तुमास में दे सके देने का प्रयास करें। किसी अनावश्यक विसंवाद में न फंसे। अपनी धर्माराधना से मतलब रखें। समाज को तोड़ने वाले कार्यो को तवज्जो प्रदान न करें।

10- अधिकाधिक समय धर्मध्यान में लगाये। चार्तुमासरत साधु की चर्या में साधक बनें। लेकिन ध्यान रहे हम साधु की साधना, चर्या में साधक ही बनें। चर्चा में साधक ही बनें, उनकी चर्चा में दोष लगने के निमित्त न बनें, न ही साधना में बाधक बनें।

11- अपने बच्चों को चार्तुमास में चलने वाले विभिन्न

शिविर, पूजन विधान, प्रवचन, सांस्कृतिक आयोजन आदि में सक्रिय रुप से भाग लेने की प्रेरणा दें।

12- चार्तुमास के दौरान आप ऐसा कोई कार्य जो अमर्यादित या अशोभनीय हो न करें जिससे समाज व साधु दोनों के लिए कष्टकारी हो। चार्तुमास को हमेशा विवादों से परे रखें। किसी संतवाद या पंथवाद के चक्कर में न पड़े तथा पूजन-अभिषेक की पद्धिति के विवादास्पद पहलुओं से दूर रहें। समाज के पैसे का अपव्यय न हो ऐसे कार्य को प्रमुखता दी जानी चाहिए जिनसे दीर्घकालीन लाभ की प्राप्ति समाज को हो। चार्तुमास की प्रभावना की आड़में प्रदर्शन की भेंट न चढ़ने दें।

13- संस्कारों के रोपण के लिए पाठशाला का संचालक आवश्यक हैं। जहां पर पाठशाला न चलती हो, वहां पाठशाला का शुभारंभ हो। शिक्षा के क्षेत्र में आशातीत पाठशाला खोलने की पहल की जाये। औषधालय खोलकर हम रोगियों का उपचार सुगम तरीके से उपलब्ध कराने की पहल कर सकते हैं।

14- हमारी समाज में आर्थिक रुप से कमजोर भाईयों की संख्या काफी अधिक है। क्यों न इस चार्तुमास में आप समाज में एक ऐसा फण्ड बना लें, जो अपने असहाय भाईयों की मदद के लिए आगे आ सके। उनके बच्चों को अच्छी शिक्षा दिलाने के लिए हम साधन उपलब्ध करा सके। यदि यह कार्य हो गया तो मैं समझता हूं चार्तुमास की बहुत बड़ी उपलब्धि हो गई।

15- वर्षाकाल में सूक्ष्म जीवों की उत्पत्ति अत्यधिक होती है। अतः गृहस्थ जीवन में समरंभ, समारम्भ, आरम्भ करने में पूर्ण सावधानी रखने का प्रयास किया जाये। हमारे किसी भी आरम्भ कार्यों से जीवों की हिंसा न हो।

16- प्रत्येक जगह की जैन समाज में एक ऐसा स्थान होना चाहिये, जहां हमारा पूरा समाज एक जगह एकत्रित होकर अपने आवास के लिए पर्याप्त जगह आदि हो। इसके लिये पर्याप्त जगह में धर्मशाला, हाल आदि का निर्माण भी आवश्यक है, जो सभी सुविधाओं से पूर्ण हों।

स्वप्रशंसा :- ***साधक के जीवन को बरबाद-करनेवाले दो बड़े दोष है। 1- आत्मप्रशंसा 2- परनिंदा।***

परनिंदा से भी स्वप्रशंसा के दोष से दूर रहना बहुत मुश्किल है। व्यक्ति स्वप्रशंसा स्वयं नहीं करें, फिर भी दूसरे करे ऐसी अपेक्षा मन में नहीं जगे यह बहुत ही मुश्किल है। स्वप्रशंसा सुनने के बाद उत्कर्ष के भावों को नहीं लाना बहुत ही कठिन है। इसलिये आत्मश्लाघा के दोष से बचना बहुत ही जरुरी है।

वास्तव में तो गुणवान मनुष्य की अपने आप प्रशंसा होती ही है। उसके लिये घोषणा करने की जरुरत नहीं होती। गुलाब को सुगंध के बारे में कहने की जरुरत नहीं होती। यह तो स्वयं हुआ करती है, हवा सुगंध को स्वार्थ फैलाती है। फूलों को भंवरों को आमंत्रण देना नहीं पड़ता कि ओ भंवरो ! हम यहां पर खिले है, आप आओ, सुगंध फैलते ही स्वयमेव भौरों का आगमन हो जाता है। आत्मा में भी गुणों की सुवास प्रगट होकर स्वयमेव चारों तरफ फैल जाती है। इसके लिये घोषणा करने की जरुरत नहीं होती। गुणों के लिये घोषणा करने का मन हो तो समझाना कि मेरे गुण असली नहीं, नकली है। क्योंकि नकली गुणोंवाला मनुष्य ऐसे आत्म निरीक्षण कर ही नहीं सकता। कारण यह है कि आत्म निरीक्षण यह भी सबसे बड़ा असली गुण है।

श्री आचारांग सूत्र

दु:ख कहाँ नहीं है?

देवानां जराऽभाव ? इति चेन्न तत्राप्युपान्त्यकाले लेश्याबलसुखवर्णप्रमुखान्युपपत्तेरस्त्येव तेषामपि जरासम्भव:। उक्तं च देवाणं भंते! सब्वे समवन्ना तो इणट्ठे समट्ठे। (१/३/१)

प्रश्न : देवलोक में देवो को वृद्धावस्था होती है?

उत्तर: हाँ, देवलोक में भी आयुष्य के ६ माह बाकी रहते है तब देवो की लेश्या, बल, सुख, शरीर एंव वर्ण आदि की हानी होती है। तथा गले की माला मुरझाने लगती है आदि जरा के लक्षण देवो में भी रहते है।

बोध: सफेद बाल पर काली डाई लगाने से वृद्धावस्था चली नहीं जाती। जरा तो यमराज की दूत हैं और कह रही हैं - अभी भी जीवन सुधार ले वरना पछताना पडेगा।

वर्ग पहेली क्रमांक-338

✻ प्रस्तुति :- जयंतीलाल जैन, रतलाम (म.प्र.)

1	2		■	3	4		■	5
■		■	6			■	7	
8		9	■	■	10			
	■		■	11	■	■		■
12	13		■		■	14		
■		■	15		16		■	■
17			■	■	18		19	
20		■	21	22		■		■
	■	23			■	24		

बाएं से दाएं:-

1- हस्तिनापुर में ज्येष्ठ माह में जन्में तीर्थकर प्रभु की माता का नाम--- (3)
3- मध्यप्रदेश की चूलगिरि की तलहटी में स्थित प्रसिद्ध जैन तीर्थ--- गजा (3)
6- भ.महावीर के प्रमुख दस शिष्यों में से एक--- पिता (3)
7- वह आहार जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो, कहलाता है--- थ्य (2)
8- छठे तीर्थंकर प्रभु का लांछन/चिन्ह--- (3)
10-अश्वसेन वामाजी के नन्दन श्री--- भगवान(4)
12-मल्या चौस--- पति तिहां,करे कलश अड़ जातिना; मागधादि जल तीर्थ औषधि, धूप वली बहु भातिनां; स्नात्र पूजा का एक छंद (1,2)
14-पर्युषण पर्व के दौरान वाचन किया जाने वाला सूत्रः --- सूत्र (3)
15-ऋषभदत्त की पत्नी का नाम--- (4)
17-रत्नत्रयी का एक रत्नः--- (3)
18-सोलह सतियों में से एक--- (4)
20-जन गण मन अ---यह जय है, भारत भाग्य विधाता (राष्ट्रगान की पंक्ति) (2)
21-गुजरात के जामनगर के निकट स्थित भ.नेमिनाथ का तीर्थ---गर (3)
23-पालीताना के निकट स्थित ऋषभ प्रभु का तीर्थ जहां पांच सौ आचार्यों द्वारा प्रथम बार आगम लिखे गये थे- वल्ल--- (3)

वर्ग पहेली क्रमांक-337 का परिणाम

र	ना	र	■	अ	च	ल	■	म
■	गे	■	श्रा	व	क	■	मं	ग
वि	श्व	वि	■	■	वा	न	ग	र
ज	■	ज	■	सु	■	■	ल	■
य	वी	य	■	व्र	■	क	म	ल
■	रा	■	श	ता	नी	क	■	की
सु	य	शा	■	■	ल	न	पु	र
व्र	त	■	आ	ग	म	■	रु	■
त	■	भ	द्रा	दे	■	अ	षा	ढ़

ऊपर से नीचे:-

2- ---णि म्हारी चिंता चूर, शंखेश्वर दादा म्हारी चिंता चूर (3)
3- फालना के निकट स्थित मनमोहन पार्श्वनाथ का तीर्थ--- (2)
4- मंदसौर के निकट स्थित पार्श्वनाथ के 108 तीर्थों में शामिल तीर्थः--- श्वनाथ (2,1)
5- रतलाम जिले के जावरा के निकट स्थित नेमि प्रभु व पार्श्व प्रभु का प्राचीन तीर्थः इग--- (3)
7- किसी वस्तु या मूर्ति पर से परदा हटाना यानि---ण करना (4)
8- पार्श्व प्रभु पर साठ दिनों तक उपसर्ग करने वाला देव--- (3)
9- भ. शीतलनाथ के जन्म स्थल का नाम भद्दि--- (3)
11-भगवान सुमतिनाथ का लांछन/चिन्ह--- (3)
13-भगवान महावीर की बहन का नाम--- (4)
14-एक प्रकार के सूखे मेवे का नाम--- (3)
16-भ.महावीर का पच्चीसवां भव में नाम--- (3)
17-वसुमति (चंदना) के पिता का नाम--- हन (3)
19-तमिलनाडु में स्थित भ.चंद्रप्रभु का छठी सदी का प्राचीन तीर्थ-विज---लम (1,2)
21-कुक्षी के निकट स्थित भ. आदिनाथ का प्रसिद्ध तीर्थ ताल---र (2)
22-एक सप्ताह में होते है सात--- (2)

ज्ञानगंगोत्री क्रमांक-338

✲ आचार्य प्रवर श्री मृदुरत्नसागरजी म.सा.

नीचे दिये गये दो प्रश्नों का एक ही जवाब आयेगा।

1- एक पापस्थानक और संज्ञा।
2- एक क्षेत्र और एक चक्रवर्ती।
3- एक परिवह और एक स्पर्श।
4- शुभ लेश्या और ध्यान का प्रकार।
5- एक पर्याप्ति और एक संज्ञा।
6- एक पर्याप्ति और एक समिति।
7- एक पक्ष और एक ध्यान।
8- एक सम्राट और एक वृक्ष।
9- अभ्यंतर तप और एक आवश्यक।
10-एक गुणस्थानक और एक समकित।
11-एक भावना और एक तत्व।
12-पौषध का एक प्रकार और एक महाव्रत।

तिनका और लट्ठा

''किसी पर दोष मत लगा कि तुझ पर भी दोष लगाया जाए, क्योंकि तू जिस पैमाने से दूसरे को नापेगा, उसी से तू भी नापा जाएगा। तू अपने भाई की आंख का तिनका देखता है और अपनी आंख का लट्ठा निकाल तभी तू अपने भाई की आंख का तिनका भली-भांति निकाल सकेगा।''

नोट- पोस्टकार्ड पर अपने पते के साथ शहर के पिनकोड नंबर अवश्य डालें।

प्रिय पाठकों! उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर हमें पोस्टकार्ड पर लिखकर हमें दिनांक 25-5-2023 तक भेज दीजिये। सही उत्तरों में से लक्की ड्रा निकालकर प्रथम तीन को क्रमशः51/-, 31/-, 21/- रूपये की राशि से सम्मानित किया जायेगा साथ ही उत्तीर्ण होने वालों के नाम ''आगमोद्धारक' मासिक में प्रकाशित किये जायेंगे। भेंट राशि एम.ओ. द्वारा भेजी जायेगी। - सम्पादक

वर्ग पहेली क्रमांक-337 के परिणाम

विजेताः-

1- कृष्णकुमार जालोरी, विदिशा (म.प्र.) -प्रथम
2- श्रीमती शांता बापना, इन्दौर (म.प्र.) - द्वितीय
3- श्रीमती विद्या संघवी, बदनावर, (म.प्र.) - तृतीय

इनके भी उत्तर सही थे-

श्रीमती प्रभा जैन, देवास, सुधा लोढ़ा, उज्जैन

ज्ञानगंगोत्री क्रमांक-337 के परिणाम

विजेताः-

1- श्रीमती शांता बापना, इन्दौर (म.प्र.) - प्रथम
2- श्रीमती विद्या संघवी, बदनावर, (म.प्र.) - द्वितीय
3- सुधा लोढ़ा, उज्जैन (म.प्र.) - तृतीय

सही उत्तर-

1- निसीही, 2- पुद्गल, 3-श्रमणोपासक, 4- संज्ञी 5- पर्याप्त, 6- उणोदरी तप, 7- जहासुक्खं, 8- नियाणा, 9- मर्हा, 10-परिग्रह, 11- द्रव्य, 12- विहायो गति।

✲ आचार्य श्री जिनमनोज्ञसूरीजी म.सा. का चार्तुमास प्रवेश श्री जैन श्वेतांबर खरतरगच्छ संघ पोस्ट सिणघरी (बाडमेर) सिणघरी-344033 (राज.)।

✲ मुनिश्री कीर्तिरत्नसागरजी म.सा. का चार्तुमास प्रवेश श्री अरिहंत वासुपूज्य स्वामी जैन संघ वर्ल्ड टॉवर सेनापति बापररोड़, लोडर परेल (वेस्ट) मुंबई (महा.) में हुआ।

✲ आचार्य श्री रविशेखर सूरीश्वरजी म.सा. का चार्तुमास प्रवेश श्री सिमंधर स्वामी जैन मंदिर, लोडर परेल-वरली, दीपक टाकीज के पास मुंबई (महा.) में हुआ।

✲ पूज्य श्री कुशलमुनि गणिजी म.सा. का चार्तुमास प्रवेश श्री पार्श्वनाथ जैन मंदिर बालाघाट (म.प्र.) में हुआ।

✲ आचार्यश्री महानंद सूरीजी म.सा. का चार्तुमास प्रवेश श्री शंखेश्वर जैन मंदिर, जूना नागरदास क्रास रोड़ पार्श्व दर्शन बिल्डिंग फर्स्ट माला, इलाहाबाद बैंक के पास, अंधेरी (ईस्ट) मुंबई-400069 (महा.) में हुआ।

सूचना- अब पहेली के लिये ड्रा द्वारा प्रोत्साहन राशि पुरस्कार में दी जायेगी। इसके लिये ड्रा निकालकर क्रमशः तीन पुरस्कार तीन विजेताओं को रुपये 31/-, 21/-, 11/- एम.ओ.भेजे जावेंगे। सही उत्तरवाले नाम हम छापेंगे ही। आप सहयोग बनाये रखिये। धन्यवाद।

।। श्री परमात्माय नमः ।।

शेठ नगीनचंद कपुरचंद झवेरीना प्रयासथी

जीवदया फंड

श्री नगीनचंद कपुरचंद झवेरी

सुभाष चौक, गोपीपुरा, सुरत - 1
मो.: 09825414470 / 9820078772
स्थापना वि. सं. 1962
इ.स. 1906 रजि. नं.- 1744
PAN : AAATS8024L

पैसा भेजने का पत्ता :

प्रफुल अमीचंद झवेरी

26, खटाऊवाडी, गोरेगांवकर लेन,
सेन्ट्रल सिनेमानी पाछळ,
मुंबई - 400 004.
ऑफिस फोन : 2387 8476
मोबाईल : 98200 78772

धर्मप्रेमी सदगृहस्थश्री, सादर प्रणाम !

जीवदया फंड संस्था सुरत के दानवीर शेठ श्री नगीनचंद कपुरचंद झवेरी के प्रयासो के द्वारा स्थापित एक रजीस्टर्ड ट्रस्ट है। यह जीवदया फंड संस्था के द्वारा कतल के लीये जानेवाले ओर बीन उपयोगी जीवो को छुडवाकर के सुरत की पांजरापोल में भेजा जाता है। यह कार्य पीछले ११४ सालो से यह संस्था कर रही है। ओर शेठश्री के उत्तम पुन्यबल की वजह से यह कार्य के अंदर लगातार प्रतिवर्ष प्रगति हो रही है। जैसे की पीछले पांच सालो के दौरान (एप्रील - २०१४ से मार्च - २०१९) १०७९८ जीवो को छुडाया / बचाया गया है।

हमारे आंगन में आनेवाले बेझुबान जीवो को पांजरापोल के अंदर ट्रस्टीओ के द्वारा नीगरानी करके सोंपा जाता है। ओर पशु के संपूर्ण जीवनकाल तक उसको संभालकर रखा जाता है।

अनंत दया के सागर भगवान श्री महावीर प्रभु के शासन के दो स्तंभ है। अहिंसा ओर जीव के उपर मैत्री। सर्वज्ञश्री के यह संदेश को सार्थक करने के लिये दोनो का भी बहुत बडा महत्व है। जैसे की

आपके परिवार के कोई भी सभ्य का जन्मदिन
पशु परिवार के एक सभ्य को जीवनदान देकर मना सकते है।

आपके परिवार मे आये हुए शुभ लग्नोत्सव के दौरान
एक पशु युगल को जीवनदान देकर उनका जीवन उत्सवमय बना सकते है।

कर्मसंयोग के कारन आई हुई बीमारी का दुःख ओर अशाता को टालने के लीये
कोई पशु को अभयदान प्रदान करके महाशाता का सुख प्रदान करे।

अपने स्वजन के मृत्यु के दुःखद समय में एक पशु को
मृत्यु के मुखमें से छुडवाने से आपश्री को सांत्वना भी प्राप्त होती है ओर आपके स्वजन की सदगति प्राप्ती की प्रार्थना भी कर सकते है।

पवित्र पर्व के धर्मोत्सव के समय एक जीवको
जीवनदान देकर पर्व उपासना को दया ओर करुणामय बनाये।

आपश्री हंमेशा के लीये तिथि का भी चयन कर सकते है। यह तिथि के दीन दान में दी गई रकम का जो ब्याज मीलता है उसमें से जीव को छुडवाया जायेगा।

यह संस्था के द्वारा एप्रील २०२० से मार्च २०२१ के एक वर्ष के समय जो की लोकडाउन था,
उस समय में कुल २५९३ जीवो को छुडवाया गया है।

आपश्री चेक या ड्राफ्ट जीवदया फंड के नाम का बनाए। रोकड रकम में भी आप योगदान दे सकते है। (आपश्री का अनमोल योगदान सुरत ओर मुंबई में उपर दिये गये पत्ते पर भीजवा सकते है।)

आपश्री आपका योगदान हमारे बेन्क खाते के अंदर भी जमा करवा सकते है। जीसकी जानकारी नीचे दी गई है। हमारी संस्था का 80-G नंबर AAATS 8024 LF 20210 है।

Bank Name	: AXIS BANK LTD.	Bank Name	: BANK OF INDIA
A/c. Name	: JIVDAYA FUND	A/c. Name	: JIVDAYA FUND
IFSC	: UTIB0002274	IFSC	: BKID000001
A/c. No.	: 921010033621820	A/c. No.	: 00120100001219
Branch	: Charni Rd, Mumbai	Branch	: Mumbai Main Branch

जीवदया की शुभ भावना से कीये हुए कार्य से अक्षय सुख ओर मोक्षमार्ग की प्राप्ति होती है ओर नरकगति के कर्म का ओर अनेक भवो के पापो का क्षय भी जीवदया का कार्य करने से होता है। जीवदया का कार्य तीनो लोकमें श्रेष्ठ ओर सर्वोत्तम कार्य है।

दान अेज सफल जीवन

लि. ट्रस्टीगण

प्रफुल अमीचंद झवेरी
पुष्पसेनभाई पानाचंद झवेरी
विरेन्द्र नेमचंद झवेरी

जतीनभाई फकीरचंद
शरदभाई गुलाबचंद कांटावाला
उषाकांत साकेरचंद झवेरी

नूतन मुनि कैवल्यरत्नसागरजी का प्रथम चातुर्मास मुंबई और प्रथम महामांगलिक नासिक में -युवा जैनाचार्यश्री के साथ मुंबई आगमन

प्रवेश ठाकुर द्वारा संघ में 1 जुलाई को हुआ।

मालवा और देशभर के गुरुभक्तों ने ठाकुरद्वार में प्रवेश पर उपस्थिति दी।

✻ नवरत्न गुरुकुल में नूतन मुनि राजर्षिरत्नसागरजी का मंगल आगमन। ✻ मुनिश्री उदयरत्नसागरजी म.सा. के साथ नूतन मुनि राजर्षिरत्नसागरजी का चातुर्मास मलाड़ में। ✻ इन्दौर में चल प्रतिष्ठा 7 -8 जून को हुई। ✻ अनेक शासन प्रभावक कार्यो के साथ जुन में दीक्षा प्रतिष्ठा के भव्य आयोजन हुवे ✻ मुंबई चातुर्मास के बाद दिसंबर में मेरु महोत्सव में पूना पहुंचने की संभावना इसके बाद उज्जैन अरने की संभावना। ✻ उज्जैन-इन्दौर में नवनिर्मित होनेवाले जिन मंदिर में प्रभु की चल प्रतिष्ठा हुई - प्रतिष्ठा 2024 में हो सकती है।✻ नासिक में 19 जून को स्थानक और मूर्तिपूजक संघ ने महामांगलिक करवाई। ✻ युवा शिष्य मंडली के द्वारा मालवा और अन्य श्रीसंघों में शासन प्रभावना की गई।

मुंबई- मालवा में उज्जैन-इन्दौर श्रीसंघ में पर्दापण के साथ भव्य सामैय्या-व्याख्यान चल प्रतिष्ठा और परमात्मा प्रभुवीर के शासन की भव्य प्रभावना हो इस प्रकार शासन को आगे बढ़ाने के लिये मोहित शाह की भव्य प्रवज्या का आयोजन आपश्री की निश्रा में इन्दौर में हुआ महा मांगलिक के द्वारा तन-मन की शक्ति प्रदान करने वाले श्लोक मंत्रों से धर्मिष्ठों को आत्मीय शांति प्रदान करने स्व पर आत्म कल्याण के मार्ग की ओर ले जाने के शुद्ध मंगलकारी भाव के साथ ही पवर्तमान शासनाधिपति श्री महावीर प्रभु के शासन में चार चांद लगाकर गुरु श्री नवरत्न का नाम जैन जगत में रोशन करने वाले एवं जिन शासन की भव्य प्रभावना कर रहे युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्न सागर सूरीश्वर जी म.सा. स्वयं और अपने शिष्य परिवार के साथ श्रमण जीवन का जोरदार निर्वाहन कर रहे हैं। उज्जैन के सूरजनगर में नवनिर्मित जिनमंदिर में परमात्मा का प्रवेश और चल प्रतिष्ठा का आयोजन अच्छा रहा। उज्जैन में स्थिरता 1 से 4 जून तक रही। उज्जैन के विभिन्न श्रीसंघों में पर्दापण भी हुआ। समय को साधते हुए आपने इन्दौर की ओर विहार किया है। जहां आपकी निश्रा में 7-8 जून को बॉस्केटबाल स्टेडियम में मोहित कुमार का भव्य प्रवज्या महोत्सव आयोजित किया गया। 7 जून को वल्लभनगर में दीक्षार्थी का भव्य वर्षीदान वरघोड़ा आयोजित किया गया। बॉस्केटबाल स्टेडियम पहुंचने पर साधु-साध्वी आदि ठाणा की निश्रा में भव्य धर्मसभा का आयोजन हुआ। शाम को मोहित का विदाई समारोह हुआ। इस आयोजन में मोहित के संयम मार्ग पर आगे बढ़ने की परिवार के साथ उपस्थित सभी धर्मिष्ठों ने मंगल भाव से अंतिम बिदाई दी। 8 जून को प्रातः शुभ लग्नांश वेला में मुमुक्षु की भव्य भगवती प्रवज्या का आयोजन बड़ी संख्या में धर्मिष्ठों उपस्थित के बीच किया गया। संसार छोड़ वैराग्य जीवन जीने की इच्छा को युवा जैनाचार्यश्री ने मुमुक्षु को रजोहरण प्रदानकर पूर्ण किया। **नूतन मुनिश्री कैवल्यरत्नसागर**

बनकर आपका विहार मुंबई के लिये गुरु सानिध्य में प्रथम चार्तुमास के लिये हुआ। नूतन जिनमंदिर की मंत्रेश्वर चिंतामणी पार्श्वनाथ मंदिर अशोकनगर में परमात्मा एवं देवी-देवताओं की चल प्रतिष्ठा भी आपश्री की निश्रा में हुई। इसके पूर्व 19 जून को नासिक में पूज्यश्री की महामांगलिक का आयोजन स्थानक और मूर्तिपूजक संघ के द्वारा किया गया।

युवा जैनाचार्यश्री अपने गुरुकुल के युवा मुनि भगवंत प.पू. मुनि श्रीकीर्तिरत्न सागरजी म. सा. ,प.पू. मुनि श्रीतीर्थ रत्न सागर जी म. सा. प.पू. मुनि श्रीउदय रत्नसागरजी म. सा. ,प.पू.मुनि श्री उत्तमरत्नसागरजी म. सा. ,प.पू.मुनि श्री उज्ज्वलरत्न सागर जी म. सा.,प.पू. मुनि श्रीप.पू. मुनि श्रीरम्यरत्नसागरजी म.सा.,प.पू. मुनिश्रीलब्धि रत्नसागरजी म. सा. मुनिश्री शौर्यरत्न सागरजी म.सा. मुनिश्री ऋषभरत्नसागरजी म.सा .मुनि श्रीसिध्दरत्न सागरजी म.सा.आदि ठाणा युवा शिष्य मंडली के द्वारा मालवा और अन्य श्रीसंघों में शासन प्रभावना की गई। यहां से विहार मुंबई की ओर हुआ । विहार यात्रा में अनेक श्री संघों,नगरों में विविध शासन प्रभावक कार्य भी निरतंर हो रहे है । अनेक श्रीसंधों की विभिन्न प्रांतों से आगामी चार्तुमास की विनंति अभी से हो रही है। पर चार्तुमास का निर्णय मुंबई के पक्ष में रहा **श्री ठाकुरद्वारा श्री संघ में आगामी चार्तमास होगा ।**1 जुलाई को मालवा और देशभर से आये गुरुभक्तों की उपस्थिति में हुआ । चार्तुमास में महामांगलिक के साथ अनेक कार्यक्रमों का आयोजन होगा । दर्शन ज्ञान चारित्र की आराधना के मंगल प्रसंग होंगे।

लुधियाना दोराहा में श्री मणिलक्ष्मीधाम में वल्लभ गच्छाधिपति आचार्यश्री का चार्तुमास

लुधियाना- यहां के समीप दोराहा में त्रिशिखरयुक्त भव्य जिनप्रसाद का निर्माण श्री मणिलक्ष्मीधामके नाम से हुआ है। वल्लभ समुदाय के गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्रीमद् विजय नित्यानंद सूरीजी म.सा. आदि विशाल संख्या में साधु-साध्वी का चार्तुमास दोहरा में हो रहा है यहां परमात्मा विराजमान करने के लिये भव्य अंजन प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन 30 मई से 6 जून के मध्य सम्पन्न हुआ था। वड़ोदरा के समीप श्री मणिलक्ष्मी तीर्थ का निर्माण करने वाले परिवार ने भी यहां बड़ा लाभ लेकर तीर्थ निर्माण में सहयोगी बने है।

विराट तपस्वी विरागमुनिश्री का चार्तुमास बालाघाट में रहा है

बालाघाट-जैन श्वेतांबर खरतर गच्छ संघ के 1000 वर्ष के इतिहास में पहली बार किसी मुनि ने 163 से अधिक उपवास की उग्र तपस्या की है । गणाधीश पंन्यास प्रवर विनय कुशल मुनीजी के सुशिष्य युवा परम पूज्य विराग मुनिजी महाराज ने इस उग्र तपस्या में साधु जीवन के नित्य कर्म कर रहे हैं। आपका पारणा महोत्सव 16 मई को होना था किन्तु कोई अभिग्रह के कारण पारणा नही किया समाचार लिखाने तक यही स्थिति थी । देश में कई स्थानों पर परम पूज्य मुनिश्री की उग्र तपस्या अनुमोदनार्थ धार्मिक आयोजन हुए। मात्र 10 वर्ष पहले अपने पूरे परिवार पत्नी, पुत्र व पुत्री के साथ दीक्षित हुए विराग मुनि ने अल्प समय में ही अपनी तप साधना, त्याग व गुरु के प्रति निष्ठा व समर्पण से जिन शासन की शोभा बढ़ाने वाला कार्य किया है। निराहार रहकर केवल जल पीकर यह तपस्या चल रही है।

साध्वी श्री सौम्यवंदना श्रीजी का चार्तुमासिक प्रवेश शासन प्रभावनापूर्वक हुआ

उज्जैन- श्री ऋषभदेव छगनीरामजी पेढ़ी पर सागर समुदाय वर्तीय साध्वीवर्या श्री सौम्य-वंदना श्रीजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमासिक प्रवेश 23 जून को भव्य सामैय्या के साथ हुआ । प्रसंग पर पूज्य आचार्य भगवंत श्रीमतिचंद्र सागरसूरीजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा भी प्राप्त हुई। पूज्य साध्वीश्री के प्रवेश सामैय्या में बड़ी संख्या में गुरु भगवंतों का आगमन हुआ था, आसपास के अनेक गांव, नगर से धर्मिष्ट आये थे। रतलाम, इन्दौर, देपालपुर, रिंगनोद आदि अनेक श्री संघों की उपस्थिति रही। उपाश्रय में भव्य धर्मसभा का आयोजन हुआ। रिंगनोद संघ ने प्रभावना बांटी। श्री संघ की ओर से साधर्मिक भक्ति का आयोजन था।

विशाल सागर समुदाय के गच्छाधिपतिश्री का चार्तुमास प्रवेश शताधिक साधु-साध्वी और 5 आचार्यो ं के साथ जनमोदिनी की उपस्थिति में हुआ

✻ पूना में धर्मचक्र महातप का भव्य शंखनाद 80 दिन का तप का शुभारंभ 5 जुलाई को अट्ठम तप के साथ हुआ। ✻ 37 उपवास और 37 बियासणा के साथ समापन भी अट्ठम तप के साथ होगा। ✻ तप की पूर्णाहुति 24 सितंबर को होगी। ✻ चार्तुमास आरंभ से महापर्व तक पौषध का भव्य आयोजन।

मेरु महोत्सव आयोजन की तैयारीयां चल रही है

✻ मेरु महोत्सव का आयोजन 7 से 18 दिसंबर तक होगा। ✻ महोत्सव में दीक्षा, 100 वीं ओली पारणा भी होगा। ✻ पूना में 200 साधु साध्वी भगवंत के साथ भव्य चार्तुमास का आयोजन। ✻ संघ हितचिंतक जैनाचार्य श्री हर्षसागरसूरीजी के प्रयास की अनुमोदना।

पूना-परम पावन जिनशासन की शान सागर समुदाय के जैन जगत में सर्वोच्च रुप से वरिष्ठतम संघ स्थविर सुविशाल सागर समुदाय के गच्छाधि पति गीतार्थ मूर्धनय जिनागाम सेवी आचार्य भगवंत श्री पूज्यपाद श्री दौलत सागरसूरीजी महाराजा के 85 वर्ष संयम जीवन के पूर्ण होने पर एक वर्ष तक संयम मेरु महोत्सव में 8 हजार 500 जिनशासन प्रभावक कार्यो से वर्ल्ड रिकार्ड बनेगा ऐसा युग प्रभावक मेरु महोत्सव मनाने की भव्य आयोजन की तैयारी में लगे संघहित चिंतक पूज्य आचार्यदेव श्री हर्षसागरसूरीजी म.सा. के स्वास्थ्य में अच्छा सुधार होने के बाद आपका आगमन पूना में हो गया है। यह देशभर से विहार कर शताधिक साधु-साध्वी भगवंत पूना पहुंच गये है। सागर समुदाय के साधु भगवंतों के चार्तुमास पूना के विभिन्न संघों में हो रहे है। चार्तुमास के पूर्व पूज्यपादश्री की निश्रा में सभी साधु-साध्वी भगवंतों का मंगल प्रवेश पूना के विभिन्न श्रीसंघों में शासन प्रभावना में अभिवृद्धि हो इस प्रकार हुआ। शताधिक साधु-साध्वी और हजारों की जनमोदिनी की उपस्थिति में धर्ममय वातावरण दिखाई दे रहा था। पूज्यश्री का भव्य चार्तुमासिक प्रवेश पूना के कोढ़वा श्रीसंघ में हुआ। चार्तुमास आरंभ होते हे कोढ़वा में पोषध धर्म का शुभारंभ होगा इसके साथ ही 80 दिवसीय धर्मचक्र का भी शुभारंभ 5 जुलाई से होकर 24 सितंबर को पूर्णाहुति होगी इसके साथ ही इस बार अधिक मास होने से चार्तुमास 5 माह का होने से भी धर्म प्रभावना का जोर रहेगा। विविध तप जप के साथ अनेक आयोजन होने की श्रृंखला बनेगी। पूज्य आचार्यश्री नंदीवर्धनसागरसूरीजी वर्तमान में स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर रहे है।

संघ स्थविर सुविशाल सागर समुदाय के गच्छाधिपति आदि ठाणा पूना में है

✻ संघस्थविर संघनायक, सुविशाल गच्छाधिपति सर्वाधिक वय-संयम-श्रुत-अनुभवपर्यायी युगपुरुष प.पू.आ.भ.श्री दौलतसागर सूरीश्वरजी महाराजा। ✻ जिनशासन के सर्वोच्च संयम पर्यायी महापुरुषों की श्रृंखला में पंचम क्रम पर विराजमान पू.आ.भ.श्री नंदिवर्धन सागर सूरीश्वरजी म.सा.। ✻ वचनसिद्ध, सौजन्यमूर्ति, प्रकांड विद्वान पू.आ.भ.श्री नरदेवसागर सूरीश्वरजी म.सा.।✻प्रचंड पुण्य निधान, सकल संघ हितचिंतक पू. आ.भ.श्री हर्षसागर सूरीश्वरजी म.सा.। ✻ 325 से अधिक पुस्तकों के विख्यात लेखक पू.आ.भ.श्री जितरत्न सागर सूरीश्वरजी म.सा.। ✻ 100+100+66 वीं ओली के महा तपस्वी पू.आ.भ.श्री चंद्ररत्न सागर सूरीश्वरजी म.सा.।

✻ प्रभावक एवं प्रबुद्ध प्रवचनकार, संस्कार यज्ञ प्रणेता पू.आ.भ.श्री मुक्ति सागर सूरीश्वरजी म.सा. ।✻ समर्पण गुणनिधि, सर्वकार्य कुशल पू.नूतन आ.भ.श्री अचलमुक्ति सागरसूरीजी म.सा. । ✻ शानदार प्रवचनकार, गुरुचरण सेवी पू.पंन्यास प्रवर श्री विरागसागरजी म.सा.। ✻ वर्धमान तप की 99 वीं ओली के आराधक पू.मुनिवर श्री पद्मकीर्ति सागरजी म.सा. । ✻ अनेक ग्रंथों के तात्विक अनुवादक पू.मुनिवर श्री जय चंद्रसागरजी महाराज। ✻ युवा प्रवचन कार पू. मुनिवर श्री अर्हरत्नसागरजी महाराज आदि विशाल मुनिवृंद।

मेरु महोत्सव- आगामी चार्तुमास उपरांत अति भव्य रुप से ऐसा परम शासन प्रभावक पूज्यश्री का 85 वां विराट संयमोत्सव मनाया जायेगा। यह आयोजन आगामी चार्तुमास के उपरांत 7-18 दिसबंर तक मनाया जायेगा कार्यक्रम को अंतिम रुप दिया जा रहा है आपश्री की निश्रा में पूना में सागर समुदाय के लगभग 200 से अधिक गुरु भगवंतों, साधु-साध्वी जी का भव्य चार्तुमास की तैयारियां चल रही है। चार्तुमास से जुड़ने के लिए भारत के चारों कोने से साधु-साध्वी भगवंतों 100 से 1000 किलोमीटर का विहार कर पूना पहुंच रहे है। जैनत्व के इतिहास में स्वर्णाक्षरोंसेअंकित हो ऐसा ऐतिहासिक और भव्य चार्तुमास के साथ पूज्यपाद श्री का 85 वां संयमोत्सव मनाने के भव्य संघ हित चिंतक पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री हर्षसागर सूरीजी महाराजा के मन में आया और अब वह क्रियान्वित भी होने जा रहा है। पूना के श्री संघ इस संयमोत्सव के लिये जी-जान से जुड़ रहे है और तन-मन-धन से पूर्ण समर्पित जिन शासन संरक्षण हित की भावना से जाग्रत होकर तैयारी कर रहे हैं। मुनिश्री मोक्षरत्नसागरजी एवं मुनिश्री पद्मकीर्तिसागरजी का 100 वीं ओली का पारणा भी मेरु महोत्सव में होगा।

बंधु त्रिपुटी का चार्तुमास पालीताना नवरत्नधाम में 300 आराधकों के साथ

पालीताना- जैनाचार्य अपूर्व मंगल रत्नसागरसूरीजी महाराजा के गुरुकुल के बंधु त्रिपुटी मुनि प्रवर श्री आगम प्रश्म- व्रजरत्नसागरजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास नवरत्नधाम तलेटी रोड़, पालीताना (भावनगर) - 264270 (गुज.) में हो रहा है सुनेल में प्रतिष्ठा महोत्सव के बाद रटलाई पधारे यहां श्री चन्द्रप्रभस्वामी जिनालय का भूमि पू जन और शिलान्यास का कार्यक्रम अंतर्राष्ट्रीय जैन विधिकारक भाई मनोजकुमार बाबूमलजी हरण के मार्गदर्शन और प्रेरणा से सम्पन्न हुआ। चातुमार्सिक आराधना में 300 आराधक है। प्रवेश 1 जुलाई को हुआ।

लंदन में प्रतिष्ठा महोत्सव

मुंबई- पूज्य आचार्य भगवंत श्री नयप्रभसागरसूरीजी म.सा. के वरद हस्ते अंजनशलाका की गई। श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ प्रभु की प्रतिष्ठा का आयोजन लंदन के जैन सेन्टर में स्थित जिनालय में किया जायेगा। दिनांक 23 से 28 अगस्त तक प्रतिष्ठा का आयोजन होगा। प्रतिष्ठा 27 अगस्त को होगी। लंदन में निर्मित जैन सेन्टर में भोजनशाला, उपाश्रय, पठन-पाठन आदि की सुन्दर व्यवस्था की गई है, यह प्रति वर्ष महापर्व पर्युषण, ओली आराधना जैसे सभी आयोजन आयोजित होंगे।

पावापुरी तीर्थ में युवा शिविर सम्पन्न

पावापुरी- श्री पावापुरी तीर्थ जीव मैत्रीधाम, पावापुरी (सिरोही) में श्री के.पी. संघवी परिवार, मालगांव-सूरत-मुंबई द्वारा युवा संस्कार शिविर का आयोजन दिनांक 5 जून से 11 जून तक किया गया। प.पू.451 दीक्षा दानेश्वरी आचार्यश्री गुणरत्न सूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य आचार्य श्री रविरत्नसूरीश्वरजी म.सा., पू.आ.श्री जयेशरत्नसूरीजी, पंन्यास श्री वैराग्य रत्नविजयजी श्रुतरत्न आदि की पावन निश्रा में देश के 25 विभिन्न क्षेत्रों से 155 विद्यार्थियों ने जैनधर्म का अध्ययन कर जीव विज्ञान लाईफ कोर्स कर्मवाद, जैनजीवन शैली, ध्यान, योगा आदि का गुरु भगवंतों द्वारा ज्ञान प्राप्त किया। सामायिक पूजा भक्ति एवं बिआसना, एकासणा, आयंबिल उपवास व भाषण स्पर्द्धा हुई, लेखित परीक्षा में जैनम् डी जैन, सिरोड़ी ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। विद्यार्थियों ने रात्री भोजन, जमीनकंद, व्यसन, माता-पिता नमसकार, नित्य पूजा आदि के दृढ़ संकल्प किये। पूज्यश्री यहां से विहार करके 27 जून 2023 को रानीवाड़ा चार्तुमास हेतु प्रवेश किया।

पालीताना में चार्तुमास आराधना

पालीताना- खातरगच्छ जैनाचार्य श्री पियूषसागरसूरीजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में सामुहिक चार्तुमास की आराधना का आयोजन होने जा रहा है। चार्तुमास प्रवेश 2 जुलाई से आराधना का शुभारंभ तथा पूर्णाहुति 23 अगस्त को होगी।

अशोकसागरसूरीजी की निश्रा में 300 आराधक चार्तुमास की आराधना करेंगे

✻श्री नागेश्वर महातीर्थ में चार्तुमास प्रवेश 29 जून को हुआ।
✻ मालवा के श्रीसंघों में विचरण मंदसौर में आयोजन हुए।
✻ साध्वीश्री दमिताश्रीजी का चार्तुमास भी यहीं हो रहा है।

नागेश्वर- मांडवगढ़ तीर्थोद्धारक सिद्धचक्र आराधक समाज मार्गदर्शक पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री अशोकसागरसूरीजी महाराजा आचार्य देवेश श्री सौम्यचंदसागरसूरीजी म.सा. आचार्य श्री विवेकचंद्रसागरसूरीजी म.सा. प्रर्वतक श्रीधैर्यचंद्रसागरजी म.सा.आदि ठाणा के साथ पूज्य साध्वीवर्या श्री दमिता श्रीजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास श्री नागेश्वर तीर्थ में हो रहा है प्रवेश 29 जुन को हुआ।300 की संख्या में आराधक देश के विभिन्न प्रांतों से आराधना के लिये आये है इसके पूर्व आपश्री की निश्रा में मन्दसौर में परमात्मा श्री पार्श्वनाथ प्रभु तथा आचार्यश्री आर्यदीक्षितसूरीजी की प्रतिमा प्रवेश 11 जून को श्री आर्य दीक्षित सूरी तीर्थधाम मंदसौर में हुआ। यहां आपश्री श्री नागेश्वर तीर्थ पधारें आपकी अमृत निश्रा में चातुर्मास आराधना का जोरदार आयोजन होगा।

मुनिश्री विशुद्धरत्नसागरजी म.सा. नेपाल में चार्तुमास

काठमांडु- पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण आचार्यदेवेश श्री नवरत्न सागर सूरीजी महाराजा के गुरुकुल के रत्न मुनिश्री विशुद्धरत्न सागरजी एवं मुनिश्री समकितरत्न सागर जी म.सा. हिमालय की यात्रा पर है, नाम के अनुरुप शुद्ध सात्विक चारित्र का पालन करने वाले मुनिश्री एकांत में रहते हुए साधना करते रहे है, मोबाईल आदि से सम्पर्क से दूर रहने वाले मुनिश्री की हिमालय के दुर्गम पर्वतों पर आराधना की है। मुनिश्री विशुद्ध रत्नसागरजी म.सा.एवं मुनिश्री समकित रत्नसागरजी म.सा. का चार्तुमास नेपाल काठमांडु में हो रहा है।

जैनाचार्यश्री वीररत्नसूरीजी का इन्दौर तथा निपुणरत्नसूरीजी का उदयपुर में चार्तुमास

इन्दौर- पूज्य जैनाचार्य श्री वीररत्नसूरीजी म.सा., आचार्य श्री पद्मभूषण सूरीजी म.सा., जैनाचार्य श्री निपुणरत्न सूरीजी म.सा.आदि साधु-साध्वीवृंद का चार्तुमास 114-तिलक नगर एक्सटेंशन इन्दौर में तथा जैनाचार्य श्री निपुण रत्नसूरीजी आदि ठाणा का चार्तुमास श्री जैन श्वेतांबर मंदिर हिरणमगरी सेक्टर-3 उदयपुर (राज.) में होने जा रहा है।

साध्वी पद्मलताश्रीजी का चार्तुमास सांवेर में

उज्जैन- सागर समुदाय की वरिष्ठसाध्वीवर्या श्री पद्मलता श्रीजी म.सा. आदि ठाणा-5 का चार्तुमास सांवेर जैन श्री संघ में निश्चित हुआ है।

श्री ठाकुर विलेज में जैनाचार्यश्री मृदुरत्नसागर सूरीजी का चार्तुमास प्रवेश 26 जून को हुआ

✻बड़ौदा में वर्षीतप पारणा करवाया ✻ चार्तुमास प्रवेश कांदिवली मुंबई में 26 जुन को हुआ।

मुंबई -पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण आचार्य भगवंत श्री नवरत्न सागरसूरीजी महाराजा के सुशिष्य आचार्य देवेश वागड़ नरेश श्री मृदुरत्न सागरसूरीजी म. सा., उपाध्याय प्रवर श्री वैराग्यरत्न सागर जी म.सा. पू. मुनिश्री मोक्षरत्न सागर जी म.सा. पू. मुनिश्री पदमरत्न सागर जी म.सा. आदि ठाणा -5 का आदि ठाणा के साथ धर्मसूरी समुदाय के साध्वीश्री रत्नेश कला श्रीजी आदि ठाणा का प्रवेश श्री ठाकुर विलेज श्री वासुपूज्य स्वामी जिनालय कांदिवली में 26 जून को हुआ। आपश्री का महामांगलिक 19 जून को बोरीवली क्षेत्र में हुई थी। विहार मुंबई की ओर चल रहा है।वर्धमान तप की 99 वीं ओली के आराधक तपस्वी मुनिश्री मोक्षरत्न सागरजी म.सा. को वर्धमान तप की 99 वीं ओली पूर्ण हो गई है

प.पू.आ.श्री जितरत्नसागरसूरीजी म.सा. का चार्तुमास पूना-वर्धमान नगर में

✻ आ.श्री चन्द्रसागरसूरीजी अनुमोदनीय वैयावच्च : चार्तुमास गच्छाधिपति के साथ।

नवसारी- पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री जितरत्नसागर सूरीजी महाराज मुनिश्रीचैत्यरत्नसागर जी मुनिश्री ज्ञानेशरत्नसागरजी मुनिश्री गोयमसागरजी म.सा.आदि ठाणा के साथ आचार्यश्री चन्द्ररत्न सागर सूरीजी म.सा. भी पूना ही में विराजमान है। पूज्यपाद आचार्य श्री हर्षसागरसूरीजी का स्वास्थ्य नरम गरम बना हुआ है, दोनों गुरु भगवंतों की सेवा का लाभ आचार्य श्री चन्द्ररत्नसागर सूरीजी म.सा. प्राप्त कर रहे है। पूज्य पंन्यास प्रवर श्री विरागसागरजी म.सा. का चार्तुमास भी कोड़वा में होगा।मुनिश्री ज्ञानेशरत्नसागरजी मुनिश्री गोयम सागर जी म.सा.का दीक्षा दिवस विगत दिवस मनाया गया विभिन्न संघों में विचरण करते हुए पूज्यपाद गच्छाधिपतिश्री के दर्शन वंदन तथा चार्तुमास के लिये कात्रज तीर्थ पधारे है।

सागर समुदाय के भावी आचार्यश्री का चार्तुमास पूज्यपाद गच्छाधिपति के साथ कोढ़वा में होगा

संघ स्थिवरश्री 14 दिसंबर को को आचार्य पद कात्रज में प्रदान करेगें

पूना- परपरम पावन जिन शासन की शान सागर समुदाय के जैन जगत में सर्वोच्च रुप से वरिष्ठतम संघ स्थाविर सुविशाल सागर समुदाय के गच्छाधिपति गीतार्थ मूर्घनय जिनागाम सेवी आचार्य भगवंत श्री पूज्यपाद श्री दौलतसागरसूरीजी महाराजा पूज्य नंदिवर्धनसागर सूरीश्वर जी म.सा. सकल हित चिंतक पू. आ.श्री हर्षसागर सूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा के शुभ सानिध्य शत्रुंजय सेवक क्रांतिकारी पूज्य पंन्यास प्रवर श्री विराग सागरजी म.सा. एवं मुनि श्री विरलसागर जी म.सा. आदि ठाणा-2 का पूज्य पंन्यास प्रवर श्री विरागसागरजी म.सा. का चार्तुमास भी कोड़वा में होगा। साध्वीवर्या श्री सिद्धिपूर्णा श्रीजी आदि ठाणा के चार्तुमास संभवतः श्रीआदि नाथ सोसायटी में ही होगा। आपश्री जून माह में मुंबई से पूना पधारें है।पूज्यपाद आचार्य श्री हर्षसागर सूरीजी का स्वास्थ्य नरम गरम बना हुआ है, गुरु भगवंतों की सेवा का लाभ प्राप्त कर रहे है। पूज्य पंन्यासजी को दिनांक 14 दिसंबर 2023 मगसर सूद-2 के दिन कात्रज में ही 36 गुण भण्डारी आचार्य पद पर प्रतिष्ठित किया जायेगा। पूज्य पंन्यासश्रीजी आचार्य भगवंत श्री हर्षसागरजी म.सा. के सुशिष्य है।

शताब्दी महोत्सव सम्पन्न

नोवी- (राज.)- श्री चंद्रप्रभु स्वामी जैन मंदिर का 100 शताब्दी महोत्सव प.पू. 451 दीक्षा दानेश्वरी आचार्यदेव श्री गुणरत्नसूरीजी म.सा. के शिष्यप.पू. आचार्यदेव श्रीरविरत्न सूरी जी म.सा., पंन्यास श्री वैराग्यरत्न वि. म.सा., मुनिश्री श्रुतरत्न वि. म.सा.आदि साधु-साध्वीजी की पावन निश्रा में दिनांक 25 से 31मई तक भव्य जिनेन्द्र महोत्सव हुआ। प्रतिदिन पूजन श्रीसिद्ध चक्र महापूजन, श्री शांतिस्नात्र पूजन, प्रतिदिन गुरु भगवंतों के प्रवचन, संध्या भक्ति, उषा भक्ति भक्तामर का पाठ, प्रभातीये हुए। सामुहिक प्रथमबार 215 आयंबिल तप एवं 2100 रुपये की प्रभावना हुई। नित्य आंगी, रोशनी, 108 दीपक की श्री कुमारपालराजा की आरती की गई। दिनांक 30 मई को 101 वीं ध्वजारोहण सेठ श्री बाबूलाल जी रायचंदजी नागौत्रा सौलंकी द्वारा चढ़ाई गई। शताब्दी महोत्सव में छत्तीस मिठाई का वितरण किया गया। पूज्यश्रीने यहां से विहार कर दिनांक 27 जून को रानीवाड़ा में चार्तुमास प्रवेश किया।

बेटमा में चार्तुमास

उज्जैन- बेटमा श्रीसंघ ने उज्जैन आकर सागर समुदायवर्तीय साध्वी श्री स्वणज्योति श्रीजी म.सा.आदि ठाणा के बेटमा चार्तुमास की जोरदार विनंती की। सागर संघ गच्छाधिपतिश्री अनुज्ञा के अनुसार बेटमा श्री संघ में साध्वीश्री आदि ठाणा का चार्तुमास बेटमा में हो रहा है।

✻ आचार्य श्री चिदानंद सूरीश्वरजी म.सा. का चार्तुमास प्रवेश श्री श्वेतांबर, वीसा ओसवाल जैन संघ पोस्ट- बिजोवा स्टेशन रानी जिला पाली बिजोवा (पाली) बिजोवा (राज.) में हुआ।

चार्तुमास.... चार्तुमास....

✲ श्रीमद् विजय पूर्णचंद्र सूरीश्वर जी महाराज, प.पू.पंन्यास श्री पूर्णरक्षित विजयजी म.सा. आदि श्रमण-श्रमणी भगवंतों का चार्तुमास प्रवेश संवत् 2079 अषाढ़ सुद-3 दिनांक 21-6-2023, बुधवार को चार्तुमास शुभ स्थल आदिश्वर जैन देरासर जैन श्वे. मू.पू. तपागच्छ संघ 263 मंडपेश्वर रोड़, बोरीवली-वेस्ट मुंबई-400092 (महा.) में होगा।

✲ साध्वीजी श्री प्रीतिदर्शना श्रीजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास प्रवेश बड़नगर जिला उज्जैन (म.प्र.) में होगा।

✲ साध्वीजी श्री डॉ. अमृतरसा श्रीजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास प्रवेश खाचरौद जिला उज्जैन (म.प्र.) में होगा।

✲ साध्वीजी श्री विद्ववतगुणा श्रीजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास प्रवेश थराद (गुज.) में होगा।

✲ साध्वीजी श्री विज्ञानलता श्रीजी म.सा. का चार्तुमास प्रवेश इन्दौर (म.प्र.) में होगा।

✲ प.पू. मुनिराज श्री वीररत्न विजयजी, श्रीसंयमरत्नविजयजी, श्रीभवनरत्न विजयजी म.सा. का चार्तुमास प्रवेश राणापुर में होगा।

✲ प.पू. साध्वीजी श्री प्रिय दर्शना श्रीजी म.सा. का चार्तुमास प्रवेश मंडाल (राज.) में होगा।

✲ प.पू.साध्वीजी श्री अचिल-द्रष्टा श्रीजी म.सा. का चार्तुमास प्रवेश भायंदर में होगा।

✲ मुनिराज श्री सिद्धरत्न विजय जी म.सा. का चार्तुमास प्रवेश नेल्लोर (आं.प्र.) में होगा।

✲ मुनिराज वैभवरत्न विजयजी म.सा. का चार्तुमास प्रवेश चैन्नई (तमिलनाडु) में होगा।

✲ पूज्य सम्राट राष्ट्रसंत श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरिश्वरजी महाराजा के पट्टधर वर्तमान गच्छाधिपति श्रीमद् विजय नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा का 2023 चार्तुमास प्रवेश नेनावा नगर जिला बनासकांठा (गुज.) में होगा। ज्ञात रहे पूर्व में पुण्य सम्राटश्री के तीन अधिमास वाले चार्तुमास नेनावा नगर में हुए।

खतरगच्छ चार्तुमास....

✲ प.पू. उपाध्याय प्रवर अध्यात्म योगी श्री महेन्द्रसागरजी म.सा. प.पू. उपाध्याय प्रवर युवामनीषी श्री मनीष सागरजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास -विचक्षण जैन विद्यापीठ, रायपुर (छ.ग.) में होगा।

✲ प.पू. उपाध्याय प्रवर युवा मनीषी श्री मनीषसागरजी म.सा. के शिष्य रत्न प.पू.श्री विवेकसागरजी म. सा. आदि ठाणा-3 का चार्तुमास नागपुर (महा.) में होगा।

✲ प.पू. उपाध्याय प्रवर युवा मनीषी श्री मनीषसागरजी म.सा. के शिष्यरत्न प.पू.श्री ऋषभसागरजी म.सा. आदि ठाणा-2 का चार्तुमास दल्ली-राजहरा (छत्तीसगढ़) में होगा।

✲ प.पू.उपाध्याय प्रवर युवा मनीषी श्री मनीषसागरजी म.सा. के शिष्यरत्न प.पू. श्री विशुद्धसागरजी म. सा. आदि ठाणा-3 का चार्तुमास गांधीधाम (गुज.) में होगा।

चार्तुमास- पूज्य पंन्यास प्रवर श्री लब्धिवल्लभविजयजी म. सा. का वर्ष 2023 का चार्तुमास ईटला जैन संघ मुंबई में होगा।

जैनाचार्यश्री का चार्तुमास बैंगलोर में

मुंबई- श्रमणी गणनायक पूज्य आचार्य श्री अभयशेखर सूरीजी म.सा. आदि ठाणा का आगामी चार्तुमास बैंगलोर के श्री आदिनाथ जैन संघ, चिकपेठ एवं श्री संभवनाथ मंदिर, वी.वी.पुरम् में होगा।

नयापुरा जैन श्री संघ उज्जैन में चार्तुमास

उज्जैन- श्री चन्द्रप्रभ प्रभु जैन श्वेतांबर श्री संघ, नयापुरा उज्जैन में पूज्य आचार्य श्री मतिचंद्रसागर सूरीजी म. सा., मुनिश्री श्रुतचंद्रसागरजी म.सा. आदि साधु-साध्वी का चार्तुमास होगा। प्रवेश 28 जून को हुआ

सुवासरा जैन श्री संघ में चार्तुमास

सुवासरा- श्री जैन श्वेतांबर श्री संघ, सुवासरा में पूज्य साध्वीवर्या श्री सिध्दांत ज्योती म.सा., आदि ठाणा का चार्तुमास होगा। प्रवेश 29 जून को होगा

चार्तुमास- आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेन सूरीजी म. सा.आदि ठाणा का चार्तुमास आषाढ़ सुदी-10, **दिनांक** 28-6-2023 **को श्री मुनिसुव्रत स्वामी जैन संघ, मुंबई, पूना रोड़, ओंं निगड़ी, पूना-**411044 **(महा.) में हुआ।**

साध्वीश्री हेमेन्द्रश्रीजी का चार्तुमास जोधपुर में

जोधपुर- सागर समुदाय के वरिष्ठ साध्वी श्री हेमेन्द्रश्रीजी म.सा., साध्वी श्री चारुदर्शना श्रीजी आदि ठाणा का चार्तुमास जोधपुर मुथा के मंदिर में होगा।

पालीताना में जैनाचार्यश्री जिनोत्तमसूरीजी की निश्रा में उपधान-अंजन-प्रतिष्ठा संघ के आयोजन होंगे

पालीताना- पूज्य आचार्य श्री सुशीलसूरीजी कृपापात्र जैनाचार्य श्री जिनोत्तमसूरीजी म.सा.आदि ठाणा की अमृत निश्रा में इस वर्ष चार्तुमास आराधना के साथ उपधान-तप-अंजन प्रतिष्ठा-12 गांव का संघ अयोध्यापुरम् से पालीताना संघ आदि आयोजन होने जा रहे है। अन्य नगरों में प्रतिष्ठा होने के साथ चैत्र माह की नवपद ओली आराधना श्री नाकोड़ा महातीर्थ में होगी। चार्तुमास प्रवेश 29 जून को श्री पार्श्व भैरवधाम, सुशील विहार, हस्तगिरी, तलेटीरोड़, पालीताना (भावनगर)-264270 (गुज.) में होगा।

पूज्य जैनाचार्य श्री कुलबोधिसूरीजी का चार्तुमास रतलाम में

रतलाम- पूज्य आचार्य भगवंत श्री कुलबोधि सूरीजी म.सा. आदि श्रमण-श्रमणी भगवंतों का चार्तुमास प्रवेश संवत् 2079 अषाढ़ सुद- दिनांक 25-6-2023, रविवार को चार्तुमास जैन श्वे. मू.पू. तपागच्छ चारथुई संघ में हुआ।

आचार्यश्री रत्नचंद्र सूरीजी का चार्तुमास नवसारी में

नवसारी- दक्षिण गुजरात की डायमंड नगरी नवसारी नगर की पावन धरा पर श्री महावीर नगर जैन श्री संघ एवं श्री चिंतामणी जैन श्री संघ नवसारी के तत्वावधान में वर्ष 2023 व विक्रम संवत् 2079 का चार्तुमास परम गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री राम सूरीश्वरजी म.सा. (डहेला वाला) के शिष्यरत्न परम पूज्य आचार्य भगवंत श्रीमद् विजय रत्नचंद्र सूरीश्वरजी म. सा., परम पूज्य आचार्य भगवंत श्रीमद् विजय उदयरत्नसूरीश्वरजी म. सा. आदि विशाल श्रमण-श्रमणीवृंद का होगा।

साबरमती में चार्तुमास

अहमदाबाद- सागर समुदाय की साध्वी श्री अर्चितगुणाश्रीजी एवं श्री अर्पितगुणा श्रीजी आदि ठाणा-12 का चार्तुमास श्रमणी आराधना भवन कापड़िया मेंशन के पास, रामनगर-साबरमती, अहमदाबाद-5 (गुज.) में हो रहा है।

✻ आचार्य श्री वर्धमानसागर सूरीजी म.सा. का चार्तुमास प्रवेश जैन श्वेतांबर मंदिर 11- Parasu Pillai Street Kilpauk CHENNAI-600010 में हुआ।

कु. पलक एवं कु. मुस्कान की भगवती प्रवज्या भव्यता के साथ सम्पन्न

✻ अनिल मथुरालालजी पारख परिवार की कुल दीपिकाएं। ✻ कु. पलक ने एम.बी.ए. (फाइनेंस) की डिग्री हासिल कर संयम पथ अपनाया। ✻ दोनों नूतन दीक्षित श्रमणीवर्या का नाम क्रमश: श्री सिद्धर्षि निधि एवं श्री राजषि विधि रखा गया। ✻ महोत्सव में वीडियोग्राफी ,फोटोग्राफी, रात्रि प्रोग्राम डिस्पोजल का उपयोग नहीं हुआ मुमुक्षु बहनों ने ब्यूटी पार्लर उपयोग नहीं किया।

राजगढ- अषाढ़ वद-5, 8 जून 2022 से दीक्षा महोत्सव का शुभारंभ प.पू. गणिवर्य श्री आनंदचंद्र सागरजी म.सा. आदि ठाणा-5 एवं साध्वीवर्या श्री दमिताश्रीजी, श्री हेमप्रज्ञाश्रीजी, श्री स्वर्णज्योति श्रीजी, श्री तत्वलता श्रीजी आदि सुविशाल श्रमणीवृंद की निश्रा में हुआ। प्रवचन में गणिवर्यश्री ने कहाकि-प्रसंग को फार्मालिटी से नहीं फीलिंग्स से मनाना है। दोपहर में कपड़े रंगवाने का विधान हुआ। वद- 6, 9 जून को वर्षीदान वरघोड़ा रखा गया इसमें भी जन-जन का उल्लास देखाने के काबिल था। युवावर्ग काफी उत्साहित था दोपहर में गुरु वधामणा एवं विदाई समारोह रखा गया। वद-4, 10 जून को विशालकाय डोम में करीब चार-पांच हजार भावकों की उपस्थिति में आत्म उत्कर्षकारी प्रवज्या प्रदान की वेला आ गई। सुव्यवस्थित ढंग से विधान, रजोहरण प्रदान, केशलोच, करेमि भंते प्रतिज्ञा, नामकरण आदि कार्य सम्पन्न हुए। तीनों दिन स्वामी वात्सल्य भी रखे गये। दोनों साध्वीजी म.सा. पू. तपस्वी साध्वी श्री हेमप्रज्ञा श्रीजी की शिष्या पू.सा. श्री अनंतनिधि श्रीजी की शिष्या बनी। तीनों दिन श्रावकों हेतु रात्रि प्रवचन भी हुए। व्यवस्था की सफलता में अष्टमंगल इवेन्ट का कार्य यशस्वी रहा। पू.नूतन साध्वी भगवंतों का चार्तुमास नरीमन सीटी इन्दौर में तय हुआ।

वचनसिद्ध आचार्य श्री नरदेवसागर सूरीजी का चार्तुमास पूना में हो रहा है

✻ तपस्वी मुनि श्री पद्मकीर्तिसागरजी को 99 वीं ओली चही रही है।

पूना- सागर समुदाय के वरिष्ठ जैनाचार्यपूज्यपाद वचनसिद्ध जैनाचार्य श्री नरदेवसागरसूरीजी महाराजा एवं आयंबिल तपाराधक मुनिराज श्री पद्मकीर्तिसागरजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास प्रवेश श्री मुनिसुव्रत स्वामी मंदिर प्लाट नं. 103 ई-18 चैत्रावन लेकटाउन कॉ.ऑं.हाउसिंग सोसायटी कात्राज रोड, बिबबेवाड़ी, पूना-411037 (महा.) में चल रहा है पद्मकीर्तिसागरजी म.सा. क100 वी ओली जी का पारणा मेरु महोत्सव पूना में होगा श्री संभव नाथ जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक श्री संघ,घोड़ेगांव की भी पारणा कराने की विनंती है।

श्री ओसवाल जैन संघ में 80 दिन की आराधना

पूना-पूज्य आचार्यश्री राजरत्न सूरीजी आदि ठाणा का चार्तुमास प्रवेश श्री गोरीलाल ओसवाल जैनसंघ में प्रवेश हुआ। श्री नाकोड़ा भैरव जैन धर्मशाला गुरुवार पेठ-कृष्णा हट्‌टी चौक पूना (महा.) में आराधना हो रही है।आपश्री की निश्रा में80दिवसीय चार्तुमासिक आराधना का शुभारंभ हुआ।

गणिवर्य श्री आदर्शरत्नसागरजी का मालवा के श्री संघों में विचरण के बाद राज. भवानीमंडी में चार्तुमास प्रवेश हुआ

✻ लड्डू के साथ निमंत्रण देकर जैन-अजैन सबको जोड़ा।
✻ महामांगलिक19 जुन को चौमहला में हुई।

भवानीमंडी- पूज्यपाद गणिवर्य श्री आदर्शरत्नसागर जी म.सा.गणिवर्य श्री अक्षतरत्नसागर जी म.सा.आदि ठाणा श्रमण-श्रमणी वृंद इन्दौर, उज्जैन, चौमेहला, मक्सी आदि स्थानों पर शासन प्रभावना में अभिवृद्धि कर चार्तुमास हेतु भवानीमंडी पधारे जहां 28 जून को आपश्री का मंगल प्रवेश करवाने के लिये मालवा के अनेक संघों के साथ गुजरात, महाराष्ट्र से भी गुरुभक्त आये थे। भवानीमंडी के जैन-अजैन लोगों को लड्डू के साथ निमंत्रण दिये गये थे। सारे शहर को फ्लेक्स गेट से सज्राया गया था। भव्य धर्मसभा के वक्ताओं और पूज्यश्री ने उद्‌बोधन दिया। चार्तुमास की भावी योजना से अवगत कराया गया। दिनांक 19 जुन को चौमहला में आपकी महामांगलिक का आयोजन भी जोरदार रहा।

चार्तुमास.... चार्तुमास....

✻ मुंबई- श्री जैन संघ गोवालिया टैंक में पूज्य आचार्य श्री महाबोधि सूरीश्वरजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास हो रहा है। प्रवेश आषाढ़सुद-5 दिनांक 23 जून को हुआ।

बेंगलोर में चार्तुमास

बेंगलोर - पूज्य शंखेश्वरप्रेमी आ. महासेनसूरी जी ठाणा-4 का वि.सं. 2079 का चार्तुमास अक्की पेठ बेंगलोर के श्री वासुपूज्य संघ में हो रहाहै।

रेसकोर्स श्रीसंघ में चार्तुमास

इन्दौर- पूज्यपाद बंधु बेलडी आचार्य भगवंत के सुशिष्य गणिवर्य आनंदचन्दसागरजी म.सा.आदि श्रमण-श्रमणी भगवंतों का चार्तुमास रेसकोर्स रोड़ स्थित श्वेतांबर जैन उपाश्रय में इन्दौर में होने जा रहा है

साध्वी श्री चन्द्ररत्ना श्रीजी का चार्तुमास

जोधपुर- सागर समुदाय की वरिष्ठ साध्वीवर्या रही तपस्वी साध्वी कुसुम श्रीजी म.सा. की सुशिष्या साध्वी श्री चन्द्ररत्ना श्रीजी म.सा. एवं बाल साध्वी श्री ध्वनिरत्ना श्रीजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास जोधपुर के हाससिंग बोर्ड के सुमंगल आराधना भवन में हो रहा है। आपका प्रवेश 26 जून को भव्य शासन प्रभावना के साथ हुआ। चार्तुमासिक आराधना के अंतर्गत अनेक विविध तप, जप, अनुष्ठान महोत्सव के आयोजन की बड़ी श्रृंखला है। बाल संस्कार पाठशाला का आयोजन प्रति रविवार होगा।

✻ प.पू. सरल स्वभावी श्री प्रियदर्शना श्रीजी म.सा. की सुशिष्या सा. मधुरभाषी श्री हितदर्शना श्रीजी म.सा. एवं सा. चारु दर्शनाश्रीजी म.सा. का चार्तुमास प्रवेश 21 जून को श्री विजय नगर आदिनाथ जैन श्वेतांबर मंदिर (मेघदूत गार्डन के सामने) इन्दौर (म.प्र.) में हुआ।

चार्तुमास प्रवेश.... चार्तुमास प्रवेश....

✻ प.पू. तपागच्छाधिपति आ.भ. श्री विजय मनोहरकीर्ति सागर सूरीश्वर जी महाराजा का चार्तुमास प्रवेश 25 जून को उस्मानपुरा जैन संघ अहमदाबाद में हुआ।

✻ प.पू. गच्छाधिपति आ.भ. श्री प्रद्युम्नविमलसूरीश्वरजी महाराजा का चार्तुमास प्रवेश 25 जून को मगरवाड़ा तीर्थ में प्रवेश हुआ।

✻ प.पू. गच्छाधिपति आ.भ. श्री विजय नित्यानंद सूरीश्वरजी महाराजा का चार्तुमास प्रवेश 1 जुलाई को श्री मणिलक्ष्मी जैन मंदिर, दिल्ली दोहरा रोड़, दोहरा (लुधियाना) दोहरा (पंजाब) में हुआ।

✻ प.पू. गच्छाधिपति आ.भ. श्री विजय राजशेखर सूरीश्वरजी महाराजा का चार्तुमास प्रवेश 29 जून को कलिकुंड तीर्थ, धोलका में प्रवेश हुआ।

✻ प.पू. गच्छाधिपति आ.भ. श्री विजय यशोविजय सूरीश्वरजी महाराजा का चार्तुमास प्रवेश 21 जून ॐकार सूरि आराधना भवन, वेसु, सूरत (गुज.) में हुआ।

✻ प.पू. गच्छाधिपति आ.भ. श्री विजय धार्मधुरंधार सूरीश्वरजी महाराजा का चार्तुमास प्रवेश 29 जून को रुपनगर, दिल्ली में प्रवेश हुआ।

✻ प.पू. गच्छाधिपति आ.भ. श्री विजय चंद्रसेन सूरीश्वरजी महाराजा का चार्तुमास प्रवेश छाणी-वड़ोदरा (गुज.) में प्रवेश हुआ।

✻ प.पू. गच्छाधिपति आ.भ. श्री विजय राजेन्द्र सूरीश्वरजी महाराजा का चार्तुमास प्रवेश 21 जून को श्री वीलेपार्ले जैन संघ, मुंबई (महा.) में प्रवेश हुआ।

✻ प.पू. गच्छाधिपति आ.भ. श्री मुक्तिप्रभ सूरीश्वरजी महाराजा का चार्तुमास प्रवेश 25 जून को श्री वर्धमान जैन संघ, कोलकत्ता में प्रवेश हुआ।

✻ प.पू. गच्छाधिपति आ.भ. श्री विजय राजयश सूरीश्वरजी महाराजा का चार्तुमास प्रवेश 25 जून को भरुच शक्तिनाथ, श्रीपाळी मोल में प्रवेश हुआ।

✻ प.पू. गच्छाधिपति आ.भ. श्री विजय कुलचंद्रसूरीश्वरजी महाराजा का चार्तुमास प्रवेश 28 जून को गौतमस्वामी जैन संघ, न्युवासना में प्रवेश हुआ।

✻ प.पू. गच्छाधिपति आ.भ. श्री विजय हेमप्रभ सूरीश्वरजी महाराजा का चार्तुमास प्रवेश 21 जून को रामविहार जैन संघ, वेसु, सूरत (गुज.) प्रवेश हुआ।

✻ प.पू. गच्छाधिपति आ.भ. श्री विजय कल्पतरु सूरीश्वरजी महाराजा का चार्तुमास प्रवेश दादर आराधना भवन, मुंबई (महा.) में हुआ।

✻ प.पू. गच्छाधिपति आ.भ. श्री विजय अभयदेव सूरीश्वरजी महाराजा का चार्तुमास प्रवेश 29 जून को गांधी नगर सेक्टर-22 (गुज.) में प्रवेश हुआ।

✻ प.पू. गच्छाधिपति आ.भ. श्री विजय रविशेखर सूरीश्वरजी महाराजा का चार्तुमास प्रवेश 29 जून को श्री डोंबीवली मुंबई (महा.) में प्रवेश हुआ।

✻ प.पू. गच्छाधिपति आ.भ. श्री विजय हेमचंद्र सूरीश्वरजी महाराजा का चार्तुमास प्रवेश देवबाग, पालड़ी, अहमदाबाद (गुज.) में प्रवेश हुआ।

✻ प.पू. गच्छाधिपति आ.भ. श्री विजय विज्ञानप्रभ सूरीश्वरजी महाराजा का चार्तुमास प्रवेश 26 जून को श्री वेपरी जैन श्वेतांबर मंदिर पुलिस कमिश्नर ऑफीस के सामने, वेपरी, चैन्नई (तमिलनाडु) में प्रवेश हुआ।

✻ पू. साध्वी विपुलप्रज्ञा श्रीजी म.सा. का चार्तुमास प्रवेश श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ जैन मंदिर, भचुण्डला चित्तौड़गढ़ (राज.) में हुआ।

✻ सा. श्री सौम्यरेखा श्रीजी का चार्तुमास प्रवेश श्री मुठलिया रेसीडेन्सी जैन संघ, दत्ताराम लाड़ मार्ग, हकोबा मिल के सामने, कालाचौकी, मुंबई-400033 (महा.) में हुआ।

✻ साध्वी श्री भव्यपूर्णा श्रीजी म.सा. का चार्तुमास प्रवेश श्री वासुपूज्य जैन आराधना भवन, अरिहंत सोसायटी कुसुगल रोड़, केशवपुर हुबली (कर्नाटक) में हुआ।

✻ साध्वी श्री चन्द्ररत्ना श्रीजी म.सा. का चार्तुमास प्रवेश श्री नंदनवन जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक तपागच्छ संस्थान, सुमंगल आराधना भवन, 17 ई 763-764 चौपासनी हाउसिंग बोर्ड जोधपुर (राज.) में हुआ।

✻ पू. आ. श्री मुक्तिप्रभ सूरीजी म.सा. का चार्तुमास प्रवेश श्री वर्धमान जैन संघ, 10, हंसपुकुट फर्स्टनेन, कलकत्ता (पं.बंगाल) में हुआ।

✻ अनुयोगाचार्य श्री विद्योदव कीर्तिजी म.सा. का चार्तुमास प्रवेश जैन श्वेतांबर मंदिर, जानकीनगर, इन्दौर (म.प्र.) में हुआ।

✻ प.पूज्य आचार्यश्री विश्वरत्न सागर सूरीश्वरजी म.सा. का चार्तुमास प्रवेश श्री आदिश्वर भवन श्रीपती ज्वेलयलि बिल्डिंग पहला माला, 1 खातागली, ठाकुर द्वार रोड़, सी.पी. टैंक के पास, मोटार बाग के सामने, मुंबई-400002 (महा.) में हुआ।

✻ मुनिश्री निपुणचंद्रसागरजी म.सा. का चार्तुमास प्रवेश श्री मुहताजी का मंदिर, नागौरी के गेट के बाहर, जोधपुर (राज.) में हुआ।

✼ साध्वी श्री हेमेन्द्र श्रीजी म.सा. का चातुर्मास प्रवेश श्री मुहताजी का मंदिर, नागौरी के गेट के बाहर, जोधपुर (राज.) में हुआ।

✼ मुनि श्री उदयरत्नसागरजी म.सा. का चातुर्मास प्रवेश श्री राजस्थान संघ श्री वासुपूज्य स्वामी मंदिर हीराभवन मामलेदार वाड़ी रोड़ नं. 3 मलाड़ (वेस्ट) मुंबई-64 (महा.) में हुआ।

✼ आचार्यश्री सागरचंद्र सागर सूरीश्वरजी म.सा. का चातुर्मास प्रवेश श्री सहस्तफणा पार्श्व जिनालय बाबूलनाथ मंदिर के सामने, चौपाटी, मुंबई (महा.) में हुआ।

✼ मुनिश्री सुमितचंद्रसागरजी म.सा. का चातुर्मास प्रवेश 4 दिग्विजय नगर खेमे का कुंआ, पालरोड़, जोधपुर (राज.) में हुआ।

✼ पूज्य आचार्यश्री अर्हमप्रभ सूरीश्वरजी म.सा. का चातुर्मास प्रवेश श्री आगमोद्धारक धानेरा आराधना भवन जश रेसीडेन्सी के पास, शहीद स्मारक के सामने, वेसू, सूरत, वेसू-सूरत (गुज.) में हुआ।

✼ साध्वी श्री कल्पद्रुमा श्रीजी म.सा. का चातुर्मास प्रवेश श्री आदिनाथ भगवान के भंडार की पेढ़ी, श्री ओसवाल श्रीसंघ, धाणेराव (पाली), धाणेराव - 306704(राज.) में हुआ।

✼ साध्वी श्री स्मितपूर्णा श्रीजी म.सा. का चातुर्मास प्रवेश श्री पार्श्वनाथ जिनालय राजीबाई, धर्मशाला, अमरावती (महा.) में हुआ।

✼ पू. साध्वी श्री अमीझरा श्रीजी म.सा. की सुशिष्या साध्वी श्री जिनकीर्ति श्रीजी एवं साध्वी श्री देशना कीर्ति श्रीजी म.सा. आदि ठाणा का चातुर्मास प्रवेश श्री चौमुखी जैन श्वेतांबर मंदिर, सुभाषनगर, सांवेररोड़, उज्जैन (म.प्र.) में हुआ।

✼ साध्वी श्री हेमप्रज्ञा श्रीजी म.सा. आदि ठाणा का चातुर्मास प्रवेश 105 प्रीमियम प्लस, पानी की टंकी के पीछे, आगे गली क्लब हाउस रोड़, नरीमन सिटी (छोटा बांगरदा) पी-281 नरीमन सिटी, इन्दौर (म.प्र.) में हुआ।

✼ साध्वी श्री सौम्यप्रिया श्रीजी म.सा. आदि ठाणा का चातुर्मास प्रवेश श्री जैन उपाश्रय (जैन धर्मशाला के सामने) तिलकमार्ग, बड़चौक, देपालपुर (इन्दौर) देपालपुर में हो रहा है।

✼ पूज्यपाद आचार्य देवेश बंधुबेलड़ी का चातुर्मास प्रवेश श्री जिनचंरद्र सागरसूरीजी म.सा., श्री हेमचंद्रसागरसूरीजी म.सा. का चातुर्मास प्रवेश चैन्नई धर्मशाला तलेटी रोड़, पालीताना (भावनगर), पालीताना (गुज.) में हुआ।

✼ पूज्य आचार्य श्री लब्धिचंद्र सागरसूरीजी म.सा. का चातुर्मास प्रवेश आगम मंदिर, तलेटी रोड़, पालीताना (भावनगर), पालीताना (गुज.) में हुआ।

✼ पूज्य आ. मुक्तिसागरसूरीजी म.सा. का चातुर्मास प्रवेश श्री संभवनाथ जैन मंदिर, गोलीवाला भवन, 44 सूर्यकांत खटाऊरोड़, सलेसबरी पार्क, गुलटेकड़ी, पूना-37 (महा.) में हुआ।

✼ प.पू. आचार्यश्री प्रसन्नचन्द्र सागरसूरिजी म.सा. आदि ठाणा का चातुर्मास प्रवेश 28 जून को आराधना भवन, भीड़भंजन पार्श्वनाथ मंदिर के पास, पुस्तक बाजार, नीमच (म.प्र.) में हुआ।

✼ ध्या. आगमोद्धारक सागरानंद सूरीश्वरजी म.सा. के समुदाय वर्तिनी साध्वी श्री प्रियदर्शना श्रीजी म.सा. की शिष्या सा. सम्यग्दर्शना श्रीजी म.सा. आदि ठाणा-4 का चातुर्मास प्रवेश 24 जून को अवंति पार्श्वनाथ तीर्थ से श्री हीरसूरी म.सा. बड़ा उपाश्रय, खाराकुआ उज्जैन (म.प्र.) में हुआ।

✼ आचार्यश्री यगोदेवप्रभ सूरीजी म.सा. का चातुर्मास प्रवेश श्री जैन आराधना भवन, मिंट स्ट्रीट, साहुकार पेठ, चैन्नई (तमिलनाडु) में हुआ।

✼ मुनिश्री विनम्रसागरजी म.सा. का चातुर्मास प्रवेश मुनिश्री सुव्रत स्वामी जैन मंदिर, करिरोड़, लोडर परेल (ईस्ट) मुंबई (महा.) में हुआ।

✼ साध्वी श्री अर्हताश्रीजी म.सा. का चातुर्मास प्रवेश श्री केशरिया आदिनाथ जैन संघ रुपचांद आराधना भवन, चौधरी कालोनी मंदसौर (म.प्र.) में हुआ।

✼ साध्वीश्री सूर्यकांता श्रीजी म.सा. का चातुर्मास प्रवेश श्री शीतलनाथ जैन मंदिर 746, द्वारकापुरी, सुदामानगर द्वारकापुरी इन्दौर (म.प्र.) में हुआ।

✼ साध्वी श्री शीलरेखा श्रीजी म.सा. का चातुर्मास प्रवेश श्री अभयसागरजी जैन उपाश्रय, 403 कालोनी नगर, इन्दौर (म.प्र.) में हुआ।

✼ साध्वी श्री मुक्तिरेखा श्रीजी म.सा. का चातुर्मास प्रवेश श्री जैन श्वेतांबर उपाश्रय, घाटी नीचे, आगर (म.प्र.) में हुआ।

✼ आचार्यश्री चन्द्राननसागर सूरीजी म.सा. का चातुर्मास प्रवेश श्री नाकोड़ा भैरव दर्शनधाम जिला पालघर एन.एच.नं-8 (रोड़ टच) गांव ढेकाले मुंबई (महा.) में हुआ।

✼ पूज्य साध्वी श्री अक्षयज्योति श्रीजी म.सा. का चातुर्मास प्रवेश वर्धमान नगर जैन मंदिर, वर्धमाननगर, नागपुर (महा.) में हुआ।

✼ साध्वी श्री मुक्तिदर्शना श्रीजी म.सा. का चातुर्मास प्रवेश श्री पार्श्व प्रधान पाठशाला भवन, नागदा जंक्शन, (उज्जैन) नागदा जंक्शन (म.प्र.) में हुआ।

हमारे तीज-त्यौहार

1- आषाढ़ सुदी-14	रविवार	2-7-2023	चौमासी चवदस
2-अधिक मास श्रावण वद-1	मंगलवार	4-7-2023	श्री सीमंधर स्वामी आदि 20 विहारमान का स्वप्न कल्याणक
3-अधिक मास श्रावण वद-12	शुक्रवार	14-7-2023	रोहिणी
4-अधिक मास श्रावण वद-30	सोमवार	17-7-2023	पूज्यपाद आगमोद्धारक श्री सागरानंदसूरीजी का 149 वां जन्म दिन

पंचक :- **आरम्भः-**अधिक मास श्रावण वद-3, गुरुवार,6-7-2023, समय- 13.40 बजे से
समाप्तः- अधिक मास श्रावण वद-8, सोमवार, 10-7-2023, समय- 18.59 बजे तक

पुष्प नक्षत्र :- **आरम्भः-**अधिक मास श्रावण सुद-1, मंगलवार, 18-7-2023, समय- 5.12 बजे से
समाप्तः- अधिक मास श्रावण सुद-2, बुधवार, 19-7-2023, समय- 7.58 बजे तक

स्त्री-पुरुष की समानता

स्त्री और पुरुष में एक नागरिक के नाते, एक व्यक्ति के नाते और मानवीयता के नाते से समानता मानना तो ठीक है न्यायोचित है पर स्त्री और पुरुष के रुप में दोनों को एक समान मानना भारी भूल है। इस मान्यता से स्त्री और पुरुष दोनों के प्रति न्याय हो सकेगा। पुरुष है वह स्त्री नहीं हो सकता, स्त्री जैसा भी नहीं हो सकता, इसी तरह स्त्री स्त्री है वह पुरुष जैसी नहीं हो सकती फिर दोनों में समानता होने का नारा लगाने का क्या औचित्य हो सकता है। दोनों के स्वाभाविक गुण अलग है, शारीरिक क्षमता और रचना अलग है, दोनों का व्यक्तित्व अलग है और दोनों की उपयोगिता अलग है और यह अलगाव बना रहना कई कारणों से जरुरी भी है। समानता की बात छोड़ कर दोनों को अलग-अलग अपने-अपने व्यक्तित्व और गुणों का विकास कर यह भिन्नता बनाए रखना चाहिए तभी दोनों वर्ग उचित रुप से विकसित और गरिमापूर्ण व्यक्तित्व को उपलब्ध हो सकेंगे।

सारे देश में आगमोद्धारक प्रतिनिधि नियुक्त करना है

जैन जगत की प्रतिष्ठित, प्रसिद्ध मासिक पत्रिका आगमोद्धारक के सदस्यता अभियान के लिये सारे देश में प्रतिनिधियों की नियुक्ति की जा रही है। सक्रिय युवा भाई-बहन जो जिनशासन के प्रचार-प्रसार हेतु अपनी सेवा देना चाहते है वे तुरन्त निम्न पते पर संपर्क करें।

प्रतिनिधि को कम से कम 25 सदस्य बनाना आवश्यक है। आपकी सहमति प्राप्त होने पर रसीद कट्टे एवं प्रचार-प्रसार सामग्री आपको भेजी जायेगी। सम्पादक से सम्पर्क करें।

सादर आमंत्रण

✻ पूज्य साधु-साध्वीजी से विनंती है कि आपके चार्तुमास एवं सभी धार्मिक कार्यक्रमों की जानकारी एवं धार्मिक महोत्सव की सूचना आगमोद्धारक तक पहुंचाने का कष्ट करें, ताकि अंक आपको लगातार भेजा जा सके तथा समाचार प्रकाशित किया जा सकें।

✻ आगमोद्धारक के लिये आपकी रचनाएं भी प्रकाशन के लिये निरंतर भेजते रहे। आपकी रचना से हम प्रोत्साहित होंगे।

✻ पत्रिका को और अच्छा बनाने के लिये आपके सुझाव, मार्गदर्शन भी भेजते रहे ताकि आगमोद्धारक की गुणवत्ता बढ़ाई जा सके।

✻ अंक आपके तक नियमित रुप से नवीन स्वरुप के साथ 10 तारीख तक पहुंचे ऐसा हमारा प्रयास रहता है, अंक अप्राप्ति पर शीघ्र सूचित करें।

- सम्पादक

वर्ष 28 | आषाढ़-अधिक श्रावण | जुलाई-2023 | अंक 7 (मासिक) | प्रकाशन उज्जैन

आर.एन.आई. नं. 0048570/29/30/1982
पोस्ट मालवा डिवीजन पी.आर.एन.नं.एम.डी. 08/2021-2023

प्राप्त न होने पर कृपया लौटायें-

डॉ. सुभाष जैन (संपादक)
46, सखीपुरा, उज्जैन - 456001 (म.प्र.)
मो. 94250-91012, 8770884897
Email : subash_3333@yahoo.co.in, subhashjain@gmail.com

बुक पोस्ट

प्रति,

श्रीमान् ....

....

....

स्टाम्प
टिकिट

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन उज्जैन के लिये डॉ. सुभाष जैन - संपादक द्वारा प्रकाशित एवं एम.बी. ऑफसेट प्रिंटर्स, 285, एम.जी.रोड़, इन्दौर से मुद्रित। फोन : 0731-2412232, संपादक मो. 94250-91012, 8770884897